आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

वर्ष : 63 मूल्य 10 रु. अंक : 1
15 जनवरी, 2006 पौष 2062

अनगिनत व्हरायटीज्,
शुद्धता और
वाजिब हिसाब का
सुनहरा संगम

त्यौहार, शुभ प्रसंग
के आनंद को
द्विगुणीत करनेवाले
मंगल आभूषण

भारतवर्ष का स्वर्णतीर्थ

३५ वर्षोंसे तत्पर
एवं विनम्र सेवा
ग्राहकों की जिज्ञासा को
पूरा समाधान

ॲन्टीक, ऑक्साइड
जी बी, कास्टींग, कुंदन
पोलकी इ. गहनों के
अनेकों प्रकार

कॅरेटोमीटर
की उपलब्धता

जलगावमें विशेष
निवास व्यवस्था

औरंगाबाद :
आकाशवाणी चौक,
जालना रोड,
☎ ०२४०-३०९७९७९

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

सोना • चांदी • हिरा • मोती

जलगांव :
नयनतारा,
सुभाष चौक
☎ ०२५७-२२२५९०३

जिनवाणी

हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.),
फोन नं. 0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005, फोन नं. 0291-2730081

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं. RJ/JPC/M-018/2006-08

卐 सदस्यता

स्तम्भ सदस्यता रु. 11000/- संरक्षक सदस्यता रु. 5000/-
वार्षिक सदस्यता रु. 50/- त्रिवार्षिक सदस्यता रु. 120/-
आजीवन सदस्यता देश में रु. 500/-
विदेश में 100$ (डॉलर)
इस अंक का मूल्य रु. 10/-

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

अभिवायणमब्भुट्ठाणं,
सामी कुज्जा निमंतणं।
जे ताइं पडिसेवंति,
न तेसिं पीहए मुणी।।

उत्तराध्ययन सूत्र २.३८

सत्कार, निमंत्रण अभिवादन,
जो भक्तजनों से प्राप्त करे।
उनकी वांछा न करे मन में,
ना धन्य शब्द मुख से उचरे।।३८।।

जनवरी २००६
वीर निर्वाण संवत् २५३२
पौष २०६२

वर्ष : ६३ अंक : ०१

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन: 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	६
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	७
प्रवचन-	गुरु की भक्ति इतनी सरल नहीं	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	८
शोधालेख-	अनुयोग : एक चिन्तन	-उपाध्याय श्री रमेशमुनि जी 'शास्त्री'	१९
	जैन-साहित्य में वर्णित सौतिया डाह	-डॉ. हुकमचन्द जैन	२४
अध्यात्म-चिन्तन-	सर्वांगीण विकास का साधन : सामायिक व्रत	-श्री प्रेमचन्द कोठारी	२८
धारावाहिक-	जम्बूकुमार (२४)	-जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.	३१
तत्त्वज्ञान-	दशवैकालिक सूत्र का जानें हम मर्म (४)	- संकलित	३६
	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (२६)	- श्री धर्मचन्द जैन	४२
वैज्ञानिक लेख-	अहिंसक चूल्हे	-डॉ. जीवराज जैन	३९
युवा-स्तम्भ-	शरण गहो तुम धर्म की	- श्री लक्ष्मीचन्द बडोला	४५
गुण-स्मरण-	करें गुरुदेव को वन्दन	- प्रो. चाँदमल कर्णावट	४८
नारी-स्तम्भ-	सकलगुणभूषा च विनयः (२)	- श्राविका मण्डल	५१
बाल-स्तम्भ-	गरीबी में अमीरी	-सुश्री अक्षिता जैन	५३
स्वास्थ्य-विज्ञान-	श्वसन क्रिया हो सम्यक् (२)	- श्री चंचलमल चोरडिया	५६
कविता/गीत-	जिनवाणी	- श्री ओमप्रकाश जैन	२७
	मर्म धर्म का गर समझें तो	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	५०
	New Year Message	**-Sh. Jitendra Chourdia**	६०
विचार-	तीन बातें	- श्रीमती कंचनदेवी सिंघरोदिया	१८
	स्वाध्याय के समय ध्यातव्य बिन्दु	- कु. अंजना बैराठी	३५
प्रेरक-प्रसंग -	जैसी दृष्टि : वैसी सृष्टि	- श्री जशकरण डागा	३८
सम्पादकीय -	डॉ. धर्मचन्द जैन		३
युवक परिषद्-	त्रैमासिक प्रतियोगिता (९)		५६
मॉडल प्रश्न-पत्र-	जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-४		६१
स्वाध्यायी परिचय-	सौ. ताराबाई डाकलिया	-श्रीमती मोहनकौर जैन	६४
पाठक-पत्र-	जिनवाणी पर अभिमत		४१
नूतन साहित्य-	डॉ. धर्मचन्द जैन		६५
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन		६७
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		८४

सम्पादकीय

जय जय णंदा! जय जय भद्दा

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

जब हम साधु-साध्वियों की पार्थिव देह को अन्तिम संस्कार के लिए लेकर जाते हैं तब मार्ग में विविध जयकार के साथ **'जय जय नन्दा! जय जय भद्रा!** (प्राकृत के **'जय जय णंदा! जय जय भद्दा'** का परिवर्तित रूप) पदावली का उच्चारण बड़े उत्साह से करते हैं, किन्तु इसका क्या तात्पर्य है, यह हमें ज्ञात नहीं। यह भी ज्ञात नहीं कि इस पदावली का प्रयोग प्रव्रज्या के अवसर पर अधिक प्रासङ्गिक है।

उपर्युक्त पदावली ज्ञाताधर्मकथा सूत्र के प्रथम अध्ययन में दो स्थानों पर आयी है। पहली बार तब आयी है जब श्रेणिक राजा ने मेघकुमार का एक दिन की राज्यश्री हेतु राज्याभिषेक किया एवं उसे सफलता के लिए शुभकामनाएँ दीं, यथा- **"जय जय णंदा! जय जय भद्दा! जयणंदा भद्दं ते, अजियं जिणेहि, जियं पालयाहि, जियमज्झे वसाहि, अजियं जिणेहि सत्तुपक्खं, जियं च पालेहि मित्तपक्खं, जाव इंदो इव देवाणं, चमरो इव असुराणं, धरणो इव नागाणं, चंदो इव ताराणं, भरहो इव मणुयाणं राजगिहस्स नगरस्स.......त्ति कट्टु जय-जय-सद्दं पउंजंति।"**

हे नन्द! तुम्हारी जय हो, जय हो। हे भद्र! तुम्हारी जय हो, जय हो। हे जगत् को आनन्द देने वाले (जगन्नन्द) तुम्हारा भद्र हो। तुम न जीते हुए को जीतो और जीते हुए का पालन करो। जीतों के मध्य निवास करो (अर्थात् सबके विजेता बनो)। नहीं जीते हुए शत्रुपक्ष को जीतो। जीते हुए मित्रपक्ष का पालन करो। यावत् देवों में इन्द्र के समान, असुरों में चमरेन्द्र के सदृश, नागों में धरण के सम, ताराओं में चन्द्रमा, मनुष्यों में भरत चक्रवर्ती की भाँति तुम राजगृह नगर का.......इस प्रकार कहके श्रेणिक राजा ने जय-जयकार किया।

उपर्युक्त उद्धरण के मूलपाठ में 'णंदा' शब्द के दो अर्थ हैं- १. हे प्रसन्न करने वाले (आनन्दित करने वाले!) २. हे नन्द (हे पुत्र!)। मूल अर्थ 'आनन्दित करने वाले' है, पुत्र आनन्दित करता है इसलिए वह भी 'नन्द' कहलाता है। श्रेणिक एवं धारिणी की बड़ी अनुनय-विनय के पश्चात् मेघकुमार ने दीक्षा के पूर्व एक दिन की राज्यश्री स्वीकार की। अतः श्रेणिक को इसका बड़ा प्रमोद था। उसी की अभिव्यक्ति 'हे नन्द! तुम्हारी जय हो, जय हो।' (जय जय णंदा) वाक्य में हुई है। 'भद्दा' का अर्थ है- ' हे भद्र!' मेघकुमार भद्र पुरुष था, इसमें कोई संदेह नहीं, क्योंकि वह सज्जनों की सरणि का अनुगामी था। राजा बनकर वह जगत् का कल्याण करने में समर्थ था इसलिए भी भद्र था। यहाँ राज्य-शासन की उच्च सफलता हेतु पिता श्रेणिक द्वारा शुभकामना की गई है।

द्वितीय बार ज्ञाताधर्मकथा के इसी प्रथम अध्ययन में **'जय जय णंदा! जय जय भद्दा!'** का प्रयोग तब हुआ जब मेघकुमार भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेने को शिविका (पालकी) में आरूढ होकर प्रस्थान कर रहे थे। उनके आगे स्वस्तिक, श्रीवत्स, नन्दावर्त, वर्द्धमान, भद्रासन, कलश, मत्स्य और दर्पण ये आठ मंगल तो चले ही, अनेकविध पुरुषों एवं स्तुतिपाठकों ने मेघकुमार की जयकार करते हुए कहा- **"जय जय णंदा! जय जय भद्दा! जयणंदा! भद्दं ते अजियाइं जिणाहि इंदियाइं, जियं च पालेहि समणधम्मं, जियविग्घो वि य वसाहि तं देव! सिद्धिमज्झे, निहणाहि रागदोसमल्ले तवेणं धिइधणियबद्धकच्छे, मद्दाहि य अट्ठकम्मसत्तू झाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं अप्पमत्तो, पावय- वितिमिरमणुत्तरं केवलं नाणं, गच्छ य मोक्खं परमपयं सासयं च अयलं हंता परीसहचमुं णं अभीओ परीसहोवसग्गाणं, धम्मे ते अविग्घं भवउ' त्ति कट्टु पुणो पुणो मंगलजयजयसद्दं पउंजंति।"**

हे नन्द! जय हो, जय हो। हे भद्र जय हो, जय हो। हे जगत् को आनन्द देने वाले! तुम्हारा कल्याण हो। तुम नहीं जीती हुई इन्द्रियों को जीतो और जीते हुए (गृहीत) श्रमणधर्म का पालन करो। हे देव! विघ्नों को जीत कर सिद्धि में निवास करो। धैर्यपूर्वक कमर कस कर तप से राग-द्वेष रूपी मल्लों का हनन करो। अप्रमत्त होकर आठ कर्म शत्रुओं का उत्तम शुक्ल ध्यान से मर्दन करो। अज्ञानान्धकार से रहित श्रेष्ठ केवलज्ञान को प्राप्त करो। परीषह सेना का हनन करके, परीषहों एवं उपसर्गों के प्रति निर्भय बनकर शाश्वत एवं अचल परमपद मोक्ष को प्राप्त करो। तुम्हारी धर्म-साधना में विघ्न न हो। इस प्रकार कहकर वे पुनः पुनः मंगलमय 'जय-जय' शब्द का प्रयोग करने लगे।

उपर्युक्त द्वितीय संदर्भ में मेघकुमार की प्रव्रज्या सफल हो इसकी कामना की गई है। इसमें जयकार करने वाले वे लोग हैं जो जुलूस में चल रहे हैं। फिर भी वे 'णंदा'(नन्दा) और 'भद्दा' (भद्रा) शब्दों का ही प्रयोग कर रहे हैं। यहाँ 'नन्दा' सम्बोधन 'आनन्दित करने वाले' के अर्थ में है, पुत्र के अर्थ में नहीं। 'भद्रा' तो 'भद्र' (सज्जन) का ही वाचक है। वे मेघकुमार प्रव्रज्या अंगीकार कर जगत् के प्राणियों को अभय प्रदान कर आनन्दित करेंगे, इसलिए वे जगत्नन्द (जयणंद) हैं। पहले अनुच्छेद में जहाँ शत्रुपक्ष को जीतने एवं मित्रपक्ष की रक्षा करने की बात कही गई थी, वहाँ द्वितीय अनुच्छेद में इन्द्रियों को जीतने, श्रमणधर्म का पालन करने एवं सिद्धि में निवास करने की बात कही गई है। इस अनुच्छेद में मेघकुमार के लिए केवलज्ञान की प्राप्ति एवं शाश्वत व अचल परमपद मोक्ष को प्राप्त करने की भी शुभ भावना व्यक्त हुई है।

ज्ञाताधर्मकथा के उपर्युक्त उल्लेखों से विदित होता है कि **'जय जय णंदा! जय जय भद्दा!'** प्राचीन प्रयोग है, जो आज भी प्रचलित है। इसका प्रयोग अन्त्येष्टि के पूर्व चकडोल के समय सम्पूर्ण जनसमुदाय द्वारा किया जाता है। जब इसका प्रयोग अंतिम

यात्रा के अवसर पर किया जाने लगा तो दीक्षा के अवसर पर इसका प्रयोग छूट गया।

कुछ लोग 'नन्दा' एव 'भद्रा' महासतियों के नामोल्लेख की बात कहते हैं, किन्तु यह समीचीन नहीं है, क्योंकि 'नन्दा' 'भद्रा' यदि कोई महासती भी हो तो उनके जयकार का प्रयोग अन्य साधु-साध्वियों के अन्त्येष्टि प्रसंग पर क्यों किया जाएगा। इसलिए ***'जय जय णंदा एवं जय जय भद्दा'*** में किसी महासती का नामोल्लेख नहीं है, अपितु 'णंदा' एवं 'भद्दा' ऐसे संबोधन हैं, जो किसी के भी लिए प्रयोग किए जा सकते हैं।

'णंदा' शब्द पुल्लिङ्ग (णंद) एवं स्त्रीलिङ्ग (णंदा) दोनों के संबोधन में बनता है। इसी प्रकार 'भद्दा' शब्द भी दोनों लिंगों (भद्द एवं भद्दा) के संबोधन में निष्पन्न होता है। इसलिए इनका प्रयोग साधु एवं साध्वी दोनों के लिए हो सकता है।

आज जो 'णंदा' के स्थान पर 'नन्दा' और 'भद्दा' के स्थान पर 'भद्रा' शब्द का प्रयोग किया जाने लगा है, वह हिन्दी/संस्कृत भाषा का प्रभाव है। किन्तु इन भाषाओं के संबोधन में स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग में भिन्न-भिन्न रूप बनते हैं। इनमें नन्द का पुल्लिंग में संबोधन 'नन्द' एवं 'भद्र' का भद्र ही बनेगा, जबकि स्त्रीलिंग में 'नन्दे' और 'भद्रे' बनेगा। हिन्दी में लोकभाषा के प्रभाव से 'नंदा' और 'भद्रा' भी संभव हो सकता है, किन्तु संस्कृत में तो ऐसा बिल्कुल भी संभव नहीं है।

''जय जय णंदा, जय जय भद्दा' पदावली में दीक्षा लेकर उसे सफल बनाने की शुभकामना तो है ही, समाधिमरण/ साधारण मरण के अनन्तर भी दिवंगत साधक के लिए मोक्ष सदृश 'परम पद' की प्राप्ति की शुभकामना भी है, जैसाकि ज्ञाताधर्मकथा के उपर्युक्त द्वितीय उद्धरण को पढ़ने से ज्ञात होता है। वहाँ पर स्पष्ट शब्दों में कहा गया है- **१. नहीं जीती गई इन्द्रियों को जीतो। २. स्वीकृत श्रमणधर्म का पालन करो ३. विघ्नों को जीतकर सिद्धि प्राप्त करो। ४. धैर्यपूर्वक तप करते हुए राग एवं द्वेष रूपी मल्लों (पहलवानों) का नाश करो। ५. अप्रमत्त रहकर उत्तम शुक्ल ध्यान से आठ कर्म शत्रुओं का मर्दन करो। ६. सर्वोत्कृष्ट केवलज्ञान को प्राप्त करो। ७. परीषह एवं उपसर्गों से अभीत(निडर) बनो। ८. शाश्वत एवं अचल मोक्ष पद को प्राप्त करो।**

इस प्रकार ऊपर मुख्यतः ८ शुभकामनाएँ की गई हैं, जो दीक्षा-प्रसंग से अधिक मेल खा रही हैं। इनमें से आठवीं जो शुभकामना है वह समाधिमरण के प्रसंग से भी मेल खाती है। इसलिए उस समय भी ***'जय जय णंदा, जय जय भद्दा'*** का प्रयोग समीचीन ही है, किन्तु दीक्षा-प्रसंग पर इस पदावली का प्रयोग उचित एवं विशेष महत्त्व लिए हुए है।

दीक्षा प्रसंग संबंधी कार्यक्रमों में आज ***'जय जय णंदा! जय जय भद्दा'*** के उपर्युक्त द्वितीय अनुच्छेद का श्रावक-श्राविकाओं की ओर से अर्थ सहित वाचन होना चाहिए। दीक्षार्थी के लिए ये सुन्दर शुभाशंषाएँ हैं।

आगम-वाणी

कण्णसुक्खेहिं सद्देहिं, पेमं नाभिनिवेसए।
दारूणं कक्कसं फासं, काएण अहियासए।।

खुहं पिवासं दुस्सिज्जं, सीउण्हं अरइं भयं।
अहियासे अव्वहिओ, देह-दुक्खं महाफलं।।

अत्थंगयम्मि आइच्चे, पुरत्था य अणुग्गए।
आहारमाइयं सव्वं, मणसा वि न पत्थए।।

अतिंतिणे अचवले, अप्पभासी मियासणे।
हविज्ज उअरे दंते, थोवं लद्धुं न खिंसए।।

-दशवैकालिक सूत्र, अध्ययन ८, गाथा २६ से २९

जितेन्द्रिय समताधारी मुनि शब्दादि विषयों से विरक्त होता है। सुख-दुःख का कारण राग है। इसलिये संयमी के लिये कहा गया है कि वह कर्णप्रिय-मृदु मनोहर शब्दों में राग कर उसमें लुब्ध नहीं होवे। इसी प्रकार दारुण-पीड़ाकारी कठोर स्पर्श को भी हर्षित मन से सहन कर ले।

साधु को सहिष्णुता की शिक्षा देते हुए कहा गया है कि भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी, विषम शय्या और अरति तथा सप्तविध भयों को मुनि बिना व्यथा के अदीन भाव से सहन करे, क्योंकि शरीर के दुःख को सहन करना महालाभ का कारण है, यानी मोक्ष का कारण है। वास्तव में साधु "पुढवीसमे मुणी हविज्जा" पृथ्वी के समान समभाव से सुख-दुःख को सहने वाला होता है।

साधु सूर्य अस्त होने पर और प्रातःकाल पूर्व दिशा में सूर्य का उदय न हो जाय तब तक अशन, पान आदि सब प्रकार के आहार का सेवन करना तो दूर की बात है, किन्तु मन से ग्रहण करने की भी इच्छा नहीं करे।

भिक्षार्थ गृहस्थ के घर गया हुआ साधु, इच्छित आहार नहीं मिलने पर या अल्प मिलने पर प्रलाप(तुन-तुन) नहीं करता। वह चपलता रहित, आवश्यकतानुसार अल्पभाषी, परिमित भोजी और उदर के संबंध में यथा लाभ संतुष्ट रहने वाला होता है। थोड़ा पाकर भी गृहस्थ की निंदा नहीं करता। 'तवोत्ति अहियासए' इस शास्त्र-वचन के अनुसार उसे तप समझकर शान्त मन से सहन करता है।

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- ज्ञानी अपनी करणी को भौतिक पदार्थों के बदले नहीं गँवाता।
- धर्म-साधना के लिए धन की आवश्यकता नहीं है। इसकी साधना इतनी सस्ती, सरल व सुलभ है कि अमीर-गरीब सब कोई इसका लाभ उठा सकते हैं।
- धन की भूख धन से नहीं मिटती, वह संतोष से मिटती है।
- देश के नागरिकों को सामूहिक बल से हिंसा का विरोध करना होगा।
- अहिंसा, सत्य एवं सदाचार के त्रिगुण मन्त्र से देश को संकट से बचाया जा सकता है।
- जीवन की गाड़ी में धन का पेट्रोल ही भरते जाओगे और व्रत का जल नहीं होगा तो यात्रा खतरे से खाली नहीं होगी।
- मन बदल जाता है तो जीवन बदलते देर नहीं लगती।
- धर्म के प्रचार में भी आचार का बल चाहिए।
- पाप घटाने के लिए आवश्यकताओं में कमी आवश्यक है।
- जल जीवन है, गृहस्थ को उसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।
- रागी जिन भौतिक वस्तुओं को भूषण मानकर अधिकाधिक बढ़ाना चाहता है, ज्ञानी उनको घटाना चाहता है। ज्ञानी और अज्ञानी में यही खास अन्तर है।
- परिग्रह की पूजा से लोग गुणों का सम्मान भूल जाते हैं।
- श्रावक का कर्त्तव्य है कि वह धन-सम्पदा का साधन के रूप में उपयोग करे। यदि वह साधन को साध्य समझकर चलेगा तो वह बाधक बनकर उसे लक्ष्य से वंचित कर देगा।
- आठ का हो या साठ का, धर्म का मापदण्ड विवेक है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

गुरु की भक्ति इतनी सरल नहीं

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती संतरत्न तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने महावीर भवन, अशोक नगर (शूले) बैंगलोर में २ जुलाई २००४ को गुरु पूर्णिमा पर जो प्रवचन फरमाया था वह गुरु-भक्ति के सम्यक् स्वरूप एवं महत्त्व को प्रकट करता है। गुरु-भक्तों को बोध देने वाले इस प्रवचन का आशुलेखन संघ-कार्यालय प्रभारी एवं जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन जी मेहता ने किया है।

-सम्पादक

लघिमा द्वारा गरिमा को प्राप्त होने वाले त्रिलोक पूज्य अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त और अगुरुलघु बनने के लिए स्वयं अपनी पौद्गलिक गुरुता मिटाने को सतत प्रयासरत संघनायक आचार्य भगवन्त के चरणों में वन्दन के पश्चात्-

घर के स्टडी-रूम में बच्चा बैठे-बैठे पाठ याद कर रहा था। बोल तो वह काफी समय से रहा था। अचानक पिताजी के कान में शब्द पड़े- 'माई हैड' यानी मास्टरजी का माथा, अध्यापक का सिर। पिता को समझ में नहीं आया कि बच्चा बोल क्या रहा है? यह क्या पाठ है? पिताजी ने बच्चे को आवाज देकर नीचे बुलाया। प्रेम से सिर पर हाथ रखकर पूछा- "बेटा! तुम क्या बोल रहे हो?" बच्चे ने वही वाक्य "माई हैड" मास्टर जी का माथा दोहराया। बच्चा, बच्चा ही तो था, बोला- स्कूल में मास्टरजी ने यही तो समझाया।

पिता ने कहा- "नहीं, माई हैड का मतलब है मेरा सिर।" पिता ने अपने सिर पर हाथ रखकर कहा-"माई हैड!" बच्चा उम्र से कच्चा ही तो था कहने लगा- "माई हैड" यानी पिताजी का सिर। पिता को लगा बच्चा अभी समझा नहीं है, इसलिये आगे कहा- जब भी अध्यापक कहता है कि 'माई नेम इज सो एण्ड सो' तब बच्चा यही समझता है कि मेरे अध्यापक का अमुक नाम है। पिताजी ने समझाने का प्रयास किया, मगर बच्चा तो

यही समझा कि माई हैड यानी पिताजी का सिर।

पिताजी से रहा नहीं गया। वे स्कूल पहुँचे, हैड मास्टर से मिले। बोले- "बच्चों को क्या सिखाया जाता है?" हैड मास्टरजी ने बच्चे को कक्षा से बुलाया। हैड मास्टर, कक्षा के अध्यापक और पिताजी को देखकर बच्चा घबरा गया। हैड मास्टर ने पूछा- "माई हैड का क्या मतलब?" बच्चे ने कहा- "कक्षा में मास्टरजी का सिर और घर में पिताजी का सिर।"

हैड मास्टरजी विज्ञ थे। उन्होंने प्रेम से बच्चे के सिर पर हाथ फेरा, बच्चे का डर निकाला और बच्चे का हाथ उसके स्वयं के सिर पर रख कर कहा- "माई हैड यानी मेरा सिर।" बच्चे को समझ में आ गया। आज अध्यापन तो हो रहा है और रटने तक विद्या चल रही है। रटने से क्वचित् कुछ सीख लिया जाय, पर सही सीखने के लिए गुरु की आवश्यकता है। सीखने वाले को उचित मार्गदर्शन चाहिये। वह मार्गदर्शन गुरु से प्राप्त होता है।

आज आषाढ़ी पूर्णिमा है। जैनेतर परम्परा में आज की पूर्णिमा 'गुरु पूर्णिमा' के नाम से विख्यात है। आज के दिन लोग गुरु दक्षिणा देते हैं। हमारे यहाँ देने की नहीं, जीवन में उतारने की बात है। आज का दिन गुरु के प्रति भक्ति और समर्पण के लिए आन्दोलित कर रहा है।

गुरु भगवन्त की अनन्त कृपा से हमें कुछ चिन्तन करना है। पूज्य गुरुदेव (आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी महाराज) ने आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज की स्तुति करते हुए कहा है-

निन्दा– विकथा नहीं पर घर की।
जय–जय हो, रत्न मुनीश्वर की।।

निन्दा किसी की नहीं करना। निन्दा पाप है। अठारह पापों में निन्दा भी एक पाप है। निन्दा करना पीठ पीछे माँस खान के बराबर है। "पिट्ठिमंसं न खाइज्जा।" (दशवैकालिक सूत्र ८/४७) निन्दा पाप है और पाप की जम कर आलोचना करनी पड़ेगी। पाप बुरा है, यह समझना होगा। पाप की आलोचना करते हुए पाप-सेवन करने वाले पर दृष्टि जा सकती है, पर वह व्यक्ति द्वेष का पात्र नहीं है। उसके प्रति भी आत्मीयता का भाव रखना है। अन्तःकरण में सदा यही भावना रहे कि मुझे किसी की बुराई नहीं करना। किसी में बुराई नजर भी आती हो तो सर्वप्रथम अपने-आपमें

टटोलना। मैं सामने वाले को आत्मीयभाव से आगे बढ़ा सकूँ, ऐसा प्रयास करना। हम जैसे छद्मस्थों के लिए धुलिया के एक भक्त की बात याद आती है-

बुरा-बुरा क्या कहता है, बुरा तो होता ही बुरा है।
पर यह भी सच है, कहने वाला भी बनता ही बुरा है।।

वीतराग दर्शन में एक सूत्र है-

जावज्जीवाए सुसाहुणो गुरुणो।

हम भ्रान्ति में रह जाते हैं। मैंने बचपन में सीखा था- यदि आपके द्वार की सीढ़ियाँ ही मैली हैं तो पड़ौसी की छत पर पड़े कूड़े की आलोचना मत कीजिये। आज दुनियाँ को देखने की ठेकेदारी ली जा रही है। आज आदमी सबको देखता है, खुद को नहीं। *"वावण्ण-कुदसणवज्जणा।"* यानी तर्जन की बात नहीं, वर्जन की बात है। किसी निह्नव को हाथी द्वारा कुचलने की बात क्या श्रावक कर सकता है? आज लोग सीमित घेरे में बंधते जा रहे हैं। आपको सुनाने से पहले मैं अपने-आपको सुना रहा हूँ। दशवैकालिक सूत्र की चूलिका में आता है-

"गामे कुले वा णगरे व देसे, ममत्तभावं ण कहिं पि कुज्जा"

साधक कौन? क्या यह कहने वाला साधक हो सकता है कि यह तेरा क्षेत्र, यह मेरा क्षेत्र। ये भक्त मेरे, ये तुम्हारे। यह गाँव मेरा, यह तुम्हारा।

जहाँ में हम फकीरों के, कहीं डेरे नहीं होते,
कहीं भी घर नहीं होते, कहीं घेरे नहीं होते।
न खींचे वृत्त-रेखाएँ, मनुज के गीत टुकड़ों में,
कभी तेरे नहीं होते, कभी मेरे नहीं होते।।

आज बंधे जा रहे हैं। साधक कौन, इसके लिए वीतराग वाणी क्या कहती है? भारत की धरती पर फलीभूत जैन, बौद्ध एवं वैदिक परम्पराएँ वैयक्तिक साधना पर जोर देती हैं। संघ व्यक्तिगत साधना को सुरक्षित रखने का कवच है। एक साधु रहेगा उस दिन भी संघ कहलायेगा। पाँचवें आरे के अन्त में एक साधु, एक साध्वी, एक श्रावक, एक श्राविका रहेगी, उस दिन तक संघ कायम रहेगा।

आज गुरु-भक्ति का दिन है। कल कृतज्ञता के भावों को समझने का

प्रयास किया था। गुरु-कृपा से ये भाव पल्लवित-पुष्पित होते हैं। गुरु की कृपा में बाधक तत्त्व क्या? जैन दर्शन नेगेटिविटी निकालने पर जोर देता है। सामायिक के पाठ में *'न करेमि न कारवेमि'* शब्द आता है। नहीं करने वाले को छोड़ दिया तो होने वाला स्वतः होता जायेगा। हमारी प्रवृत्ति भी निवृत्ति प्रधान हो।

गुरु की बात चल रही है। "गुरु को माना, गुरु को मनाया, अब बारी है गुरु की मानने की।" आज शायद पूरे अर्थ में गुरु की मानना नहीं आता। 'माई हैड' का अर्थ मास्टर जी का माथा नहीं, पिताजी का सिर नहीं, 'मेरा सिर' होता है। हम दूसरों के दोष देखने के बजाय स्वयं के दोष टटोलें, देखें।

आगम दर्पण है। दर्पण का मुख दूसरों के बजाय अपनी तरफ करना है। गुरु का चयन कर लिया, चयन के पश्चात् जरूरत है अपने-आपको गुरु-चरणों में समर्पित होने की। दुनिया के दोषों को देखने, दुनिया के दोषों को याद करने के कारण ही जीव आज तक रुळ रहा है। एक बड़ी हवेली में चोरी हो गई। पास की हवेली में एक चौकीदार रहता था। चौकीदार से पूछा-भाई! तुमने हवेली में चोरी करते किसी चोर को देखा क्या? वह बोला- पता नहीं। अरे, तुझे पता नहीं तो तूं चौकीदार कैसा? क्या चौकीदारी करता है? कोई चोर इधर आया होगा। चौकीदार कहता है- साहब, मैं आपकी हवेली का चौकीदार नहीं हूँ, इस हवेली का चौकीदार हूँ। इस हवेली का मालिक मुझे तनख्वाह देता है।

आज अधिकांश लोग क्या कर रहे हैं? क्या वे चौकीदारी तो नहीं कर रहे? यह क्रोधी, वह लोभी। इसको जल्दी गुस्सा आता है, वह बिना मतलब बोलता है। अमुक चोर है। एक-एक आदमी न जाने कहाँ-कहाँ और किन-किन की चौकीदारी कर रहा है। वह दूसरों की चौकीदारी तो करता है, पर अपनी चौकीदारी भूल रहा है। जयपुर के साधक अमरचन्द जी नाहर मेरी गृहस्थावस्था में घर पर आए। वे वर्षों से मौन रखते थे। उनसे किसी ने साधना की बात पूछी तो स्लेट पर लिख दिया- "तूं तेरा संभाल, छोड़ सब जंजाल।" इस जीव ने बिना पैसे आज तक बहुत चौकीदारी की। अपनी नहीं, दूसरों की चौकीदारी की। जरूरत है स्वयं के निरीक्षण की, स्वयं की चौकीदारी की। हर व्यक्ति अपना जीवन देखे। मेरी आत्मा में कोई दोष तो

नहीं। यदि है तो उसे कैसे दूर करूँ? हर व्यक्ति अपने में रहे दोषों को देखे, उन्हें दूर करने का प्रयास करे। अपने दोष खुद से नहीं निकले तो गुरु-चरणों में निवेदन करे। गुरु के अन्तर में अनुकम्पा होती है, गुरु दोष दूर करते हैं। गुरु क्या करता है? आपने दोहा सुना होगा-

गुरु प्रजापति सारिखा, घड़-घड़ काढ़े खोट।
भीतर से रक्षा करे, ऊपर मारे चोट।।

कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाता है तो वह मटके पर चोट मारता है लेकिन दूसरे हाथ से भीतर में सहारा भी रखता है। गुरु भी एक-एक दोष निकन्दन के लिए ऊपर से भले ही कठोरता दिखाये, पर भीतर में वात्सल्य एवं अपनत्व होता है। परम्परा चाहे जो हो शिष्य को गुरु के प्रति खरा उतरना होता है। भारतीय परम्परा में तो गुरु का स्थान भगवान से ऊपर है, ऐसा भी कह दिया जाता है। आपने वह दोहा सुना होगा-

गुरु गोविन्द दोनों खड़े, का-के लागूँ पाय।
बलिहारी गुरुदेव की, गोविन्द दियो बताय।।

और भी कई प्रचलित दोहे हैं-

कबीरा ते नर अंध हैं, गुरु को कहते और।
प्रभु रूठियाँ गुरु ठौर है, गुरु रूठियाँ नहीं ठौर।।
यह तन विष की बेलड़ी, गुरु अमृत की खान।
सीस दियां जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जाण।।

हमारे यहाँ गुरु-शिष्य का नाता विशिष्ट ही है-

शिष्य जो बनता सही, गुरु आप ही बन जायेगा।
तिरा के औरों को, स्वयं मुक्ति पायेगा।।

जैन दर्शन स्वयं के पुरुषार्थ पर जोर देता है। हम आगमवाणी में इस तथ्य को खोजने का प्रयास करें। उत्तराध्ययन सूत्र के बत्तीसवें अध्ययन में कहा है- *"तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा"* सबसे पहला उपाय है- गुरु-सेवा। हम सेवा कैसे करें? उत्तराध्ययन सूत्र के पहले अध्ययन की छियालीसवीं गाथा में कहा है-

पुज्जा जस्स पसीयंति, संबुद्धा पुव्वसंथुया।
पसन्ना लाभइस्संति, विउलं अट्ठियं सुयं।।

(सम्बुद्ध (तत्त्वज्ञ) पूज्य पुरुष (आचार्यादि), जो शिक्षणकाल से ही जिस शिष्य के विनयादि गुणों से परिचित होते हैं, वे उस पर प्रसन्न होकर

उसे अर्थयुक्त विपुल श्रुत से लाभान्वित करते हैं।)

पूज्य पुरुष किस पर प्रसन्न होते हैं? जो विनयादि सद्गुणों से सम्पन्न हैं उन पर। दशवैकालिक सूत्र के नवम अध्ययन के पहले उद्देशक की दसवीं गाथा में कहा है-

आयरियपाया पुण अप्पसण्णा, अबोहि आसायण णत्थि मुक्खो।
तम्हा अणाबाहसुहाभिकंखी, गुरुप्पसायाभिमुहो रमिज्जा।।

(आचार्यदेव के अप्रसन्न होने पर बोधिलाभ नहीं होता, गुरु की आशातना होने पर मोक्ष नहीं होता। इसलिए अव्याबाध सुख के अभिलाषी को गुरुदेव की इच्छा के अनुसार व्यवहार करना चाहिए।)

वीतराग वाणी क्या कह रही है? महाराज के यहाँ आकर 'मत्थएण वंदामि' कहकर मांगलिक सुनना सरल काम है। गुरु की भक्ति इतनी सरल नहीं है। गुरु जब प्रसन्न हो जायेंगे तो मिथ्यात्व के जाते देर नहीं लगेगी। आप अपने-आपको जरा टटोलकर तो देखें। पुनः निवेदन है कि आप किसी व्यक्ति विशेष पर न जायें। आपको शायद ध्यान होगा अजमेर सम्मेलन में संवत् १९९० में एक प्रस्ताव पारित हुआ कि एकल विहारी को प्रश्रय न दिया जाय। प्रस्ताव के बाद एकल विहारी धूज गये। आज एकल विहारी संतों को प्रश्रय दिया जा रहा है, क्या इससे आचार्य को प्रसन्नता दी जा रही है या अबोधि को निमन्त्रण दे रहे हैं? आप जरा अपने-आपको टटोलें तो सही। आप कॉन्फ्रेन्स का स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ देख लें। शास्त्र की मर्यादा है, शास्त्र आज्ञा देता है कि एक आचार्य के पास पटरी नहीं बैठती तो वह दूसरे आचार्य की आज्ञा में रह सकता है। आज कई भक्त हैं जो आचार्य श्री के कृपा-पात्र बनना चाहते हैं, पर आज्ञा की अवहेलना करके कृपा-पात्र नहीं बना जा सकता। आप भगवती सूत्र शतक आठ उद्देशक आठ की टीका देख लीजिये।उत्तराध्ययन सूत्र के पहले अध्ययन में गाथा है-***"पडिणीए असंबुद्धे, अविणीए त्ति वुच्चइ।"*** अर्थात् जो प्रत्यनीक है, वह अविनीत है। आठ प्रकार की प्रत्यनीकता बताई गई हैं- अवर्णवाद बोलना, दोष देखना, अहित करना, उनके वचनों का अपमान करना, उनके समीप नहीं रहना, उपदेश का उपहास करना, वैयावृत्त्य नहीं करना और प्रतिकूल व्यवहार करना।

आपको-हमको मुक्ति के मार्ग पर बढ़ना है, यह लक्ष्य सुनिश्चित हो। गुरु में कुछ कमी हो सकती है। गुरु भी है तो छद्मस्थ और छद्मस्थ

में कमी रहना संभव है। अनेक अवसरों पर अनेक लोगों को सुधारते हुए कहीं कोई गलती रह सकती है। गुरु गुरु है, भगवान नहीं। हाँ, गुरु भगवान के रास्ते पर चलने वाला साधक है। गुरु बनाने के पहले आप देखें, देखना चाहिये। हित-मित बात निवेदन की जा सकती है पर बात-बात को लेकर नाराजगी ठीक नहीं। उससे किसी का हित नहीं होने वाला। धार्मिक पतन की जिम्मेदारी आपकी-हमारी-सबकी है। धार्मिक ही क्या, सामाजिक पतन में भी सब जिम्मेदार हैं। लोकनायक जयप्रकाशनारायण के देहावसान पर एक कवि ने लिखा-

जय तो हुई पराजय सहसा और प्रकाश अंधेरा है।
इस घटना का जिम्मा रे भैय्या, तेरा है और मेरा है।।

अभी गुरु-भक्ति पर चिन्तन कर रहे हैं। शास्त्र कहता है- "अवर्णवाद प्रत्यनीक है।" आज कई हैं जो एक स्थान की बात दूसरे स्थान पर करते हैं, एक के दोष दूसरे के सामने कहते हैं, यह अवर्णवाद है। कई हैं जो क्लेश उपजे वैसी बातें करते हैं। कुछ हैं जो कहते हैं- महाराज! आप शरीर का बहुत कम ध्यान रखते हैं। जैन साधुओं के लिए कहने वाले कई तरह के हैं, पर जोधपुर के राजा मानसिंह ने तो लिखा है-

काहु की न आस राखे, काहु से न दीन भाखे,
करत प्रणाम जाको, राजा–राणा–जेवड़ा।
सीधी सी अरोगे रोटी, बैठा बात करे मोटी,
ओढ़न को वांके है, धोला–सा पछेवड़ा।
खम्मा–खम्मा करे लोग, कदेही न राखे शोक,
बाजे न मृदंग चंग, जग मांहि जे बड़ा।
कहे राजा मानसिंह, मन में विचार देखो,
दुःखी तो सकल जग, सुखी जैन सेवड़ा।।

आज गुरु भक्ति का दिन है। गुरु भक्ति कैसे होगी इस पर विचार करना चाहिये। आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज की बचपन में पढ़ाई होती थी, तब बाबाजी भोजराज जी महाराज उनके कमरे के बाहर विराज जाते। आचार्य भगवन्त के साथ पं रत्न श्री लक्ष्मीचन्द जी महाराज और पं रत्न श्री चौथमल जी महाराज का भी अध्ययन चल रहा था। संतों के अध्ययन में श्रावकों का कैसा सहयोग था। स्वामीजी महाराज अध्ययन में विघ्न न पड़े, इस बात का कितना खयाल रखते थे। कोई दर्शनार्थी दर्शन-वन्दन की भावना

से आता तो कमरे के बाहर बैठे स्वामीजी महाराज कहते- "आप चुपचाप खिड़की से दर्शन कर हाथ जोड़ लो। अगर उनका ध्यान भंग हुआ तो कल दर्शन नहीं हो सकेंगे।" सहयोग की जब ऐसी भावनाएँ होती हैं तो ही जाकर अध्ययन में निखार आता है। वे महापुरुष (आचार्य श्री हस्ती) ऐसे ही नहीं बने। आज क्या स्थिति है? दिन भर आने-जाने वालों का तांता लगा रहता है। कभी कोई संत पढ़ रहा है या ध्यान-मौन में है तो भक्त यह कहने में भी नहीं चूकते कि क्या करें हम तो समय निकाल कर गये, पर महाराज को तो बोलने की फुर्सत नहीं।

आप श्रावक हैं। श्रावकों का साधना में सहयोग रहना चाहिये। हाँ, यदि किसी में कोई कमी है या किसी में दोष नजर आए तो हित बुद्धि से निवेदन करें, सुधारने का प्रयास करें। किन्तु दोषों की सर्वत्र चर्चा करते रहें तो उससे दोष दूर नहीं होंगे और न ही सुधार होगा।

भगवती सूत्र शतक तीन उद्देशक एक में पृच्छा चलती है कि सनत्कुमार भवी है या अभवी? पहले बताया जाता है 'भवी'। फिर आगे पूछा जाता है कि वे शुक्लपक्षी हैं या कृष्णपक्षी? वह सम्यक्दृष्टि है या मिथ्यादृष्टि? ऐसे कई प्रश्न चले। वह हित चाहने वाला है या सुख चाहने वाला?

हित और सुख में अन्तर है। महाराज को गरमागरम बादाम का हलुवा मिल जाये, सुख चाहने वाला ऐसा सोच सकता है, पर हित चाहने वाला सोचेगा कि मेरे लिए आहार बना है, मैं संतों को बहरा कर उपवास पच्चक्ख लूँ। पर संतों के निमित्त से नहीं बनाऊँ, यह हित भावना है। हित चाहने वाला महाराज से पूछेगा तो इस तरह- "गुरुदेव! आपकी इन्द्रियाँ और मन संयम में सहकार तो कर रहे हैं ना? कोई बाधा तो नहीं है?" मात्र शरीर का ही चिन्तन नहीं, चिन्तन होना चाहिये- ***'जत्ता भे जवणिज्जं च भे।'*** गुरुदेव! आपकी संयम-यात्रा निर्बाध तो चल रही है? आपका शरीर, इन्द्रियाँ और मन पीड़ा से रहित है ना?

सुख के स्वादु मोक्ष-मार्ग के आराधक नहीं हो सकते। जो स्वादु हैं, वे साधु नहीं। संतों के लिए बनाने में सुख तो होगा, हित नहीं। अहित करना प्रत्यनीकता है। श्रावक हितबुद्धि से दलाली करे। जयपुर के सुश्रावक पूनमचन्द जी बडेर के कल संथारे के समाचार मिले। वे हितबुद्धि से कैसी

दलाली करते! कहते- "महाराज! इस नजदीक के घर का पानी तो मेरे आने के बाद बना है। आप थोड़ा आगे पधारें तो आपको निर्दोष पानी मिल जायेगा।" हित बुद्धि से दलाली करने वाले कई श्रावक हैं। जोधपुर के श्रावकरत्न कुन्दनमल जी भंसाली कहते- "महाराज! आपकी पुण्यवानी आगे से आगे दौड़ रही है।" वे संतों का उत्साहवर्द्धन करते। "आप चलें, इधर-उधर खोज करेंगे तो जरूर निर्दोष पानी मिलेगा।" संत भी उनकी भावना को ध्यान में रखकर चलते। चलते-चलते एक घर में केर का ओटा हुआ पानी पड़ा था। भंसाली जी बोले-"देखा महाराज, आपकी पुण्यवानी कितनी प्रबल है?"

इस योग्य हम कहाँ हैं, गुरुवर तुम्हें रिझाएँ,
फिर भी मना रहे हैं, शायद तूं मान जाए।
जब से जन्म लिया है, विषयों ने हमको घेरा।।
छल और कपट ने डाला, इस भोले मन पर डेरा।
सद्बुद्धि को अहं ने, रखा सदा दबाए।।

भगवान और गुरु को चतुराई और चालाकी से नहीं रिझाया जा सकता। भगवान और गुरु को सत्ता और संपत्ति से भी नहीं रिझाया जा सकता। भगवान और गुरु को रिझाने का तरीका है-समर्पण। गुरु का अहित चाहना ठीक नहीं है। अजमेर के सुश्रावक मनोहरसिंह जी चंडालिया कैसे हितचिंतक संत-सेवी थे? अजमेर संघमंत्री जीतमल जी चौपड़ा जब भी विनति करने आते दो पक्तियाँ चंडालिया जी के लिए जरूर कहते। वे नंगे पाँव संतों के सामने जाते। संतों के आगमन पर सबसे पहले स्थान की आज्ञा देते। संतों के ठहरने के बाद किसी के द्वारा आज्ञा बदलवा देते। वे संतों से निवेदन करते कि आप दूर से पधारे हैं, आपको कपड़े की जरूरत हो तो चलें मैं कपड़ों की दुकान पर ले चलता हूँ। दवा की आवश्यकता है तो मेरे कई दवा विक्रेता परिचित हैं, आप वहाँ से जरूरत की दवा ले सकते हैं। चंडालिया जी निर्दोष दलाली करते। उन्होंने घर में गाय पाल रखी थी, रोज संत नहीं आते, पर जब भी अवसर मिलता, वे गोचरी बहराते। आप निर्दोष सेवा करें। निर्दोष सेवा नहीं कर सकें तो सदोष सेवा के द्वारा संतों का अहित करने का तो नहीं सोचें। आप संतों को उचित सहयोग दीजिये, जिससे उनका जीवन आगे बढ़े।

गुरु की भक्ति की बात चल रही है। आप अवर्णवाद नहीं करें, दोष नहीं देखें और अहित नहीं करें। संतों के वचनों का अपमान करना भी प्रत्यनीकता है। श्रावक भी अन्तेवासी कहलाता है। भगवान महावीर स्वामी ने गौतमस्वामी से कहा- ***'ममं अन्तेवासी महासतए'*** श्रावक भी अन्तेवासी हो सकता है। द्रव्य से अवसर आता है तो श्रावक नजदीक रहता है, भाव से सदा तत्पर रहता है।

मुक्ति-मार्ग के प्ररूपक की भक्ति में कहाँ कमी पड़ रही है? इस जीव ने तीर्थंकर भगवन्तों का सान्निध्य प्राप्त किया, केवलज्ञानियों, गणधरों, आचार्यों, उपाध्यायों का सान्निध्य मिलाया, पर कहीं न कहीं कपट की टाटी आड़ी रह गई, जिसके कारण वह अमृत भीतर नहीं जा सका।

यह तन विष की बेलड़ी, गुरु अमृत की खान।
सीस दियां जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।।

वीतराग वाणी बता रही है कि हमने उन महपुरुषों के आदेशों का उपहास किया। 'माई हैड' यानी मास्टरजी के सिर को लेकर बैठे हुए हैं। 'माई हैड' मेरा सिर होता है, यह अभी तक नहीं जाना? आठ प्रकार के प्रत्यनीक होते हैं इसको समझने के लिए चाहे कथा का उपयोग हो या दृष्टान्त का, किन्तु बिना तत्त्वज्ञान के आन्तरिक विकास नहीं हो पायेगा। जब तक जीव-अजीव का विवेक नहीं होगा, सम्यक्दर्शन प्राप्त नहीं होगा। बैंगलोर की सुज्ञ परिषद् है, आपसे अपेक्षा है कि आप वीतराग वाणी का गहराई से चिन्तन करें।

मैं पगली रोती रही, नदी किनारे बैठ।
जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ।।

नदी के पास बैठने से ठण्डक का अनुभव हो सकता है, झाग मिल सकते हैं, लेकिन रत्न-रश्मि नहीं मिल सकती। तत्त्व की रुचि कइयों को है। जरूरत है जीवन को टटोलने की। गुरु को मानने वाले भक्ति में कैसे रमते हैं, यह अनुभव का विषय है, कथन का नहीं।

एक गुरु के दो शिष्य थे। दोनों सेवाभावी थे। वे गुरु के बताये कार्य करने को सदा तत्पर रहते। गुरु का हित भी करना चाहते थे। गुरु को सुखी रखने की भावना भी थी। मैं गुरु भक्ति करूँ, पर दूसरा कैसे भक्ति कर ले, यह बात जब मन में आती है तो अहं जगे बिना नहीं रहता। जहाँ

विवेक नहीं, वहाँ सब गड़बड़ है।

दोनों शिष्य गुरु की सेवा के अभिलाषी थे। उन्होंने गुरु के अंग बाँट लिये। एक ने दाहिना अंग संभाला तो दूसरे ने बाँया। दोनों हाथ-पैर दबाते, सेवा करते। एक दिन किसी आवश्यक काम से गुरु ने एक शिष्य को बाहर भेजा। दूसरा शिष्य अपने हिस्से की टांग दबाता, हाथ चांपता। एक तरफ के दबाव से गुरुजी उकता गये। बोले- बच्चा, दूसरी टाँग दबा दे। शिष्य बोला- नहीं, यह मेरी टाँग नहीं है, उसकी है। मैं उसकी टाँग नहीं दबाता। गुरु ने दो-तीन बार कहा तो वह दूसरी टाँग दबाने को तैयार हुआ। वह ज्यों ही दूसरी टाँग दबाने लगा कि दूसरा शिष्य बाहर से लौट आया। देखा, मेरे हिस्से की टाँग यह कैसे दबा रहा है? तड़क कर बोला- "तूने मेरे हिस्से की टाँग के हाथ लगाया तो लगाया कैसे?" आव देखा न ताव पास में पड़े डंडे को उठाया और दूसरे शिष्य के हिस्से की टाँग पर प्रहार कर दिया। दोनों एक-दूसरे की टाँग पर प्रहार करने लगे। गुरु ने मना किया, पर अहंभाव से ग्रस्त शिष्य सुनने को तैयार ही नहीं।

आप जरा चिन्तन करना, अपने हृदय को टटोलना कि कहीं हमारे भीतर में अहं तो नहीं है? गुरु-भक्ति में आने वालों के मन में अन्य गुरु भक्तों के प्रति क्या भाव आते हैं? यह चिन्तन का विषय है। आज चाहे गाँव हो या नगर अथवा महानगर हर संघ में एक गुरु के भक्तों में आपस में मन-मुटाव, लड़ाई-झगड़े यदि चलते हैं तो कहना होगा गुरु-भक्ति में अभी कसर है। भगवती सूत्र शतक तीन का वर्णन समय के साथ रखने की भावना है, अभी आचार्य भगवन्त पधार गये हैं, इसलिए अपनी बात को यहीं विराम देता हूँ।

तीन बातें

त्यागने योग्य तीन बाते हैं	: हीन भावना, निन्दा और स्वार्थ
तीन बातों पर नियन्त्रण रखें	: काम, क्रोध और कामना
तीन चीजें किसी का इन्तजार नहीं करती	: समय, मौत और बहती हवा
तीन बातें वापस नहीं आती हैं-	: कमान से निकला तीर, जुबान से निकली बात और शरीर से निकला प्राण।

प्रेषक- श्रीमती कंचन देवी सिंघरोदिया, तलवंडी, कोटा

अनुयोग : एक चिन्तन

उपाध्याय श्री रमेशमुनि जी शास्त्री

जैन आगम-साहित्य वस्तुतः "सत्यं शिवं सुन्दरम्" की अनुभूति की अभिव्यक्ति है। यह वह साहित्य है जो भावात्मक रूप से अखण्ड है, सम्पूर्ण है और मानव-चेतना को समग्रतः परिस्पर्श करता है। इस वाङ्मय में कमनीय संकल्पना संनिहित नहीं है, वाणी का विलास भी नहीं है और मात्र शब्दराशि का संकलन भी नहीं है। अपितु इसमें अन्तरंग की गहराई है। किं बहुना, यह आत्मा पर आगत कालुष्य को दूर कर केवलज्ञान एवं केवलदर्शन से स्व-स्वरूप को आलोकित कर देता है। 'आगम' का पर्यायवाचक शब्द 'शास्त्र' भी है। जिसके माध्यम से यथार्थ सत्यरूप ज्ञेय का, आत्म तत्त्व का परिबोध हो, आत्मा का अनुशासन किया जा सके, वह 'शास्त्र' कहलाता है।[१] यह शब्द 'शास्' धातु से निष्पन्न हुआ है। जिसका आशय शासन, शिक्षण और उद्बोधन है। जिस तत्त्वज्ञान से आत्मा अनुशासित होती है, जाग्रत हो जाती है, तप-संयम, समता एवं अहिंसा की साधना में संप्रवृत्त होती है, उसी को शास्त्र की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। जो केवल गणधर, श्रुतकेवली और अभिन्नदशपूर्वी के द्वारा कहा गया है, वह 'सूत्र' है।[२] इस संदर्भ में इतना सा ज्ञातव्य है कि आगम, शास्त्र और सूत्र- इन त्रिविध शब्दों का एक ही अभिप्राय में भी प्रयोग रहा है।

आगम-साहित्य का प्रथम वर्गीकरण 'पूर्व' और 'अंग' के रूप में हुआ है।[३] द्वितीय वर्गीकृत रूप 'अंगप्रविष्ट' एवं 'अंगबाह्य' की अपेक्षा से प्राप्त होता है।[४] तृतीय वर्गीकरण 'अनुयोग' के आधार पर हुआ है। सम्पूर्ण आगम-साहित्य चतुर्विध अनुयोग में विभाजित है।[५] अनुयोजन को अनुयोग कहा जाता है। 'अनुयोजन' शब्द का अभिप्रेत-अभिप्राय जोड़ने और संयुक्त करने के अर्थ में है। इसी आशय को इस प्रकार परिस्पष्ट किया गया है कि जो भगवत्-कथन से संयोजित करता है, वह 'अनुयोग' कहलाता है। लघुसूत्र में महान् अर्थ का योग करने को 'अनुयोग' कहा जाता है। 'अनुयोग' शब्द 'अनु' एवं 'योग' के संयोग से निष्पन्न है। 'अनु' उपसर्ग अनुकूल अर्थ को अभिव्यक्त करता है। सूत्र के संग अनुकूल, अनुरूप अथवा सुसंगत अर्थ-संयोग 'अनुयोग' है। 'अनु' का अर्थ पश्चात् भाव एवं स्तोक भी है।[६]

अर्थ के साथ सूत्र की जो अनुकूल योजना की जाती है उसका नाम 'अनुयोग' है।[७] सूत्र का अपने अभिधेय में जो योग होता है, वह अनुयोग है।[८] अनुयोग के भेद एवं प्रभेद विस्तारपूर्वक वर्णित हुए हैं। अनुयोग का विभाजन दो प्रकार से भी प्रतिपादित है। जहाँ दृष्टिवाद के परिकर्म, सूत्र, पूर्वगत अनुयोग और चूलिका ये पंचविध भेद हैं[९], उसमें 'अनुयोग' चतुर्थ है। अनुयोग के मूल प्रथमानुयोग और गण्डिकानुयोग ये दो भेद हैं।[१०] जिसमें सम्यग्दर्शन की प्राप्ति से लेकर तीर्थ-प्रवर्तन एवं मोक्ष-गमन तक का वर्णन है, वह मूल प्रथमानुयोग है।[११] द्वितीय गण्डिकानुयोग है। गण्डिका का अर्थ समान वक्तव्यता से अर्थाधिकार का अनुसरण करने वाली वाक्य-पद्धति है और अनुयोग अर्थात् अर्थ प्रकट करने की विधि है। इक्षु के मध्य भाग की गण्डिका के समान एकार्थ का अधिकार अर्थात् ग्रन्थ-पद्धति है। इसके बहुविध भेद भी प्रतिपादित हुए हैं। उक्त अनुयोग में देव, मानव, तिर्यंच और नरक गति में गमन करना, इसके अतिरिक्त महापुरुषों का वर्णन भी उपलब्ध है।[१२] संघ द्वारा स्वीकृत एवं मान्यता प्राप्त गण्डिकाएँ प्रामाणिक होती हैं।

इसी परिपार्श्व में यह ज्ञातव्य है कि अनुयोग का अर्थ 'व्याख्या' है। व्याख्येय वस्तु के आधार पर अनुयोग का विभाजन चतुर्विध रूप है[१३]- १. चरण करणानुयोग २. धर्मकथानुयोग ३. गणितानुयोग और ४. द्रव्यानुयोग है। अनुयोगों के नाम इस रूप में भी प्राप्त हैं- प्रथमानुयोग, चरणानुयोग, करणानुयोग एवं द्रव्यानुयोग है।[१४] सर्वप्रथम अनुयोग के रूप में चरणानुयोग है। ऐसा समुल्लेख भी संप्राप्त होता है।[१५] गृहस्थ और मुनियों के चारित्र की उत्पत्ति, वृद्धि और रक्षा के विधान करने वाले अनुयोग को चरणानुयोग कहा जाता है। श्रमण और श्रावक से संदर्भित आचार-संहिता का समग्रतः विश्लेषण चरणानुयोग में उपलब्ध होता है और इस अनुयोग की यही परिभाषा है।[१६] सर्वज्ञ तीर्थंकर महाप्रभु द्वारा अहिंसा, अस्तेय प्रभृति स्वरूप धर्म का जो कथन किया जाता है अथवा अनुयोग के विचार से जो धर्म-संबंधी कथा कही जाती है, वह धर्मकथा है।[१७] ऐसा भी समुल्लेख है कि अहिंसा-लक्षण से संयुक्त धर्म का जो आख्यान है, उसे धर्मकथा कहते हैं।[१८] जो अभ्युदय और निःश्रेयस की संसिद्धि करता है तथा सद्धर्म से जो निबद्ध है, वह सद्धर्मकथा है।[१९] धर्मकथा का पर्यायवाची शब्द 'प्रथमानुयोग' है। धर्म,

अर्थ, काम और मोक्ष का परमार्थ ज्ञान 'सम्यग्ज्ञान' है। जिसमें एक पुरुष अथवा त्रिषष्टि श्लाघनीय सत्पुरुषों के पवित्र चरित्र में रत्नत्रय और ध्यान का निरूपण है, वह प्रथमानुयोग है।[२०] निष्कर्ष यह है कि धर्म कथानुयोग ही प्रथमानुयोग है।

इसी परिप्रेक्ष्य में यह ज्ञातव्य है कि गणित के माध्यम से जहाँ विषय का विशदीकरण और सुस्पष्टीकरण किया जाता है, वह गणितानुयोग है। इस अनुयोग के स्थान पर 'करणानुयोग' नाम भी व्यवहृत हुआ है। जिसका स्पष्टतः आशय यह है कि लोक-अलोक के विभाग को, युगों के परिवर्तन को तथा चारों गतियों को दर्पण के समान प्रकट करने वाले सम्यग्ज्ञान को 'करणानुयोग' कहा गया है।[२१] 'करण' शब्द के दो अर्थ हैं। प्रथम अर्थ 'परिणाम' है और द्वितीय अर्थ 'गणित के सूत्र' हैं। द्रव्यानुयोग की परिभाषा इस प्रकार है- जो श्रुतज्ञान के प्रकाश में जीव, अजीव, पुण्य, पाप, बंध, मोक्ष आदि नवविध तत्त्वों को प्रदीप के सदृश प्रकट करता है, वह द्रव्यानुयोग है। द्रव्य का द्रव्य में, द्रव्य के द्वारा अथवा द्रव्य हेतुक जो अनुयोग होता है उसका नाम 'द्रव्यानुयोग' है।[२२] इसके अतिरिक्त द्रव्य का पर्याय के साथ अथवा द्रव्य का द्रव्य के साथ जो योग होता है, वह भी द्रव्यानुयोग है।

जैन आगम-साहित्य का जब गहराई से परिशीलन करते हैं, तब स्पष्टतः प्रतीत होता है कि उक्त साहित्य में इन चतुर्विध अनुयोगों का वर्णन है। कालिक श्रुत अनुयोगात्मक व्याख्या की अपेक्षा से अपृथक् थे। दूसरे शब्दों में यों भी कहा जा सकता है कि उनमें चरणकरणानुयोग प्रभृति अनुयोग चतुष्टय के रूप में अविभक्तता रही। आर्यवज्र के पश्चात् कालिक श्रुत और दृष्टिवाद की अनुयोगात्मक पृथक्ता अर्थात् विभक्तता की गई। आर्यवज्र तक श्रमणवर्ग तीक्ष्ण-बुद्धि के धनी थे। अतएव अनुयोग की दृष्टि से अविभक्त रूप में व्याख्या प्रचलित थी। प्रत्येक सूत्र में चरण-करणानुयोग आदि का अविभाग-पुरस्सर वर्तन था। मुख्यता की दृष्टि से कालिक श्रुत को ग्रहण किया गया। अन्यथा अनुयोगों का कालिक-उत्कालिक आदि सभी में अविभाग था। आर्यवज्र तक जब अनुयोग अपृथक् थे तब एक ही सूत्र की चारों अनुयोगों के रूप में व्याख्या होती थी।

आर्यरक्षित से पूर्वकाल में अपृथक्त्वानुयोग प्रचलित था। उसमें प्रत्येक सूत्र की व्याख्या चरण-करण, धर्म, गणित और द्रव्य की दृष्टि से की जाती

थी। प्रस्तुत व्याख्या-पद्धति अतिशय क्लिष्ट एवं स्मृति की तीक्ष्णता पर आधृत थी। आर्यरक्षित ने आगमीय ज्ञान को सर्वथा सरल बनाने हेतु आगम-अध्ययन क्रम को चार अनुयोगों में विभाजित किया, जो वास्तव में आगमों की वक्तव्यता को समग्र-रूपेण सुरक्षित बनाये हुए है।

१. **चरण करणानुयोग**– इसके अन्तर्गत कालिक श्रुत, महाकल्प, छेदसूत्र आदि हैं।

२. **धर्मकथानुयोग**–इसमें ऋषिभाषित, उत्तराध्ययन आदि का अन्तर्भाव है।

३. **गणितानुयोग**– इसमें सूर्यप्रज्ञप्ति प्रभृति आगमों का समावेश है।

४. **द्रव्यानुयोग**– इसमें दृष्टिवाद आदि हैं।

उपर्युक्त वर्गीकरण विषय-सादृश्य की दृष्टि से किया गया है। प्रस्तुत वर्गीकरण करने के अनन्तर भी यह भेद-रेखा नहीं खींची जा सकती कि अन्य आगमों में अन्य अनुयोगों का वर्णन नहीं है।

सारपूर्ण भाषा में यही कहा जा सकता है कि आगम-साहित्य का अनुयोग के आधार पर जो वर्गीकरण हुआ है, वह स्थूल-दृष्टि से संभव हो पाया है। कतिपय आगमों के अतिरिक्त अन्य आगमों में चतुर्विध अनुयोगों का संमिश्रण है। व्याख्या-क्रम की दृष्टि से यह वर्गीकरण अपृथक्त्वानुयोग और पृथक्त्वानुयोग के रूप में दो प्रकार का है। उक्त चारों ही अनुयोगों का अपना अपना अस्तित्व है, महत्त्व है और मूल्य भी है। उक्त विभाजन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हुआ है, एतदर्थ आगम-साहित्य की जो वक्तव्यता है, वह शत-प्रतिशत सुरक्षित रह पाई है।

संदर्भ

1. विशेषावश्यकभाष्य, जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण, गाथांक– 1384
2. क– मूलाचार 5/80
   ख– आवश्यक निर्युक्ति–880, 886
3. समवायांग सूत्र– 14/136
4. नन्दीसूत्र–सूत्रांक–43
5. क– आवश्यक निर्युक्ति, गाथांक 363–377
   ख– विशेषावश्यक भाष्य, 2284–2295
   ग– दशवैकालिक निर्युक्ति, 3
6. बृहत्कल्प, गाथांग 190
7. आवश्यक निर्युक्ति मलयगिरि वृत्ति– 127
8. क– आवश्यक निर्युक्ति हारिभद्रीया वृत्ति, 130

ख– समवायांग, अभयदेव वृत्ति, 147
ग– स्थानांग सूत्र 4/1/262, पृष्ठांक 200
घ– जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, प्रमेयरत्नमंजूषा वृत्ति, पृष्ठ 4–5
ङ– विशेषावश्यक भाष्य, गाथांक, 1383
9. श्री मलयगिरि, नन्दीवृत्ति, पृष्ठांक, 235
10. श्री नन्दीचूर्णी मूल–पृष्ठांक, 58
11. श्री नन्दीसूत्र चूर्णी–पृष्ठांक–58
12. समवायांग सूत्र वृत्ति–120
13. अभिधान राजेन्द्र कोष, प्रथम भाग, पृष्ठांक, 356
14. क– पंचास्तिकाय, 173
ख– तत्त्वार्थ वृत्ति–254/15
15. क– आवश्यकनिर्युक्ति, 363–377
ख– विशेषावश्यक भाष्य, 2284–2295
16. क– द्रव्यसंग्रह टीका, 42/182/9
ख– अनगार धर्मामृत, पण्डित आशाधर जी, 3/11
17. दशवैकालिक चूर्णी, जिनदासगणी, पृष्ठांक 29
18. अनुयोगद्वार टीका, आचार्य हरिभद्र, पृष्ठांक 10
19. महापुराण, महाकवि पुष्पदन्त, 1/20
20. रत्नकरण्ड श्रावकाचार, 43
21. रत्नकरण्ड श्रावकाचार, 44
22. विशेषावश्यक भाष्य, 1398–1399
23. विशेषावश्यक भाष्य, 2286–2287

–तारक गुरु ग्रन्थालय, शास्त्री सर्कल, उदयपुर (राज.)

शीलव्रत का युवा आदर्श : श्रीपाल सुराना

संघ-संरक्षक सुश्रावक श्री उमरावमल जी सुराना के सुपुत्र संघ-सेवी श्रावकरत्न श्री श्रीपाल जी सुराना ने सपत्नीक १० दिसम्बर को पुन्नमल्ली में परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से आजीवन अब्रह्म का त्याग किया। २५ वर्ष पूर्व आचार्य भगवन्त पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. के श्रीचरणों में पुन्नमल्ली में वर-वधू के रूप में मांगलिक श्रवण करने वाले दम्पती ने ४६वें वर्ष में पुन्नमल्ली में गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा से आजीवन शीलव्रत लेकर दृढ़ इच्छाशक्ति, संयम एवं अनूठी गुरुभक्ति का परिचय दिया है। विगत पाँच वर्षों से सुराना दम्पती अभ्यास के रूप में शीलव्रत का पालन करते आ रहे हैं।

जैन-साहित्य में वर्णित सौतिया डाह

डॉ. हुकमचन्द जैन

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहकर अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर मानव से दानव एवं रक्षक से भक्षक बन जाता है। उसके जीवन मूल्यों का ह्रास होने लगता है। प्राचीन काल से लेकर आज तक लोग दूसरों की उन्नति देखकर ईर्ष्या, द्वेष से जल उठते हैं। प्राचीन काल में भी राजा की अनेक पत्नियाँ होने के कारण वे अपनी सौत से ईर्ष्या करती थीं। जहाँ भी बहु-विवाह प्रथा है वहाँ यह सौतिया डाह (द्वेष, दाह) देखने को मिलता है।

जैन साहित्य में आगम, टीका, चूर्णि एवं व्याख्या-साहित्य में स्वतन्त्र कथा-ग्रन्थों में तथा अपभ्रंश एवं राजस्थानी ग्रन्थों में सौतिया डाह के उल्लेख मिलते हैं।

विपाक-सूत्र में बताया है कि राजा सिंहसेन के अंतःपुर में अनेक रानियाँ थीं, किन्तु राजा को श्यामा सबसे अधिक प्रिय थी। अन्य रानियों को उससे डाह थी। श्यामा की हत्या का षड्यन्त्र करने पर भी उन्हें सफलता नहीं मिली तब श्यामा ने एक कूटगार शाला बनवा कर भोजन आदि का निमन्त्रण देकर उसमें आग लगवा कर उन्हें मरवा दिया।[१]

उपासकदशांग में राजगृह नगर के महाशतक गृहपति की रेवती आदि तेरह पत्नियाँ थीं। रेवती अपने पति की प्रिय बनना चाहती थी, अतएव उसने विष आदि के प्रयोग से सौतों को मरवा डाला।[२] **उत्तराध्ययन टीका** में भी बताया है कि राजा जितशत्रु के एक से बढ़कर एक रानियाँ थीं, फिर भी उसने चित्रकार की कन्या कनकमती की बुद्धिमत्ता से प्रभावित होकर विवाह कर लिया। राजा बारी-बारी से अंतःपुर की रानियों के साथ अपना समय बिताता था। कनकमती की बारी आने पर उसने आख्यानक आदि से इतना मन्त्रमुग्ध कर लिया कि वह छह महीने तक उसी के पास रहा। तब अन्य सपत्नियों को ईर्ष्या हुई और राजा से जादू-टोने की झूठी शिकायत की। जाँच में गलत साबित होने पर राजा ने कनकमती को ही पटरानी बना दिया।[३]

अंतःपुर के कलह के परिणामस्वरूप कभी-कभी रानियाँ कोपगृह में भी जाकर बैठ जाती थीं।[४] इसी तरह का आख्यान जैन रामायण में है जहाँ

राम को राज्य-पाट देने पर कैकेयी कोपगृह में जाकर बैठ जाती है और भरत के लिये राज्याभिषेक की माँग करती हैं।[५] अंजना अपने पूर्वभव में सौत की ईर्ष्या के कारण जिनदेव का अनादर करती है। फलतः कर्मबंध के कारण उसे पवनंजय से दूर रहना पड़ता है।[६]

अपभ्रंश साहित्य में मैनासुन्दरी कथा में राजा पहुपाल की दो पुत्रियाँ थीं- सुरसुन्दरी एवं मैनासुन्दरी। सुरसुन्दरी, मैनासुन्दरी से बहुत ईर्ष्या करती थी। मैनासुन्दरी का विवाह कोढ़ी से होने पर वह बहुत प्रसन्न हुई है।[७] पत्नियों के साथ पुत्रियों के डाह के उदाहरण भी मिलते हैं। धनपाल की भविष्यदत्त कथा में सरूपा कमलश्री से ईर्ष्यावश उसके पुत्र भविष्यदत्त को मारने के लिए कहती है।[८] कभी-कभी सौत को मद्य पिलाने के उदाहरण भी मिलते हैं। आदिपुराण में उल्लेख है कि एक सौत ने डाहवश अपनी अन्य सौत को अत्यधिक मद्य इसलिए पिला दिया ताकि सौत आराम से सोई रहे और वह अपना कार्य आराम से कर सके।[९] **पउमचरियं** में अंजना-पवनंजय की कथा में राजा की एक पत्नी के संतान नहीं होने के कारण अपने सौत के पुत्र को उसने कई दिनों तक छुपा दिया और पूछने पर आनाकानी की, परिणामस्वरूप कर्मबंध हुए और मरकर नरकगामी हुई।[१०] आचार्य नेमिचन्द्रसूरि कृत रयणचूडरायचरियं में देवश्री और नागश्री की कथा है, जिसमें नागश्री के संतान नहीं होने के कारण सेठ देवश्री से विवाह कर लेता है। नागश्री में ईर्ष्या उत्पन्न होती है वह सोचती है यह मेरे स्त्रीत्व का अपमान है। तब वह अपनी सखी को संबोधित करती हुई कहती है- "मैं मर जाऊँ तो ठीक, गर्भ नष्ट हो जाये तो ठीक, हाथी से कुचल दिया जाए तो ठीक, मेरी दोनों आँखें फूट जाए तो सखी वे भी ठीक, किन्तु अन्य नारियों के साथ अपने पति का रमण ठीक नहीं। दरिद्र, अनाथ, कृश शरीर वाला, रोगातुर, कुरूप, निर्गुण, भिक्षा माँगता हुआ दूल्हा ठीक है, किन्तु सौतयुक्त राजा भी पति के रूप में मिले तो वह ठीक नहीं है।"[११] उसने किसी उपाय से सौत के ऊपर द्वेष करने वाला योग पानी में मिलाकर पिला दिया। परिणामस्वरूप राजा पुनः नागश्री को चाहने लगा। कर्मबंध के कारण नागश्री मरकर अनेक योनियों में भयंकर कष्ट भोगती रही।[१२] वास्तव में कर्मों की स्थिति विचित्र होती है। इसी तरह संस्कृत जैन साहित्य में रुक्मिणी और

सत्यभामा के सौतिया डाह का वर्णन है। सत्यभामा रुक्मिणी के पास संदेश भेजती है- यदि तुम्हारे पुत्र का विवाह पहले हो तो तुम मेरे केशों को कटवाकर अपने पुत्र के पैर के नीचे दबा देना और यदि मेरे पुत्र का विवाह पहले होगा तो तुम्हारे केश काटकर मेरे पुत्र के पैर के नीचे दबा दिये जायेंगे। यह शर्त बलराम को साक्षी रखकर करती है।[१३] सौत डाह का फल यह होता है कि प्रद्युम्न अपनी माँ को प्रसन्न करने के लिए सत्यभामा को नाना प्रकार से तंग करता है।

बाद में राजस्थानी साहित्य भी इस डाह से वंचित नहीं रहा है। ढोला-मारू रा दोहा में राजा अन्य सौत को लेने के लिए जाता है तब रानी ईर्ष्यावश एक प्रतिज्ञा द्वारा उसे रोकने का प्रयास करती है, फिर भी राजा उसे सोई हुई छोड़कर चला जाता है।[१४]

इस प्रकार उपर्युक्त उदाहरणों, दृष्टान्तों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि राजा एवं बड़े लोग बहु-विवाह करते थे। वहाँ अधिकतर सौतिया डाह होता था, जिससे सौत अपनी अन्य सौत को कष्ट देती थी। उस डाह के भयंकर परिणाम दृष्टिगत होते थे। जैन साहित्य के अनुसार उसके कर्म अनेक जन्मों में भोगने पड़ते हैं जैसे कि पउमचरियं में वर्णित अंजनासुन्दरी की कथा एवं रयणचूडरायचरियं में देवश्री एवं नागश्री की कथा है, जिसमें नागश्री को अनेक योनियों तक भी कर्मबंध के भयंकर परिणाम भोगने पड़े।

आज के युग में भले ही सौतिया डाह न हो, किन्तु भाई-भाई में, देवरानी-जेठानी में, बहनों में, व्यापारियों में डाह दिखाई देता है। जहाँ डाह है वहाँ जीवन जीने की राह आसान नहीं है। डाह जीवनमूल्यों एवं मानवीय गुणों को नष्ट कर देती है। अगले जन्म की बात तो बहुत दूर, इसी जन्म में कष्ट भोगना पड़ता है। अतः ईर्ष्या, द्वेष, कलह, छल-कपट, दाँव-पेच, हिंसा, असत्य आदि अवगुणों से दूर रहकर जीवन का सर्वांगीण विकास करना चाहिए, तभी जीवन सार्थक है। कार्य करने के पूर्व उसके परिणाम को अवश्य सोचना चाहिए, यही सफल जीवन का मूल मन्त्र है।

संदर्भ

१. विपाक सूत्र, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, पृ. ५१-५२

२. उपासकदशांग, पृ. ६२

३. उत्तराध्ययन टीका, पृ. १४१-अ

४. (अ) जगदीशचन्द्र जैन, जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज,पृ. ५७-५८

(ब) आवश्यक चूर्णि पृ. २३०

५. पउमचरियं, पृ. १७० गाथा नं. ६०-७०

६. (अ) वही, पृ. १७०

(ब) डॉ. राजेन्द्र मुनि, सत्यशील की अमर साधिकाएँ, पृ. ३६

७. देवेन्द्रकुमार शास्त्री, भविष्यदत्तकहा तथा अपभ्रंश कथा का साहित्य, पृ. ३०३

८. वही, पृ. ६६

९. (अ) नेमिचन्द्र शास्त्री, आदि पुराण में प्रतिपादित भारत, पृ. १८१

(ब) आदि पुराण, ४४/२८१

१०. पउमचरियं, पृ. १७०

११. डॉ. हुकमचन्द जैन रयणचूडरायचरियं का समालोचनात्मक संपादन एवं अध्ययन पृष्ठ (८०) -२ (लेखक का अप्रकाशित शोध प्रबन्ध)

१२. वही, पृ. (८०) -२

१३. (अ) नेमिचन्द्र शास्त्री, संस्कृत काव्य के विकास में जैन कवियों का योगदान, पृ. ५४८, अनुच्छेद ३

(ब) प्रथमसूनु विवाहसमुत्सवो यदि भवेस्तव रुक्मिणि पुण्यतः।

कुटिलकोमलनीलशिरोरुहान् पदतले तनयस्य निजान् दधे।।-प्रद्युम्न,पाठ ८

१४. देखिये, ढोला मारु रा दोहा

—सह आचार्य, जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

जिनवाणी

जिनवाणी ही सार है,
बाकी सब बेकार है।
सच्चे मन से धार लो,
निश्चय बेड़ा पार है।।

जिनवाणी की महिमा अपरम्पार है,
जो धारे हृदय में उसका बेड़ा पार है।
मानव भव पाने का तो यही सार है,
जिसने नहीं स्वीकारी उसका जीवन बेकार है।।

-ओमप्रकाश जैन, परमार

सर्वांगीण विकास का साधन : सामायिक व्रत

श्री प्रेमचन्द कोठारी

प्रत्येक प्राणी अपना सर्वांगीण विकास चाहता है, वह अपने जीवन को सदानन्दी एवं अखिलानन्दी बनाना चाहता है। शासनपति श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने अनन्त अव्याबाध सुख प्राप्त करने के लिए उत्तराध्ययन सूत्र में अध्ययन २८ गाथा ३ में फरमाया है-

णाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
एयं मग्ग-मणुपत्ता, जीवा गच्छंति सुग्गइं।।

अर्थात् ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप यह मोक्ष का मार्ग है। इस मार्ग का आचरण करके जीव मोक्ष प्राप्त करते हैं। उक्त गाथा में ज्ञान व दर्शन विचार रूप हैं तथा चारित्र व तप आचार रूप हैं। विचारों में या दृष्टि में सम्यक्त्व आने पर अनादि काल के मिथ्यात्व से निकल कर साधक चौथे गुणस्थान को प्राप्त करता है, घोर अन्धकार से निकलकर प्रकाश को प्राप्त करता है। इस गुणस्थान के प्राप्त होने पर साधक को वीतराग वाणी पर विश्वास होता है, जीव-अजीव आदि नव तत्त्व के वास्तविक स्वरूप का भान होता है, कृत्य-अकृत्य का बोध होता है तथा अव्याबाध सुख प्राप्त करने के लिए अन्दर से उत्कण्ठा (जिज्ञासा) जागृत होती है, संसार खारा एवं मायाजाल सा दिखाई देने लगता है। चौथे गुणस्थान से आगे बढ़ने के लिए आचरण (चारित्र, तप)की आवश्यकता होती है। पाँचवें गुणस्थान में श्रावकाचार की पालना आरम्भ हो जाती है। श्रावक एक व्रत (प्रतिज्ञा) से लेकर बारह व्रतों को जीवन में अपनी क्षमता अनुसार स्वीकार करता है। इन बारह व्रतों में ५ अणुव्रत (साधु की अपेक्षा छोटे व्रत), ३ गुणव्रत (गुण अर्थात् विशेषता, अणुव्रतों के पालन में सहायक व उपकारक रूप), ४ शिक्षाव्रत (शिक्षा अर्थात् शिक्षण, जिनके द्वारा जीवन शिक्षित हो) रूप हैं। चार शिक्षाव्रतों में प्रथम व बारह व्रतों में नवम व्रत सामायिक व्रत है। बारह व्रतों में सामायिक व्रत की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका है। सामायिक व्रत के लिए आगमकारों एवं पूर्वाचार्यों ने अनेक गुणगाथाएँ गायी हैं, उनमें से कुछ प्रेरणा रूप आगे दी जा रही है-

सावद्यकर्ममुक्तस्य दुर्ध्यानरहितस्य च।
समभावो मुहूर्तं तद्-व्रतं सामायिकं स्मृतम्।।

-धर्मसंग्रह अधिकार २ श्लोक ३७

अर्थात् आर्त्त, रौद्र आदि दुर्ध्यानों से रहित तथा सावद्य कर्मों (कार्यों) से मुक्त होकर मुहूर्त भर (२ घड़ी अर्थात् ४८ मिनट) तक जो समभाव की आराधना की जाती है- वह सामायिक व्रत कहलाता है।

सम अर्थात् रागद्वेष रहित पुरुष की प्रतिक्षण कर्म-निर्जरा से होने वाली अपूर्व शुद्धि सामायिक है। सम अर्थात् ज्ञान, दर्शन, चारित्र की प्राप्ति सामायिक है।

सामाइयाइया वा वयजीवणिकाय भावणा पढमं।
एसो धम्मोवाओ जिणेहिं सव्वेहिं उवइट्ठो।।

-आवश्यक निर्युक्ति, २७१

केवलज्ञान प्राप्त होने के बाद सभी जिनेश्वर सर्वप्रथम जनता को महान् सामायिक व्रत साधना का उपदेश देते हैं। स्वयं तीर्थंकर भगवान् दीक्षा लेते समय सर्वप्रथम सामायिक साधना की ही प्रतिज्ञा करते हैं- **"सव्वं मे अकरणिज्जं पावकम्मं ति कट्टु सामाइयं चरित्तं पडिवज्जइ।"**

सामायिक को चौदह पूर्व का सारभूत बतलाते हुए आचार्य जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण कहते हैं- **"सामाइयं संखेवो चोद्दसपुव्वत्थपिंडोत्ति।"**

जैन जगत् के विद्वान् श्री यशोविजय जी सामायिक को सम्पूर्ण द्वादशांग रूप जिनवाणी का सार बताते हुए कहते हैं- **"सकल-द्वादशांगोपनिषद्भूतं सामायिकं सूत्रवत्"**

सूत्रकृतांग चूर्णि १-२-२ में बताया है कि समभाव ही सामायिक है- **"समभावः सामाइयम्।"**

पंचास्तिकाय गाथा १०७ में बताया है कि समभाव (सामायिक) ही चारित्र है-**"चरित्तं समभावो।"**

उत्तराध्ययन सूत्र-२९.८ में भगवान ने फरमाया है कि सामायिक की साधना से पापकारी प्रवृत्तियों का निरोध हो जाता है- **"सामाइएणं सावज्ज-जोगविरइं जणयइ।"**

'सामायिक प्रवचन' के पृष्ठ ७८ में बताया है कि चाहे कोई कितना ही

तप तपे, जप जपे अथवा मुनिवेश धारण कर स्थूल क्रियाकाण्ड रूप चारित्र पाले, परन्तु समता भाव रूप सामायिक के बिना न किसी का मोक्ष हुआ है और न होगा-

किं तत्तेण तवेणं, किं जवेणं किं चरित्तेणं।
सामायाइं विणु मुक्खो, न हु हुओ कहवि न हु होई।।

वास्तव में देखा जाए तो सब प्रकार की विषमताएँ चाहे वे भौतिक हों, आर्थिक हों, पारिवारिक हों, सामाजिक हों अथवा अन्यविध हों, सब विषमताओं का निवारण कर समभाव प्रकट कराने वाली एवं शांति-समाधिदात्री अचूक साधना 'सामायिक' है। सामायिक में मर्यादित समय के लिए बारह व्रतों का समावेश हो जाता है। यह कहा जाए तो आश्चर्य नहीं कि सामायिक साधना गागर में सागर का समावेश कराने वाली सरल प्रक्रिया है। सामायिक की साधना कल्पवृक्ष, कामधेनु व चिंतामणि से भी बढ़कर है, क्योंकि सामायिक-साधना से कल्पना, कामना व चिन्तन के बिना भी अनन्त अव्याबाध सुख प्राप्त होता है।

पूर्वाचार्यों ने सामायिक के दो भेद किये हैं- व्यवहार व निश्चय। प्रतिलेखित एकान्त स्थान में आसन बिछाकर, प्रतिलेखित सादा और बिना सिला दुपट्टा, चोलपट्टा पहनकर (बहिनों को विवशता से सिला पहनना पड़ता है, भाइयों को भी चोलपट्टा सिला पहनना पड़ता है) सविधि सामायिक लेकर एक मुहूर्त या इससे अधिक समय के लिये सांसारिक झंझटों से अलग होकर, सावद्य व्यापारों का त्याग कर आत्म-चिन्तन, स्वाध्याय, ध्यान आदि करना व्यवहार से सामायिक है।

निश्चय से सामायिक का कोई प्रकार नहीं है, क्योंकि भगवती सूत्र शतक १ उद्देशक ९ में आगमकारों ने फरमाया है- आत्मा ही सामायिक (समत्व भाव) है और आत्मा ही सामायिक का अर्थ (विशुद्धि) है। अर्थात् बाहर से हटकर अन्दर में आत्मा द्वारा आत्मा में स्थिर हो जाना ही सामायिक है। यही सामायिक का अंतिम लक्ष्य है।

अन्दर आवे अन्दर भी पावे बाहर भी पावे।
बाहर जावे, अन्दर से भी जावे, बाहर से भी जावे।।

(क्रमशः)

-लुहारों की गली, बूँदी (राज.)

जम्बूकुमार

जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- **जम्बूकुमार ब्रह्मचर्य का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए प्रभव को समझाते हैं कि जो जैसा कर्म करता है, उसको तदनुरूप फल की प्राप्ति होती है। जम्बूस्वामी अपने कथन की पुष्टि में महिषदत्त का घटना प्रसंग सुनाते हैं, जो अपने पिता की अन्तिम इच्छा के अनुरूप श्राद्ध पक्ष में भैंसे की बलि देता है। इसी संदर्भ में माँस-भक्षण के निषेध का भी निरूपण हुआ है।**

माँस रक्त से बनता है। रक्त को बहता देखकर सर्वसाधारण को घृणा होती है। उस घृणित पदार्थ से उत्पन्न हुए माँस का भक्षण करना कितना घृणास्पद है?

माँस शरीर को बलवान नहीं बनाता। वह शरीर में तामसिकता पैदा करता है और एक प्रकार की क्रूरता उत्पन्न करता है। माँसाहारी पुरुष फलाहारी का सामना करने में सर्वथा असमर्थ रहता है। माँसाहारी का शरीर फूला हुआ होता है और फलाहारी का शरीर सुदृढ और ठोस होता है। यदि किसी पशु को कोई बीमारी होती है तो वह उसका माँस खाने वाले पर फौरन ही अपना प्रभाव डालती है। इससे माँसाहारी कभी-कभी घोर व्याधि के पात्र बन जाते हैं और कभी तो जीवन से ही हाथ धो बैठते हैं। परलोक में जाने पर तो उन्हें ऐसी-ऐसी यातनाएँ भोगनी पड़ती हैं कि जिनकी कोई सीमा नहीं है। उन नारकीय यातनाओं का वर्णन करना भी असंभव है।

फिर भी कुसंस्कारों के कारण व्यापारी ने भैंसा मारने की अभिलाषा प्रकट की और अपना अन्तिम समय भी बिगाड़ लिया। पुत्र को यह आदेश देकर वह चल बसा। वह मरकर संयोगवश भैंसे के रूप में उत्पन्न हुआ। इधर उसकी माता भी वृद्धावस्था के कारण परलोक चली गई। उसने अपने दुष्कर्मों के फलस्वरूप कुतिया के रूप में जन्म धारण किया।

महिलाओं का चरित्र एक रहस्यमयी समस्या है। मायाचार उनका स्वभावसिद्ध अवगुण है। अपने पति से रंच मात्र भी प्रेम न होने पर भी वह दिखावटी व्यवहार से अपने को पतिव्रता साबित करती है। बड़े-बड़े युद्धों में

शक्तिशाली सेना को क्षण भर में पराजित कर देने की क्षमता रखने वाले शूरवीर, सेनापति और अपने प्रखर पांडित्य से विविध शास्त्रों के गहन से गहन तत्त्वों का विवेचन करने वाले विद्वान् और समस्त संसार में अपने प्रताप की ध्वजा फहराने वाले यशस्वी, तेजस्वी, ओजस्वी सम्राट् भी महिला के मायाजाल में फँस कर उल्लू बन जाते हैं। शूरवीरों की शूरवीरता, विद्वानों की विद्वत्ता और सम्राटों की धाक महिला के सामने पानी भरती है। महाराज भर्तृहरि के असीम अनुराग का दुरुपयोग करने वाली रानी की कथा कौन नहीं जानता? न्यायशील दशरथ के प्राण लेने वाली कैकेयी की कहानी किसकी जबान पर नहीं है? रावण जैसे प्रचंड योद्धा का सर्वनाश करने वाली और सोने की लंका को धूल में मिलाने वाली दुराचारिणी शूर्पणखा को कौन भूल सकता है? इस प्रकार इतिहास में सैकडों उदाहरण मौजूद हैं जिनसे महिला के चरित्र पर प्रकाश पड़ता है। फिर भी पुरुष अपना विवेक-विज्ञान विसार कर स्त्री के प्रबल मोह में पड़ा रहता है और कभी-कभी तो कुत्ते की तरह अपमान, फटकार और दुत्कार सहन करके भी पीछे-पीछे लगा रहता है।

महिषदत्त की बात याद आते ही महिलाओं के विश्वासघात का स्मरण हो आता है। बेचारा महिषदत्त अपनी पत्नी को प्राणों के समान चाहता था। वह उसे पतिपरायण स्त्री समझ कर उस पर पूर्ण प्रीति रखता था। गृहस्थी का सारा भार उसने उसे सौंप दिया था और स्वयं बाहर काम-काज करता था। मगर महिषदत्त की पत्नी अत्यंत मायावी और दुराचारिणी थी। एक दिन वह अपने जार के साथ घर में आमोद-प्रमोद कर रही थी कि संयोगवश महिषदत्त घर आ पहुँचा। उसने यह भोगलीला देखी तो क्रोध का ठिकाना न रहा। तलवार उठा कर जार के दो टुकड़े कर दिए।

यह अचानक गुड़-गोबर होते देख महिषदत्त की पत्नी हाय-हाय कर रोने लगी और अपने दुराचार के लिए बार-बार क्षमायाचना करने लगी। भविष्य में भूल कर भी कुपथ में पैर न देने की प्रतिज्ञा करने पर महिषदत्त ने उसे जीवित रहने दिया।

वह दुराचारी पुरुष मर कर महिषदत की पत्नी के गर्भ से उसके पुत्र के रूप में उत्पन्न हुआ। कर्म-योग बड़ा बलवान है। संसार के सम्बंध कैसे अनोखे हैं?

कहा भी है :-

एक जन्म की पुत्री मरकर है पत्नी बन जाती,
फिर आगामी भव में माता बनकर पैर पुजाती।
पिता, पुत्र के रूप जन्मता, बैरी बनता भाई,
पुत्र त्यागकर देह कभी बन जाता सगा जमाई।।

कल तक जो महिषदत्त का घोर शत्रु था, जिसे उसने मौत के घाट उतार कर संतोष माना था, आज वही जार उसी के लाडले लाल का रूप धारण कर आ गया। वह महिषदत्त की आँखों का तारा बन गया, हृदय का हार बन गया और बुढ़ापे की लकड़ी कहलाने लगा। महिषदत्त का उस बालक से अत्यंत स्नेह था। वह जी-जान से उसे चाहता था और उसकी रत्ती भर पीड़ा को अपने सिर पर आया हुआ दुःख का पहाड़ समझता था।

कितना मिथ्या है संसार, कैसा असार-तथ्यहीन है। अरे मोही जीव! आँखे खोल! देख अपने विवेक का क्यों दिवाला निकाल रहा है। शत्रु-मित्र की कल्पना यहाँ कितनी थोथी है? कौन-किसका शत्रु है? कौन किसका मित्र है? कौन किसका सगा है और कौन सम्बंधी है ?

है संसार सराय जहाँ पर पथिक आय जुट जाते।
लेकर टुक विश्राम राह में अपनी-अपनी जाते।।

कुछ दिन व्यतीत हो जाने पर महिषदत्त के पिता की मृत्यु तिथि आ गई। उस दिन अपने पिता के आदेशानुसार उसने मारने के लिए भैंसा खरीदा और संयोगवश वह भैंसा उसके पिता का जीव ही था, जो मरकर भैंसे के रूप में जन्मा था।

महिषदत्त ने भैंसे का वध करवाकर भोजन सामग्री तैयार करवाई। सगे-सम्बंधी और जाति-भाई भोजन करने के लिए आ पहुँचे। भैंसे के माँस को पका डाला गया था, पर उसकी हड्डियाँ एक ओर वहीं पड़ी थी। हड्डियों को चाटने के लिए एक कुतिया उनके नजदीक बार-बार आती थी और महिषदत्त उसे बार-बार ताड़ देता था। फिर भी जब वह कुतिया न मानी और फिर आने लगी तो महिषदत्त को तीव्र क्रोध आया और एक लट्ठ उठा कर उसने कुतिया की पीठ पर दे मारा। कुतिया, चीखती-चिल्लाती हुई भागी।

इसी समय एक दिव्य ज्ञानी योगी वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने यह रोमांचकारिणी घटना अपने ज्ञान से जान कर कहा- "अरे महिषदत्त! तुमने आज अत्यंत पैशाचिक कृत्य किया है। तुमने भैंसे के रूप में अपने इसी जन्म के पिता

का वध किया है और कुतिया के रूप में जन्मी हुई अपनी जननी-माता की लट्ठ **मार कर कमर** तोड़ दी है। यही नहीं जिसका तूने अपने हाथों से वध किया था, **उसी जानी दुश्मन** जार को पुत्र के रूप में पाकर अपने को निहाल समझता है। **हाय! कैसी रिश्ते**दारी है? माता-पिता का वध और ताड़न तथा दुश्मन का इस **प्रकार लालन?** अविवेकी जीव! इस अनर्थ की कहीं सीमा है?

योगी की बात सुन कर महिषदत्त चौंक उठा। बोला- "योगी जन सर्वथा **निस्पृह होते हैं।** उन्हें असत्य भाषण से कोई प्रयोजन नहीं होता। पर आप मुझे **नीचा दिखाने के** लिए असत्य क्यों बोल रहे हैं? मैंने आपका क्या बिगाड़ा है?"

योगी कहने लगा-"महिषदत्त! मैं असत्य भाषण नहीं कर रहा हूँ। मेरा **कथन सर्वथा सत्य** है। प्रमाण देने की आवश्यकता हो तो बताओ-तुम्हारे पिता ने **मरते समय पाडा** मार कर श्राद्ध करने का आदेश दिया था या नहीं? अपनी भावना **के अनुसार वह स्वयं** ही पाडा हुआ है। और बताऊँ? पर रहने दो। इससे तुम्हारी **अप्रतिष्ठा होगी।** फिर भी बताये देता हूँ कि तुम्हारे प्रेम का प्रतिद्वन्द्वी पुरुष, जो **तुम्हारे ही हाथों** यमलोक पहुँचा था, वही यह बालक है। कुतिया तुम्हारी माता ही **है। विश्वास न** हो तो जाकर देख लो। जहाँ वह बैठती है वहाँ खोद कर देखना **मोहरों से भरा** हुआ घड़ा तुम्हें मिलेगा।"

महिषदत्त को मुनिराज के वचनों की सत्यता में जरा भी संदेह न रहा। जो **महापुरुष मोहरों** का घड़ा पड़ा हुआ जानकर भी स्वयं ग्रहण न करके मुझे बता रहे **हैं," क्योंकि मैं** उस घड़े का नियमानुसार अधिकारी हूँ, जो मेरे घर के गुप्त भेदों को **इस प्रकार जानता** है जैसे यह सब उसी के सामने की घटना हो, वह पुरुष सचमुच **धन्य है। ऐसे सत्य**पुरुष कभी मिथ्या-भाषण नहीं करते। इस प्रकार सोचकर **महिषदत्त मुनिराज** के चरणों पर गिर पड़ा। वह गिड़गिड़ा कर बोला-"भगवन्! **पतित पावन! मैं** अतिशय पतित पापात्मा हूँ। पापों के पंक में पड़ा हुआ पामर **प्राणी हूँ, कृपा** कर मेरा उद्धार कीजिए। मुझसे यह घोरातिघोर अनर्थ अनजान में **बन गया है। भविष्य** में मैं इस प्रकार की हिंसा नहीं करूँगा और गृहस्थ के योग्य **धर्म का यथाशक्ति** पालन करके अपना कल्याण करूँगा। मैं इस भ्रम में था कि **श्राद्ध करने से** पितर प्रसन्न होते हैं, पर अब प्रत्यक्ष देख रहा हूँ कि मेरे पिता के **श्राद्ध में उन्हीं का** वध हुआ है। यह सब स्वार्थी साधुओं द्वारा फैलाया हुआ **मिथ्यात्व है। मैं** इस मूर्खता का सदा के लिए त्याग करता हूँ।" **(क्रमशः)**

स्वाध्याय के समय ध्यातव्य बिन्दु

कु. अंजना बैराठी

स्वाध्याय करते समय निम्नांकित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

१. **एकाग्रता-** स्वाध्याय में एकाग्रता होना अतीव आवश्यक है। जब तक मानसिक चंचलता रहेगी तब तक स्वाध्याय का आनंद नहीं आ सकता और न श्रुत के रहस्य को हृदयंगम किया जा सकता है।

२. **नैरन्तर्य-** स्वाध्याय प्रतिदिन नियम से करना चाहिए। जहाँ तक संभव हो एक ही ग्रन्थ का आद्योपान्त स्वाध्याय करके नया ग्रन्थ प्रारम्भ करना चाहिए।

३. **विषयोपरति-** स्वाध्याय हेतु ग्रंथों का चयन करते समय सदा यह लक्ष्य रखना चाहिये कि हम विषय-वासना से ऊपर उठें, रागद्वेष, क्रोधादि कषायों से बचें। इसके लिये ऐसे ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिये जिनके पढ़ने से विषय-विकार और कषायों की ओर प्रवृत्ति न हो।

४. **सकारात्मक भाव-** स्वाध्याय करते समय साधक को यह दृढ़ आत्मविश्वास होना चाहिए कि मेरी अन्तरात्मा में अपूर्व प्रकाश फैल रहा है। मेरा शुभ संकल्प दृढ़ हो रहा है। नकारात्मक से सकारात्मक भाव की ओर मेरे कदम बढ़ रहे हैं। ऐसा विश्वास करके ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए।

५. **एकान्त स्थान-** स्वाध्याय के लिये एकांत, कोलाहल से रहित, स्वच्छ साफ स्थान होना चाहिये। प्रकाश की समुचित व्यवस्था होनी चाहिये।

६. **विनय का आचरण-** स्वाध्याय करते समय विनयभाव पूर्वक स्वाध्याय प्रारम्भ करें।

७. **जिज्ञासा भाव-** स्वाध्याय करते समय शास्त्र के विशेष बिन्दु नोट करना चाहिये तथा जो बातें समझ में न आ रही हों उन्हें शंका समाधान के लिये लिख लेना चाहिये। जब किन्हीं ज्ञानीजन का समागम प्राप्त हो तब समाधान प्राप्त कर लेना चाहिये।

-शोधछात्रा, जैन अनुशीलन केन्द्र
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

दशवैकालिक सूत्र का जानें हम मर्म(४)

प्रश्न ७. संयोग छूटने के पूर्व साधक को क्या करना होता है? इसके छूटने से क्या लाभ हैं?

उत्तर- दशवैकालिक सूत्र के चतुर्थ अध्ययन की १०वीं गाथा- 'पढमं नाणं तओ दया.....' से लेकर १७वीं गाथा-'जया णिव्विंदए भोए.....' तक संयोग छूटने से पूर्व साधक को क्या-क्या करना पड़ता है, इसका विवेचन है। यथा- १. सबसे पहले जीवाजीव का ज्ञान २. सर्व जीवों की बहुविध गतियों का ज्ञान ३. पुण्य, पाप तथा बंध-मोक्ष का ज्ञान ४. दैविक और मानुषिक भोगों से विरक्ति ५. बाह्य और आभ्यन्तर संयोगों का परित्याग।१८वीं गाथा- 'जया चयइ संजोगं....' से लेकर २५वीं गाथा- 'जया कम्मं खवित्ताणं....' तक संयोग के छूटने से होने वाले लाभों का निरूपण है। यथा- १. मुंडित होकर अणगार धर्म में प्रव्रज्या २. उत्कृष्ट संवर रूप अनुत्तर धर्म का स्पर्श ३. अबोधि कृत कर्मो की निर्जरा ४. केवलज्ञान-केवलदर्शन की प्राप्ति ५. जिनत्व, सर्वज्ञता और लोकालोक ज्ञातृत्व की प्राप्ति ६ योगों का निरोध कर शैलेशी अवस्था की प्राप्ति ७. सर्वकर्मक्षय करके कर्ममुक्त सिद्धि की प्राप्ति ८. लोकाग्र में स्थित होकर शाश्वत सिद्धत्व की प्राप्ति।

भगवती सूत्र में 'सवणे णाणे विण्णाणे' का अधिकार चलता है। उसमें भी श्रवण से लेकर सिद्धि तक पूर्वोक्त क्रम से ही आत्मविकास का क्रम बताया गया है। संयोग दो प्रकार का है- १. प्रशस्त २. अप्रशस्त। इनमें से साधक अप्रशस्त संयोगों को छोड़ता है तथा देव, गुरु, धर्म, संघ और साधु वेश जैसे प्रशस्त संयोगों को अमुक मर्यादा तक ग्रहण करता है। किन्तु जब तक बाह्याभ्यन्तर संयोग नहीं छूटता, परिधि पर नहीं केन्द्र पर परिश्रम नहीं होता, परिस्थिति का नहीं, जब तक परिणामों का परिवर्तन नहीं होता तब तक मोक्ष पद की साक्षात् साधिका साधुवृत्ति को वह ग्रहण नहीं कर पाता। उत्कृष्ट संवर धर्म का स्पर्श करता हुआ छठे-सातवें गुणस्थान से बारहवें यथास्थान गुणस्थान में पहुँच जाता है, करना होने में बदल जाता है, तब अज्ञान और कलुषित भाव से संचित घाती कर्म की रज को धुनकर

अलग कर देता है। आगे बढ़ता हुआ सबसे पहले मन का, पश्चात् वचन का और अन्त में काया के योग का निरोध कर देता है। आत्मा शैलेशी अवस्थापन्न होकर सर्वथा निष्काम बन जाता है। जब केवली भगवान् शैलेशी अवस्था को प्राप्त करके सर्वथा अयोगी हो जाते हैं, तब उनके अघाती चतुष्टय कर्म का सर्वथा क्षय हो जाता है। ऐसी स्थिति में वे सर्वथा निःरज (कर्मरज रहित) होकर मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं। सिद्ध गति में पहुँचने के बाद वे लोक के मस्तक पर अर्थात् ऊर्ध्वलोक के अग्रभाग पर जाकर प्रतिष्ठित हो विदेहमुक्त सिद्ध हो जाते हैं।

प्रश्न ८. सुगति सुलभ करने के लिए क्या-क्या विवेक रखना चाहिए?

उत्तर- दशवैकालिक सूत्र के चतुर्थ अध्ययन में पाँच उपाय बताए हैं -

१. तवोगुण-पहाणस्स २. उज्जुमइ ३. खंति ४. संजमरयस्स ५. परिस्सहे जिणंतस्स सुलहा सोग्गई तारिसगस्स।

(१) **तपोगुण प्रधान-** जिसमें तपस्या का मुख्य गुण हो अर्थात् जो समय आने पर यथालाभ में संतोष या अप्राप्ति में भी संतोष करके तपश्चरण के लिए शांतिपूर्वक उद्यत रहता है। निर्युक्ति में कहा है-

तवो बारसविहो गुणा णाण-दंसण-चरित्ताणि,
तवो गुणा य पहाणा जस्स सो तवगुणप्पहाणो तस्स।।

(२) **ऋजुमति-** जिसकी मति सरल हो, जो मायावी और कपटी न हो, निश्चल हो, या जिसकी बुद्धि मोक्ष मार्ग में प्रवृत्त हो-

उज्जुयामति उज्जुमति अमाई।

(३) **क्षान्ति परायण-** क्षमा और सहिष्णुता ये दोनों गुण जिसमें हों, उसका कषाय मन्द होगा, सहनशक्ति विकसित होने के कारण वह रत्नत्रय की साधना उत्साहपूर्वक करेगा।

खंति अकोहणे, खमाए अदोसो।।

(४) **संयमरत-** १७ प्रकार के संयम में लीन। 'संजम सत्तरस्स विहे रत्तो।'

(५) **परीषह विजयी-** धर्म-पालन के लिए मोक्षमार्ग से च्युत न होकर समभावपूर्वक निर्जरा के लिए कष्ट सहन करना परीषह है। 'परिसहे बावीसं जिणंतस्स हु दिट्ठगुणस्स सुलभिता सोगति तारिस्सगस्स।

१. सुगति प्राप्ति के उपर्युक्त पाँच गुण हैं। इनके विवेक से सद्गति प्राप्त हो सकती है।

२. पिछली अवस्था में प्रव्रजित होने पर भी सुगति की प्राप्ति हो सकती है। वृद्धावस्था में चारित्र धर्म अंगीकार करने पर भी शीघ्र देवलोक रूप सुगति (सुगति के दो अर्थ- सिद्ध गति या मनुष्य व देव गति) प्राप्त की जा सकती है।

३. मुहादाई व मुहाजीवी दोनों ही सद्गति को प्राप्त करते हैं। 'दो वि गच्छंति सोग्गइं' कामना और इच्छा से दूर रहने वाला दाता तथा दाता की प्रसन्नता की अपेक्षा के बिना लेने वाला भिक्षु सद्गति का पात्र होता है।

४. (कुशल और अकुशल प्रवृत्ति के सम्यक् ज्ञान से) इहलोक और परलोक दोनों में हित होता है जिससे सुगति की प्राप्ति होती है -

'इहलोग पारत्तहियं जेणं गच्छइ सोग्गइं'

जैसी दृष्टि : वैसी सृष्टि

श्री जशकरण डागा

एक बार तत्त्वगोष्ठी में एक प्रश्न पूछा गया- "यह सृष्टि कैसी?" गोष्ठी में अनेक विचारक व विद्वान् सम्मिलित थे।

श्रोताओं के एक वर्ग ने कहा- यह सृष्टि नरक जैसी है।

दूसरे वर्ग ने कहा- यह सृष्टि स्वर्ग जैसी है।

तीसरे वर्ग ने कहा- यह सृष्टि स्वप्नवत् है।

चौथे वर्ग ने कहा- यह सृष्टि कारागार रूप है।

पाँचवें वर्ग ने कहा- यह सृष्टि 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' है।

इस प्रकार से उपर्युक्त सभी उत्तर श्रोताओं द्वारा अपनी-अपनी अपेक्षाओं से दिए गए थे। वे उत्तरदाता क्रमशः निम्न प्रकार के वर्ग के थे-

१. दुर्जन व दुःखी २. सज्जन व सुखी ३. ब्रह्मवादी (जो मानते हैं एकं सत्, द्वितीयं नास्ति) ४. विरक्त (वैरागी) तथा ५. समदर्शी अनासक्त महात्मा।

ज्ञानी कहते हैं- **"जाकी रही भावना जैसी, प्रभु सृष्टि देखी तिन तैसी।"**

ध्यान रहे दृष्टि सम्यक् हो तो सब कुछ सम्यक् हो जाता है।

कृपया चिन्तन करें कि हम सृष्टि को कैसी मानते हैं?

-डागा सदन, संघपुरा, पो. टोंक (राज.)

अहिंसक चूल्हे

डॉ. जीवराज जैन

सौर ऊर्जा से चलने वाले चूल्हों में अग्निकायिक जीवों की **उत्पत्ति नहीं होती** है, अतः इनका उपयोग करके हम प्रतिदिन असंख्यात अग्निकायिक **जीवों की हिंसा से** बचने के साथ विद्युत एवं गैस की बचत कर सकते हैं और **पर्यावरण की संरक्षा कर** सकते हैं। वैज्ञानिक डॉ. जीवराज जैन का लेख इस दृष्टि से उपादेय है। -*सम्पादक*

भोजन पकाने व बनाने के लिए हम सभी अग्नि का **प्रयोग करते आ रहे** हैं। रसोई गैस, कोयला या लकड़ी को जलाकर यह अग्नि **पैदा की जाती है।** कुछ घरों में विद्युत हीटर या माइक्रोवेव हीटर से गर्मी पैदा **करके भी भोजन** बनाया जाता है। जैनमतानुसार 'अग्नि' और 'विद्युत' सजीव **एकेन्द्रिय जीव होते** हैं। ये दोनों सचित्त तेजस्काय की पर्याय माने गये हैं।

इस प्रकार हर जैनी जानता है कि इनका प्रयोग करके **भोजन बनाने में** तेजस्काय के असंख्यात जीवों की हिंसा होती है। एक दृष्टि **से तो श्रावकों को** खाना बनाना ही नहीं चाहिए। लेकिन जीवन-यापन के लिए **इस हिंसा को** 'अपरिहार्य' रूप में मान लिया गया है, क्योंकि बिना भोजन **बनाये हमारा काम** नहीं चल सकता। इससे हमारा कर्म-बंध गाढा नहीं हो, इसके **लिए कहा गया है** (गीता में भी) कि भोजन बनाते वक्त परोपकार की भावना **रखिये। लेकिन यह** स्पष्ट जान लें कि जब हम पीने के लिए जल गर्म करते हैं **या भोजन बनाने के** लिए पकाने, सेकने, तलने व उबालने की क्रिया सम्पन्न करते **हैं, तब अग्नि या** विद्युत द्वारा की हुई इन साधारण क्रियाओं में 'महा-हिंसा' तो **होती ही है, कर्म-**बंध भले ही गाढा हो या न हो। तेजस्काय की महा-हिंसा **से हम बच नहीं** सकते।

प्रश्न उठता है कि क्या इस महा-हिंसा से बचने का **कोई विकल्प संभव** है? थोड़ा आगमिक चिन्तन करने से पता चलता है कि 'सूर्य की **किरणें' सचित्त** नहीं होती हैं। लेकिन इन किरणों में प्रकाश के साथ-साथ गर्मी **(ऊष्मा) भी होती** है। यदि इस ऊर्जा को केन्द्रित करके पानी उबालने या **भोजन बनाने की**

प्रक्रियाओं में उपयोग किया जाये तो 'अग्नि' की महाहिंसा से आसानी से बचा जा सकता है।

आजकल बाजार में पानी उबालने के लिए तथा भोजन बनाने के लिए 'सौर-चूल्हे' उपलब्ध हो रहे हैं। इनमें अग्निकायिक या विद्युतकायिक जीव पैदा नहीं किये जाते हैं। यदि हम इनका उपयोग करके गैस, कोयला या विद्युत का उपयोग बंद या कम करते हैं तो अग्नि से होने वाली भयंकर महाहिंसा से बच सकते हैं। अतः हर जैनी का सौभाग्य व कर्त्तव्य बनता है कि वह इस तथ्य को समझे तथा इस विकल्प का ज्यादा से ज्यादा घरों में व सार्वजनिक स्थानों में उपयोग करे। मुझे तो लगता है कि जो श्रावक तन, मन और धन से इसका सदुपयोग करते हैं, कराते हैं या अनुमोदना करते हैं, तो वे न केवल महाहिंसा से बचते हैं, बल्कि अन्यों को इससे बचाने का पुण्य भी उपार्जित करते हैं। जैन दृष्टि से ये चूल्हे अहिंसक तो हैं ही, लेकिन साथ में राष्ट्र और पर्यावरण के लिए भी बहुत उपयोगी हैं। क्योंकि इनके उपयोग से आयात होने वाली रसोई-गैस की भारी मात्रा में बचत संभव है। सौर ऊर्जा हमें मुफ्त में मिल जाती हैं। गैस या बिजली का खर्च बच जाता है।

इसके अलावा गैस जलने से या बिजली पैदा करने में जो वायु-प्रदूषण होता है, वह समाप्त हो जाता है। इस तरह सौर-चूल्हा प्रदूषण रहित चूल्हा होता है। अतः जीव-अजीव का चिन्तन रखने वाले हर समाज को और विशेषकर जैन समाज को, जो इसका इतना सूक्ष्म विवेचन करता है कि अग्नि को भी सचित्त तेजस्काय मानता है, निम्न संकल्प लेना चाहिए कि-

१. वह ज्यादा से ज्यादा इसका उपयोग करके अग्नि व विद्युत का उपयोग घटायेगा। महाहिंसा का अल्पीकरण करेगा।

२. इसके प्रचार व प्रसार में अपना अधिक से अधिक सक्रिय सहयोग देगा। जैनियों और अजैनियों के लिए भी।

३. इन चूल्हों को अधिक विकसित करने के लिए कुछ शोध व परिष्कार की आवश्यकता है। उसके लिए समाज अपने संसाधन, महापुण्य उपार्जन के रूप में सहर्ष लगायेगा। जिससे इन चूल्हों की उपादेयता व कार्य कुशलता में अपेक्षित वृद्धि हो सके। वैज्ञानिक और तकनीकीविद् इसमें अपनी अहम् भूमिका निभा सकते हैं।

यहाँ यह बात ध्यान में रखने की है कि हम सौर-ऊर्जा को एकत्रित करके मात्र उसके ताप का सीधा उपयोग सौर-चूल्हों में करने की बात कर रहे हैं। सौर-ऊर्जा को विद्युत या अग्नि के रूप में परिवर्तन करने की बात नहीं कह रहे हैं। क्योंकि हमारा उद्देश्य अग्नि और विद्युत-कायिक जीवों की रक्षा करने का है। उनकी महाहिंसा से बचने का है। कई लोग सौर-ताप से सौर-विद्युत पैदा करके या सौर-अग्नि पैदा करके, उसका उपयोग करने के विकल्प की बात करते हैं। हमारा मकसद यह कतई नहीं है। हमारी भावना तो अग्नि और विद्युतकायिक जीवों की महाहिंसा से बचने का प्रभावशाली और आसान विकल्प प्रस्तुत करना है।

जीवनयापन में अपरिहार्य महाहिंसा मानी जाने वाली प्रक्रिया से गृहस्थों को निजात दिलाने में साधु-समाज भी अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है। उनको भी सौर-चूल्हों के विभिन्न आगमिक बिन्दुओं पर चिन्तन करके, समाज के सामने सही प्रस्तुतीकरण करना चाहिए। हर पाठक से अपेक्षा की जाती है कि वह संतों से इस पर विचार-विमर्श करके, सौर-चूल्हे को परंपरागत चूल्हों के संपूरक के रूप में अपनाने में शीघ्र आगे आयेगा। इस पर होने वाले मूल खर्च को, सुकृत कार्य पर होने वाले खर्च के समान समझेगा। हर शहर का समाज, इस प्रवृत्ति पर अपना विशेष ध्यान देगा तथा एक समयबद्ध लक्ष्य निर्धारित करेगा। ऐसी आशा की जाती है कि अग्निकायिक जीवों की रक्षा करने में हर सुज्ञ श्रावक एक कदम आगे बढ़कर सोचेगा तथा पुण्य उपार्जन में व अहिंसक बनने में प्रमाद नहीं करेगा। ***-४०, कमानी सेन्टर, द्वितीय माला, बिस्तुपुर, जमशेदपुर-१***

जिनवाणी पर अभिमत

जिनवाणी माह दिसम्बर 05 के अंक के संपादकीय लेख द्वारा वर्तमान विवाह जो कि एक कष्टदायी बन गया है, की ओर ध्यान आकर्षित किया। वैसे फिजूलखर्ची, अपव्यय को रोकने का उपदेश जैन धर्म देता ही नहीं आया वरन् अपरिग्रह को अपनाना धर्म का एक अंग बना, लेकिन हम देखते हैं आजकल विवाहों में राशि व्यय करने की होड़ लगी है, जिससे संपूर्ण समाज में दिखावे की विकृति बढ़ गई है। इस दिखावे को हमारे साधुओं ने भी प्रभावना अंग बना कर धार्मिक क्रियाओं में स्थान दे दिया है, जबकि अन्य सामाजिक कार्यों एवं आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता था। मेरी राय में अब समय आ गया है, कम से कम हम विवाह जैसे संस्कारित कार्यों को मर्यादा में करें। ***-घेवरचन्द गोदीका, जयपुर***

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः २६)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(काय स्थिति)

श्री धर्मचन्द जैन

जुलाई २००५ के अंक तक चली यह तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी इस अंक से पुनः उसी क्रम में दी जा रही है। *-सम्पादक*

प्र.१६९ कायस्थिति का थोकड़ा कौन से शास्त्र से लिया गया है?

उत्तर कायस्थिति का थोकड़ा प्रज्ञापना सूत्र के १८वें पद से लिया गया है। इसमें २२ द्वारों से जीवों की कायस्थिति का वर्णन किया गया है। अन्तर का वर्णन जीवाजीवाभिगम सूत्र से लिया गया है।

प्र.१७० अन्तर किसे कहते हैं?

उत्तर एक अवस्था (पर्याय) को छोड़कर दुबारा उसी अवस्था को प्राप्त करने में जितना काल लगे, उसे अन्तर कहते हैं।

प्र.१७१ जीवों की स्थितियाँ कितने प्रकार की होती हैं?

उत्तर जीवों की स्थितियाँ दो प्रकार की होती हैं- १. भव स्थिति और २. काय स्थिति।

एक भव में जीव जितने काल तक रहता है, उसे भव स्थिति कहते हैं। यह जघन्य (कम से कम) क्षुल्लक भव अर्थात् २५६ आवलिका प्रमाण होती है तथा उत्कृष्ट ३३ सागरोपम की होती है।

एक ही गति, जाति, काया आदि पर्यायों में जीव जितने काल तक जन्म-मरण करते हुए रहता है, उसे कायस्थिति कहते हैं। कायस्थिति का वर्णन व्यवहार-राशि के जीवों की अपेक्षा से समझना चाहिये।

प्र.१७२ आवलिका किसे कहते हैं?

उत्तर काल को मापने की सबसे सूक्ष्म इकाई 'समय' है। असंख्यात समयों की एक आवलिका होती है। एक सैकण्ड में लगभग ५८२५

आवलिकाएँ, एक मिनिट में ३,४९,५२५ आवलिकाएँ तथा १ मुहूर्त्त में १,६७,७७,२१६ आवलिकाएँ होती हैं।

प्र.१७३ अन्य अपेक्षा से कायस्थिति के थोकड़े में जीवों की स्थिति कितने प्रकार की बताई गई है?

उत्तर अन्य अपेक्षा से जीवों की स्थिति तीन प्रकार की बतलायी हैं-

१. संख्यात काल २. असंख्यात काल ३. अनन्त काल।

प्र.१७४ संख्यात काल किसे कहते हैं?

उत्तर काय स्थिति के थोकड़े में अन्तर्मुहूर्त से लेकर कोटि पूर्व तक की स्थिति को संख्यात काल माना गया है। सत्तर लाख छप्पन हजार कोटि वर्षों का एक पूर्व होता है। कोटि पूर्व से अधिक स्थिति होते ही मनुष्य व तिर्यंच गति में जीव को युगलिक माना जाता है। मनुष्य व तिर्यंच यदि युगलिक हो तो उनकी स्थिति असंख्यात काल की होती है।

यद्यपि अन्यत्र काल गणना की इकाइयों में शीर्ष प्रहेलिका तक तथा उससे आगे भी संख्यात काल माना है। जिसमें १९४ अंक हो (५४ अंक व उनके सामने १४० बिन्दियाँ हों) उसे शीर्ष प्रहेलिका कहा गया है। आगे की गणना की इकाई उपलब्ध न होने से संख्यात काल की गणना की अन्तिम इकाई 'शीर्ष प्रहेलिका' को माना गया है।

प्र.१७५ काय स्थिति के थोकड़े में असंख्यात काल कितने प्रकार का बतलाया गया है?

उत्तर असंख्यात काल पाँच प्रकार का बतलाया गया है-

१. करोड़ पूर्व झाझेरी (कोटि पूर्व वर्ष से अधिक)

२. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग- (असंख्यात वर्षों का एक पल्योपम होता है)

३. पल्योपम-सागरोपम काल- (१० कोटाकोटि पल्योपम का एक सागरोपम होता है। करोड़ को करोड़ से गुणा करने पर कोटाकोटि बनता है)

४. बादर काल- इसमें असंख्यात उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी बीत जाती है। दस कोटाकोटि सागरोपम की एक उत्सर्पिणी तथा इतने ही काल

की एक अवसर्पिणी होती है। क्षेत्र की अपेक्षा-अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण क्षेत्र में रहे हुए आकाश प्रदेशों के बराबर अर्थात् अंगुल के असंख्यातवें भाग जितने क्षेत्र में इतने आकाश प्रदेश रहे हुए हो सकते हैं कि उन्हें यदि कोई प्रति समय निकाले तो असंख्यात उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी बीत जाती है। इस काल को बादर काल कहते हैं।

बादर जीवों की उत्कृष्ट कायस्थिति भी इतनी ही होती है, इस कारण से भी उक्त काल को बादर काल कहते हैं।

५. पृथ्वीकाल- इसमें भी असंख्यात उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी का काल होता है, किन्तु बादर काल से असंख्यात गुणा अधिक होता है। (असंख्यात के भी असंख्यात भेद हो सकते हैं) क्योंकि इसमें असंख्यात लोकों में रहे हुए आकाश प्रदेशों के बराबर समयों की स्थिति होती है। अर्थात् असंख्यात लोकों में जितने आकाश प्रदेश रहे हुए हैं, उन्हें यदि कोई प्रति समय निकाले, उसमें जितना काल लगे, उसे पृथ्वीकाल (पुढवीकाल) कहते हैं।

सूक्ष्म जीवों की उत्कृष्ट कायस्थिति पृथ्वीकाल के बराबर होती है, इस कारण इसे सूक्ष्म काल भी कहते हैं।

प्र.१७६ असंख्यात के असंख्यात भेद कैसे संभव हैं?

उत्तर असंख्यात के भी असंख्यात भेद हो सकते हैं। एक व्यावहारिक उदाहरण से इसे समझ सकते हैं। जैसे किसी व्यक्ति के पास यदि एक लाख रुपये हैं तो उसे लखपति कहा जाता है। यदि दूसरे के पास ५० लाख रुपये हैं तो भी उसे लखपति कहा जाता है तथा यदि किसी के पास ९९ लाख ९९ हजार नौ सौ निन्यानवे रुपये तथा निन्यानवे पैसे हैं तो भी उसे लखपति ही कहा जाता है। इस प्रकार रुपयों के आधार पर लाखों भेद हो जाते हैं। यदि इनके एक-एक पैसे के आधार पर पुनः भेद किये जायें तो लाखों-करोड़ों भेद हो जाते हैं। इस प्रकार जब लखपति के भी लाखों-करोड़ों भेद हो सकते हैं तो असंख्यात के असंख्यात भेद होने में कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आ. शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

शरण गहो तुम धर्म की

श्री लक्ष्मीचन्द बडोला

धर्म के बिना जीवन में मानव अस्थिर एवं अशान्त होकर उसी तरह अधोमुख होता है जैसे कटी पतंग बिना नियन्त्रण के नीचे गिर पड़ती है। आओ चिन्तन करें कि धर्म क्या है, जिसके बिना मानव का ऐहलौकिक व पारलौकिक जीवन व्यर्थ हो जाता है।

"धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो" यानी अहिंसा, संयम व तप के सूक्ष्मतम रूप को सर्वोत्कृष्ट धर्म कहा है। वह इस लोक की आधि, व्याधि एवं उपाधि को दूर करता है। *'धारयति असौ धर्मः'* निरुक्ति के अनुसार जो दुर्गति में जाने से रोके वह धर्म है। दूसरे शब्दों में आत्मा को परमात्मा, नर को नारायण, जीव को शिव बनने में सहायक होता है धर्म। धर्म वह चक्र है जो हमें सिद्ध चक्र दिलाता है, कहा है-

धर्म त्रिलोकी ढाल है, धर्म ही साँचो माल है।
धर्म बिना री जिन्दगी, भव भय रो सवाल है।।

धर्म के इस अढाई अक्षर में जबरदस्त ताकत है, इसकी शक्ति में जीवन की शक्ति, इसकी दृष्टि में जीवन की दृष्टि है। यह हमारे जीवन का वैभव है। यह हमारे जीवन का अमृत ही नहीं, हमारे जीवन की धड़कन भी है।

धर्म ऊपर से थोपी जाने वाली बला नहीं, यह तो जीवन जीने की ७२ कलाओं से बढ़कर एवं श्रेष्ठ है। न्याय-नीति, प्रामाणिकता, नैतिकता धर्म के ही अंग हैं, परन्तु इनका संग इन्सान को ऊपर से बदलता है और धर्म ऐसा मन्त्र है कि जो भीतर से बदलता है।

आज हम सामाजिक रूढ़ियों, कर्मकाण्डों, बाह्याचार, मायाचार, आडम्बर, आरम्भ-समारम्भ, झूठी मान्यताओं एवं मिथ्याप्रवृत्तियों में धर्म का सहारा लेकर विभावों को धर्म मान रहे हैं। आज अधर्म के कन्धों पर धर्म चल रहा है। हम धर्म के मर्म को नहीं जान रहे हैं। आज एकाकी आग्रह, हठाग्रह, दुराग्रह, विषमता, साम्प्रदायिकता, संकीर्णता आदि का धर्म पर दबदबा है।

आज धर्म को ओढ़ा जा रहा है। ऐसी धारणा भी है कि यह केवल परलोक का साधन है। धर्म को उधार का सौदा माना जा रहा है, जिससे धर्म एक औपचारिकता बनता जा रहा है।

धर्म प्रदर्शन नहीं आत्मदर्शन है। यह मनोरंजन या जनरंजन की चीज नहीं, यह तो भवभंजन या आत्मरंजन का स्वभाव है। यह तो भीतर की अनुभूति है, ज्योति है। सच्चा धर्म आत्मा को परमात्मा बनाता है। वह किसी को तोड़ता नहीं जोड़ता है। धर्म मैत्री का द्वार है, दुराग्रह की दीवार नहीं।

सच्चे धर्म में बाधक हैं- मोहभाव, ईर्ष्या, प्रमाद रूपी पिशाच, कषाय, विषयभोग व धर्म की सही समझ का अभाव। जिन्होंने भी धर्म के बाधक तत्त्वों को छोडकर दुष्कर धर्म का अनुष्ठान किया, कर्म के शत्रु 'धर्म' का सहारा लिया, उनका धर्म ने माता की तरह पोषण व पिता की तरह रक्षण-संरक्षण किया है। वे धर्म को धारण कर सिद्ध हुए हैं। धन्ना, शालिभद्र आदि पर धर्म का रंग चढ़ा तो वे तुरन्त विपुल भोगों को छोड़ कर प्रव्रज्या पथ पर चल दिए।

इस धर्म की बदौलत अर्जुनमाली, परदेशी राजा ने अपने हाथों इतिहास बनाया। ऐसे ही विभीषण को धार्मिक आचरण से राम-राज्य मिला। पाण्डवों को कृष्ण का साथ मिला। सम्राट् अशोक की न्याय नीति का प्रतीक हमारा राष्ट्रीय चिह्न अशोक चक्र बना।

धर्म में १५ आना विश्वास नहीं चलता। धर्म में तो १७ आना विश्वास चाहिये। धर्म के प्रति श्रद्धा हो तो उसका फल २ X २ =४ नहीं, कहीं गुणा होता है।

धर्म का फल कब व किस रूप में प्राप्त हो, यह शायद छद्मस्थ नहीं जान पाये, परन्तु धर्म निष्फल नहीं है, धर्म का सह-उत्पाद पुण्य है। उसी के प्रताप से सुबाहुकुमार, माता मरुदेवी, श्रीपाल ने मोक्ष का आरक्षण ही नहीं कराया, अतुल ऋद्धि व सातावेदनीय कर्म का उपार्जन किया।

प्रभु ने फरमाया-

लब्भन्ति विउला भोगा, लब्भन्ति सुर–सम्पया।
लब्भन्ति सुपुत्त– मित्ताणि, एगो धम्मो न लब्भइ।।

जीवन में विपुल भोग प्राप्त हो सकते हैं, देवों की सम्पदा मिल सकती है, पुत्र एवं मित्र भी प्राप्त हो सकते हैं, किन्तु एक धर्म का प्राप्त

होना कठिन है।

धर्म के प्रति हमारा संकल्प मजबूत हो, धर्म मजबूरी में नहीं मजबूती में है, मजबूरी में उलझ गये तो, धर्म हमसे रिस-रिस कर निकल जायेगा।

श्रद्धा-सम्पन्न श्रावक-श्राविकाओं को चाहिये कि वे सतत धर्म-क्रिया में लगे रहें, क्योंकि उनके भी अन्य अनुसर्ता विद्यमान हैं।

भूतकाल में सुबुद्धि प्रधान, जितशत्रु राजा, चित्त सारथि, पुष्पकली शंख ने लोगों को धर्म से जोड़कर अनन्त उपकार किया है। मदनरेखा ने अपने मरणासन्न पति को धर्म का अर्थ समझाया व देवयोनि दिलायी।

धर्म दलाली व प्रेरणा के उत्कृष्ट रसायनों से श्री कृष्ण व राजा श्रेणिक ने तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन किया। हमें धर्म को पगड़ी की तरह नहीं समझना कि उसे उपासरे में गये तब पहन लिया तथा मण्डी, समाज या कार्यालय में गये तो उतार दिया। धर्मस्थान में जाने से ही हम धार्मिक हो गये, ऐसा नहीं है। धर्म तो चमड़ी की तरह हर समय हमारे जीवन-व्यवहार में रहना चाहिए।

धर्म से हमारे में परिवर्तन बुद्धिगत नहीं, हृदयगत होना चाहिये। धर्म चर्चा में नहीं चर्या में उतरना चाहिए। धर्म का मूल गहरा है इसे सींचने की आवश्यकता है।

यदि हमें अत्याचार, अनाचार, अविश्वास, आकुलता, अश्रद्धा, अस्थिरता से बचना है तथा जीवन में मधुरता, सरलता, सरसता, सहिष्णुतापूर्वक आन्तरिक व बाह्य समृद्धि लानी है तो हमें गोशालक व जमालि की तरह धर्म से विमुख न होकर अपनी करणी को धैर्यपूर्वक करना चाहिए। जब तक हमारे शरीर में सामर्थ्य है, इन्द्रियाँ परिपूर्ण है, हमें धर्म की शरण में जाकर चारों बलों का उपयोग कर आठों आत्माओं का शोधन करना है। जिससे हमें चार गति, चौरासी लाख योनि व २४ दण्डकों से मुक्ति मिले और पाँचवीं गति मोक्ष का शाश्वत सुख प्राप्त हो।

जन्ममरण के फेर से जो तू मुक्ति चाय।
शरण गहो तुम धर्म की, इम सम दूजा नांय।।

—802 बी, हाईलेण्ड पार्क, लोखंडवाला कोम्पलेक्स, ऑफ लिंक रोड़, अंधेरी, मुम्बई—53 (महा.)

करें गुरुदेव को वन्दन

प्रो. चाँदमल कर्णावट

वीतराग मार्ग के सेनानी- पूज्य आचार्य हस्ती आजीवन वीतरागता की साधना में निरत रहे। आप गुरु तो प्रत्यक्ष ही थे। आप देवतुल्य भी थे। दर्शक आपमें सदैव ही वीतरागता की झाँकी का अनुभव करते थे। समता आपके स्वभाव में जैसे समा गई थी। आप सचमुच समता की मूर्ति थे।

८१ वर्ष की सुदीर्घवय। आपके संथारे की घड़ी निकट आ रही थी। निमाज (जिला-पाली) की ओर आपका विहार चल रहा था। सम्प्रदाय-व्यवस्था की चर्चा होती देख एक आगमज्ञ सुश्रावक ने पूछ ही लिया, गुरुदेव! आपको सम्प्रदाय से इतना राग क्यों? प्रश्नकर्ता को ज्ञात न था ? उत्तर मिला- राग नहीं, सम्प्रदाय का मुझ पर गुरुतर दायित्व है, इसलिए उससे मुक्त होना है। वे सचमुच वीतराग मार्ग के सच्चे सेनानी थे।

अप्रमत्त साधक- अप्रमत्तता उनके जीवन के अन्तिम पल तक बनी रही। उनका समाधिमरण, पंडितमरण इसी अप्रमत्तता का ज्वलन्त प्रमाण था। वैसे तो उनका सम्पूर्ण जीवन और हर-पल जप, तप, ध्यान, मौन और स्वाध्याय में ही व्यतीत हुआ।

जन-जन के वन्दनीय- प्राणिमात्र के साथ उनकी मैत्री थी। फिर अलग-अलग मजहब, सम्प्रदाय उसमें बाधक कैसे बनते? यही कारण था कि वे एक सम्प्रदाय के आचार्य होते हुए भी असाम्प्रदायिक वृत्ति के कारण जन-जन के वन्दनीय, अभिनन्दनीय थे।

स्व-पर कल्याण में निरत- स्वाध्याय एवं सामायिक का उनका संदेश प्रवचनों में सदैव गूंजता रहा। इन दोनों प्रवृत्तियों के प्रचार-प्रसार के कारण वे इनके पर्याय बन गए थे। आत्म-कल्याण के साथ लोककल्याण हेतु उन्होंने सामायिक और स्वाध्याय के आध्यात्मिक आधार प्रदान किए। उन्होंने विषमता और अज्ञान-मानवता के इन दोनों शत्रुओं के निवारण का राजमार्ग संस्थापित किया। उनकी प्रेरणा से समाज को स्वाध्याय से विचारशुद्धि और सामायिक से आचारशुद्धि रूप स्वस्थता प्राप्त हुई। उनके गीत की ये पंक्तियाँ युगों-युगों

तक गूँजती रहेंगी-

स्वाध्याय बिना घर सूना है, मन सूना है सद्ज्ञान बिना।
घर–घर गुरुवाणी गान करो, स्वाध्याय करो, स्वाध्याय करो।।

इसी प्रकार समता भाव के विकास हेतु उन्होंने फरमाया-

जीवन उन्नत करना चाहो तो सामायिक–साधन कर लो।
आकुलता से बचना चाहो तो सामायिक साधन कर लो।।

करुणामूर्ति- उनकी सागर-सी करुणा के आगे मानव तो क्या विषधर जैसे विषैले जीव भी झुक गए। करुणा एवं मैत्री-भावना के बल पर विष भरे विषधर को भी उन्होंने जीवन प्रदान किया। आध्यात्मिक करुणा से उनका हृदय सराबोर था। संसार को दुःखों से उबारने हेतु उनके गीत की ये पंक्तियाँ-

समझो चेतन जी अपना रूप, यो अवसर मत हारो।
ज्ञान दरसमय रूप तिहारो, अस्थि माँसमय देह न थारो,
दूर करो अज्ञान, होवे घट उजियारो।।

क्रांति के चरण

मूल्य संकट का निराकरण- उनकी 'गुणी अभिनन्दन' की योजना समाज में व्याप्त सद्गुणों या मूल्यों के ह्रास को रोकने में सफल बनी। गुणीजनों के अभिनन्दन से सहज ही गुणों को समाज में महत्त्व मिला और जनमानस गुणों की ओर आकृष्ट बना।

चौका प्रथा पर रोक- साधु-साध्वियों के चातुर्मास में दर्शनार्थियों के भोजन हेतु चौका प्रथा पर समाज का धन पानी की तरह बहाया जा रहा था। करुणाशील आचार्य यह कैसे देख पाते। उन्होंने घोषणा कर दी कि जहाँ चौका चलेगा वहाँ वे चातुर्मास नहीं करेंगे। भोजनार्थी शुल्क (अल्प ही सही) देने को समुद्यत हो गए।

एकता का सेतुबंध- अ.भा. जैन विद्वत् परिषद् की स्थापना आचार्यप्रवर की प्रेरणा का फल था। आचार्यप्रवर के मन में अवश्य ही दिगम्बर एवं श्वेताम्बर समाज की एकता की भावना रही होगी। इस विद्वत् परिषद् में श्वेताम्बर-दिगम्बर सभी विद्वान् एकत्र होते और एक मंच पर मिलजुल कर चर्चा करते। इससे स्नेह सेतु का सुदृढ़ निर्माण हुआ। समाज का मानस

निकट आया।

व्यसनमुक्ति अभियान- आचार्यप्रवर ने जन-सामान्य को व्यसन से मुक्त करने का प्रबल अभियान संभाला। हजारों व्यक्तियों को उन्होंने व्यसन-मुक्त बनाया। नैतिक-धार्मिक क्षेत्र में अग्रसर होने का यह पहला कदम था।

पूज्य आचार्यप्रवर के जीवन के अन्यान्य पक्षों से सारा समाज सुपरिचित है। उनका जन्म-दिवस हमें महती प्रेरणा प्रदान करे और हम उनके बताए मार्ग पर आगे बढ़ें, इसी मंगल भावना के साथ....

-35, अहिंसापुरी, उदयपुर (राज.)

मर्म धर्म का गर समझें तो

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

मर्म धर्म का गर समझें तो, जीवन में आनन्द आए।
जिनवाणी को गर धारें तो, जीवन सफल यह हो जाए।।टेर।।

त्याग-तपस्या का जीवन में, कदम-कदम पर लाभ मिले,
दूर हटें सब क्लेश हमारे, खुशियों का फिर चमन खिले।
कर्मों की हो जाए निर्जरा, जीवन सद्गति को पाए।।
मर्म धर्म का.......

लिया धर्म का शरणा जिसने, उनके सारे विघ्न टले,
भव-भव उनका सुधर गया और इतिहासों में अमर बने।
चले धर्म की जो राहों पर, मुक्ति मंजिल को पाए।।
मर्म धर्म का.......

वीर प्रभु के भक्तों को अब, इतना कहना है हमको,
ज्ञान उजाला करो हृदय में, दूर करो मिथ्या तम को।
विषय-कषायों को तज करके, जीवन को हम सरसाएँ।।
मर्म धर्म का.......

-स्टेशन रोड, दुर्ग (छत्तीसगढ)

सकलगुणभूषा च विनयः(२)

प्रश्न १५. 'नमे सो ही गमे' -एक गुजराती सूक्ति है, इसका अर्थ बताइये।

उत्तर विनयवान (नम्रता वाला) व्यक्ति सबको अच्छा लगता है।

प्रश्न १६. 'सूको काठ टूट जावै पण निवै कोनी'-एक राजस्थानी कहावत है, इसका अर्थ बताइये।

उत्तर अहंकारी एवं घमण्डी व्यक्ति अपना सर्वनाश कर देता है, लेकिन नम्र नहीं बनता।

प्रश्न १७. 'अधजल गगरी छलकत जाए' इस उक्ति का क्या अर्थ है?

उत्तर थोड़ा सा ज्ञान होते ही जो अहंकार में फूल जाते हैं।

प्रश्न १८. "एवं धम्मस्स विणओ मूलं, परमो से मुक्खो। जेण कित्तिं सुअं सिग्घं, णिस्सेसं चाभिगच्छइ॥"अर्थात् वृक्ष की तरह धर्म का मूल विनय है एवं उसका अन्तिम फल मोक्ष है। विनय से मनुष्य को कीर्ति, प्रशंसा और श्रुतज्ञान आदि तत्त्वों की प्राप्ति होती है।

शास्त्र की उपर्युक्त वाणी कौनसे सूत्र से ली गई है ?

उत्तर दशवैकालिक सूत्र ९/२/२

प्रश्न १९. 'रमए पंडिए सासं हयं भद्दं व वाहए' अर्थात् विनीत शिष्य को शिक्षा देता हुआ ज्ञानी गुरु उसी प्रकार प्रसन्न होता है जिस प्रकार अच्छे घोड़े पर सवारी करता हुआ घुड़सवार। उपर्युक्त महावीर की वाणी किस शास्त्र में संकलित की गई है?

उत्तर उत्तराध्ययन सूत्र, प्रथम अध्ययन, गाथा ३७

प्रश्न २०. मन-विनय का क्या तात्पर्य है?

उत्तर मन-विनय का तात्पर्य है- मन में विनय भाव रखना तथा उसे अत्यन्त पवित्र बनाने का प्रयत्न करना। राग-द्वेष आदि विकारों की कलुषता से मन को अपवित्र न होने देना तथा जिससे मन के विकार युक्त बन जाने की संभावना हो, ऐसे वातावरण से अलग रहना ।

प्रश्न २१. दर्शन-विनय का क्या तात्पर्य है?

उत्तर सम्यग्दर्शन को निर्मल रखना, उसमें अतिचार न लगने देना, सम्यग्दृष्टि पुरुषों का यथायोग्य सत्कार-सम्मान करना और यथोचित सेवा-भक्ति करके उन्हें प्रसन्न करना।

प्रश्न २२. चारित्र-विनय का क्या तात्पर्य है?

उत्तर स्वयं चारित्रनिष्ठ बनना, निर्दोष चारित्र का पालन करना एवं चारित्र निष्ठ महापुरुषों के प्रति अत्यन्त श्रद्धा, सम्मान तथा सेवा की भावना रखना चारित्र-विनय है।

प्रश्न २३. "जो सदा ज्ञानी एवं गुरुजनों का अभिवादन करता है तथा उनकी निकटता से सेवा करता है उसकी आयु, विद्या, यश और बल ये चारों निरन्तर बढ़ते रहते हैं।" उपर्युक्त संदेश किस ग्रन्थ से लिया गया है?

उत्तर मनुस्मृति २/१२१

प्रश्न २४. नम्रता और चापलूसी में क्या अन्तर है?

उत्तर नम्रता गुण है, यह मन की सरल स्पष्ट वृत्ति है। सद्गुणों की प्राप्ति के एवं गुणीजनों के सम्मान के लिए झुकना नम्रता है। अपने स्वार्थ के लिए अपना उल्लू सीधा करने के लिए झुकना दूसरों को ठगने के लिए झुकना चापलूसी है।

प्रश्न २५. एक विनय गुण के होने से बाकी कौन-कौन से गुण स्वयं आ जाते हैं?

उत्तर निरहंकारता, नम्रता, मृदुता, निश्छलता, सेवा, शुश्रूषा, सेवा-भक्ति, समर्पणवृत्ति, दया, क्षमा, श्रद्धा, सरलता आदि सद्गुण स्वतः ही विनयवान व्यक्ति में आ जाते हैं।

प्रश्न २६. विनयशील विद्यार्थी कौन से आठ गुणों से युक्त होता है?

उत्तर १. हास्य क्रीड़ा नहीं करने वाला २. जितेन्द्रिय ३. दूसरों के मर्म प्रकट नहीं करने वाला ४. सदाचार का पालन करने वाला ५. व्रतों में दृढ़ रहने वाला ६. लोलुपता रहित ७. क्रोध नहीं करने वाला ८. सत्य का आचरण करने वाला।

प्रश्न २७. गौतम स्वामी यद्यपि चौदह पूर्वों के ज्ञाता थे फिर भी उन्होंने भगवान महावीर से छोटे-छोटे प्रश्न क्यों पूछे? क्या वे स्वयं इनका उत्तर नहीं जानते थे?

उत्तर गौतम स्वामी द्वारा छोटे-छोटे प्रश्न पूछने के पीछे उनका अपने गुरु भ. महावीर के प्रति विनयभाव था। वे भगवान की महिमा बढ़ाते और अपने को छोटा बताते। उनके हृदय में जगत् के सभी प्राणियों के प्रति मैत्री भाव था।

प्रश्न २८. विनीत शिष्यों के लिए ज्ञान श्रवण करने को शास्त्रों में किस प्रकार की विधि बतलाई है?

उत्तर शिष्य को निद्रा तथा विकथा से दूर रहकर हाथ जोड़े हुए भक्ति व आदर के साथ गुरु की वाणी का श्रवण करना चाहिये।

गरीबी में अमीरी

सुश्री अक्षिता जैन

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर १० फरवरी २००६ तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर- ३४२००१ (राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। प्रत्येक माह की पुरस्कार राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार २५०/- रुपये, द्वितीय पुरस्कार १५०/- रुपये, तृतीय पुरस्कार १००/- रुपये तथा चार सान्त्वना पुरस्कार ५०/- रुपये प्रत्येक। इस स्तम्भ की प्रतियोगिता में १० वर्ष से १८ वर्ष के छात्र-छात्रा ही भाग ले सकते हैं। इसके लिए उन्हें उत्तरपत्र पर अपने नाम एवं पते के साथ जन्मतिथि का ईमानदारी से उल्लेख करना होगा।

एक अत्यन्त गरीब परिवार छोटी-सी झोपड़ी में रहता था। उस परिवार में पति-पत्नी और तीन वर्ष का बालक था। एक बार रात में किसी ने द्वार खटखटाया। औरत ने दरवाजा खोलकर देखा तो एक आदमी दरवाजे पर खड़ा था। पूछने पर उस व्यक्ति ने कहा- ''बहन! बहुत वर्षा हो रही है, मेरे कपड़े भीग गए हैं और ठंड भी खूब लग रही है। मुझे अपनी झोपड़ी में रात्रि-विश्राम के लिए स्थान दे दो। मैं तुम्हारा बहुत बड़ा उपकार मानूँगा।''

झोपड़ी में एक कोने में खाट पर उसका पति सोया था और नीचे उसका बालक सोया हुआ था। उसने पति को जगाया और कहा उठो अपने घर में कोई अतिथि आए हैं। उसका पति उठा, उसने अतिथि का यथोचित सत्कार किया और कहा- ''मनुष्य ही तो मनुष्य के काम आता है।'' गृहस्वामी का प्रेमभाव देखकर तो अतिथि आश्चर्यचकित रह गया। यह आदमी कुलीन है और गरीबी में भी अमीर है। ऐसा विचार कर ही रहा था कि गृहस्वामी ने कहा- ''भाई! तुम्हारे कपड़े भीग गए हैं, इन्हें उतार दो और मेरे कपड़े पहन लो।'' उसने कहा-''मुझे कपड़े बदलने नहीं है। आपने अपनी झोपड़ी में आश्रय दिया, यही आपका बहुत बड़ा उपकार है।'' गृहस्वामी ने कहा कि इसमें उपकार की कोई

बात नहीं है। हम गरीब लोग हैं, हमारे पास अतिथि कहाँ से आयेंगे। भिखारी से भीख माँगने कौन आता है? आज हमारा सौभाग्य है कि आप हमारे यहाँ पधारे।'' अतिथि ने जब गीले कपड़े बदल लिये तो गृहस्वामी ने कहा- ''आप भूखे होंगे, मेरे पास आधी रोटी बची है। आप सूखी रोटी खाकर आराम करें।''

इस प्रकार उस दम्पती ने उसे खिला-पिलाकर सोने के लिए जगह दी। सुबह होने पर वह जाने लगा तो उसको दम्पती की बातचीत से ज्ञात हुआ कि इस गृहस्वामी के पुत्र का कल जन्म-दिवस है।

अतिथि धन्यवाद देकर चला गया। वह अतिथि और कोई नहीं उस नगरी का राजा था। राजा वहाँ से अपने महल में गया और स्नानादि कर बहुमूल्य वस्त्र धारण कर अनेक प्रकार के हीरे, जवाहरात, सोना, चाँदी, अनाज, बर्तन, वस्त्र, घी, तेल आदि वस्तुएँ लेकर फिर वहाँ आया। उस दम्पती ने राजा को आते हुए देखकर सोचा कि हमने कौनसा अपराध किया है कि राजा हमारे यहाँ आ रहे हैं? राजा ने सारी चीजें झोपड़ी के बाहर रखवायी और कहा- ''तुम्हारा बालक कहाँ है? उसे यहाँ बुलाओ, हम सब उसका जन्मदिन मनायेंगे।'' दम्पती ने पूछा- ''आज मेरे पुत्र का जन्मदिन है, यह आपको कैसे मालूम पड़ा?'' राजा ने कहा- ''आपने जिस अतिथि को रात में आश्रय दिया था, वह मैं ही हूँ। रात को मैं यह देखने निकला था कि मेरी प्रजा में अमीरी तथा सज्जनता कितनी है? तुम्हारे दरवाजे पर आने से पहले मैंने दस साहूकारों का दरवाजा खटखटाया था, परन्तु मुझे किसी ने आश्रय नहीं दिया। तुम्हारी सज्जनता और गरीबी में अमीरी देखकर मैं बहुत ही प्रसन्न हूँ।'' आज आपके पुत्र का जन्म-दिवस है, यह मुझे आप दोनों की बातचीत से ज्ञात हो गया था।''

राजा के वचनों को सुनकर वे पति-पत्नी अत्यन्त हर्षित हुए और अपने को कृतार्थ समझने लगे। राजा ने बालक को मूल्यवान वस्त्र तथा आभूषण भेंट किए, लाखों की सम्पत्ति देकर दम्पती की गरीबी दूर की। उसे अपने राज्य में एक अधिकारी के पद पर नियुक्त किया।

आश्चर्य की बात यह है कि अमीर बनने के बावजूद भी उसे थोड़ा भी अभिमान नहीं हुआ। जीवनभर उसने दीन-दुःखियों की सेवा कर अपना जीवन सफल बनाया।

प्रश्न-

१.‘‘मनुष्य ही तो मनुष्य के काम आता है।’’ उक्ति को उदाहरण सहित समझाइये।

२. ‘‘गरीबी में अमीरी’’ शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिये।

३. गृहस्वामी ने अतिथि-सत्कार कैसे किया?

४. राजा ने अपने राज्य में अमीरी और सज्जनता की परीक्षा कैसे की?

५. अर्थ बताइये- उपकार, यथोचित, कुलीन, अपराध, कृतार्थ, अभिमान।

६. गृहस्वामी को सज्जनता का क्या प्रतिफल मिला?

बाल-स्तम्भ [नवम्बर-२००५] का परिणाम

जिनवाणी के नवम्बर २००५ के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत ‘जिह्वा संभली जीवन संभला’ कहानी के प्रश्नों के उत्तर २० बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। प्राप्तांक २५ में से दिए गए हैं। इस अंक की प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-२५०/-	अक्षिता जैन, जोधपुर	२२.५
द्वितीय पुरस्कार-१५०/-	श्वेता आंचलिया, नरडाणा	२२.२५
तृतीय पुरस्कार- १००/-	चारु गुलेच्छा, पीपाड़ शहर	२२
सान्त्वना पुरस्कार-५०/-	पारुल जैन, पीपाड़ शहर	२१.५
	प्रफुल्ल ललवाणी, नागौर	२१.५
	रामवीर भूऋषि, दुब्बी	२१
	सिद्धार्थ जैन, मालपुरा	२०.५

बाल-प्रतिभा

उत्तरों में अभिव्यक्त विचार

व्यवहार कुशलता और वाक्-चातुर्य पुस्तकों से नहीं वरन् अपने विवेक से प्राप्त होती हैं। शब्द विन्यास में मधुरता, शालीनता एवं सौहार्द आवश्यक है। अभद्र, अपशब्द और व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग शिष्ट व्यक्तियों को शोभा नहीं देता। बड़े-बूढ़ों का सम्मान और छोटों की मर्यादा का ध्यान रखना बातचीत करने का एक विशेष गुण है। *-कु. पारुल जैन, आगरा*

श्वसन क्रिया हो सम्यक्(२)

श्री चंचलमल चोरडिया

पूर्ण श्वास लेना जितना आवश्यक है, उतना ही पूरा निःश्वास भी आवश्यक है। श्वास के माध्यम से जो ऑक्सीजन के रूप में प्राण वायु हम ग्रहण करते हैं, वह रक्त शुद्ध करने में कार्बन डाई ऑक्साइड में बदल जाती है। यदि इस दूषित वायु का शरीर से समय पर पूर्ण निष्कासन न हुआ हो तो शरीर में अनुपयोगी विजातीय तत्त्वों में वृद्धि होने लगती है, जिससे प्राण ऊर्जा के प्रवाह में अवरोध आने के कारण रोग होने की संभावना रहती है। जो व्यक्ति प्राणायाम नहीं करते, उन्हें भी प्रातःकाल स्वच्छ एवं शुद्ध वातावरण में कम से कम कुछ समय तो गहरी धीमी पूर्ण सजगता पूर्वक अवश्य श्वसन क्रिया करनी चाहिये। साथ ही प्रातः भूखे पेट ही बिना कुछ खाये कतिपय बार गहरी श्वास प्रक्रिया करने के बाद मुँह बंद करके पूरे वेग से नाक से जितनी ज्यादा वायु बाहर फेंक सकें, फेंकने का अपनी सामर्थ्य और विवेक अनुसार प्रयास करना चाहिये। दो ऐसे निःश्वासों की प्रक्रिया के बीच कुछ समय आराम से नियमित श्वसन क्रिया ही करनी चाहिए। ऐसा करने से सारे शरीर में वायु का प्रवाह एकदम तेज हो जाता है और जो विजातीय तत्त्व साधारण रेचक प्रक्रिया से निष्कासित नहीं होते हैं, वे भी बाहर निकल जाते हैं। साथ ही स्वतः पूर्ण वेग से श्वास की पूरक क्रिया होती है, जिससे सारे शरीर में प्राण ऊर्जा का प्रवाह पहुँचने लगता है। इस प्रक्रिया द्वारा शरीर में लम्बे समय से जमा अवरोध तथा विजातीय तत्त्व अपना स्थान छोड़ने लगते हैं। जो ऐसा भी न कर सकें उन्हें मुँह बंद कर पूर्ण वेग से कुछ समय के अन्तराल में ११ से २१ बार प्रतिदिन हँसना चाहिए।

नासिका शरीर का वह अंग है जिसका कार्य श्वास द्वारा ली जाने वाली वायु को फेफड़े में पहुँचने के पूर्व पर्याप्त शुद्ध, परिमार्जित व शरीर के तापक्रम के अनुरूप बनाना है ताकि बाह्य वातावरण की गर्म अथवा सर्द हवा फेफड़ों को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचा सके।

दूसरी बात नाक में स्थित श्लेष्मा झिल्लियाँ (म्यूकस मेम्ब्रेन) वायु में उपस्थित उन असंख्य रोगाणुओं को भी हटा देती हैं, जो फेंफड़ों के लिए अति घातक सिद्ध हो सकते हैं। साथ ही उन धूल कणों से भी बचाव करती है, जिनसे किसी कारणवश

नासिका के रोम में रुकावट नहीं हो पाती। ये झिल्लियाँ श्वास की वायु को आवश्यक शुष्कता-आर्द्रता भी प्रदान करती हैं।

तीसरी बात यह है कि नाक से ही दुर्गंध और सुगन्ध की अनुभूति होती है। गंध की अनुभूति हानिकारक वायु को अन्दर जाने से रोकती है। जैसे ही हमें किसी दुर्गन्ध की अनुभूति होती है- हम तुरन्त श्वास लेना बन्द कर देते हैं और जल्दी से जल्दी वहाँ से दूर होकर ताजी हवा वाले स्थानों में पहुँचने का प्रयास करते हैं।

श्वास संबंधी रोगों के उपचार हेतु 'नेति क्रिया' भी विश्वसनीय सहज पद्धति है। नासिका के छिद्रों की तरल पदार्थों से सफाई करने की विधि को नेति क्रिया कहते हैं। जिन व्यक्तियों को किसी भी प्रकार की एलर्जी होती है, उनके लिये नेति क्रिया अत्यन्त लाभकारी होती है। नेति क्रिया से आज्ञा चक्र भी सक्रिय होता है।

प्रातःकाल और सोने से पूर्व नेति क्रिया करने से न केवल नथूनों की सफाई होती है, अपितु उसके साथ-साथ निद्रा अच्छी आती है। आँखों की ज्योति सुधरती है। सिर की गर्मी शान्त होती है। स्मरण शक्ति बढ़ने लगती है। बाल झड़ना बन्द हो जाते हैं और लम्बे समय तक बाल काले बने रहते हैं, ऐसे प्रत्यक्ष परोक्ष अनेक लाभ होते हैं। शिवाम्बु से नेति क्रिया विशेष लाभप्रद होती है।

साराश यह है कि जीवन पर्यन्त स्वस्थ रहने की कामना रखने वालों को श्वसन संबंधी प्रकृति के सनातन नियमों का ईमानदारी पूर्वक पालन कर प्राकृतिक ऊर्जाओं का अधिकाधिक उपयोग करना चाहिए। ***-चोरड़िया भवन, जालोरी गेट, जोधपुर***

जिनवाणी का 'प्रतिक्रमण' विषय पर विशेषाङ्क

'जिनवाणी' पत्रिका के विशेषाङ्कों की लोकप्रियता एवं महत्ता रही है। उसी शृंखला में वर्ष २००६ में 'प्रतिक्रमण' विषय पर विशेषाङ्क प्रकाशित किए जाने की योजना है। विशेषाङ्क के लिए विद्वान् लेखकों से गवेषणापूर्ण, विश्लेषणात्मक, व्यवस्थित एवं जिज्ञासा-समाधानात्मक लेख आमन्त्रित हैं। विशेषाङ्क सर्वांगीण बन सके, एतदर्थ प्रतिक्रमण के विभिन्न पक्षों पर व्याख्यात्मक लेखों को स्थान दिया जाएगा। यद्यपि कतिपय लेखकों को व्यक्तिगत पत्र भेजकर लेख भिजवाने हेतु निवेदन किया गया है, तथापि जिन्हें पत्र न मिला हो वे विद्वान् लेखक भी विशिष्ट लेख निम्नांकित पते पर प्रेषित कर सकते हैं।

-डॉ. धर्मचन्द जैन, सम्पादक-जिनवाणी,
३ के २४-२५, कुडी भगतासनी, जोधपुर-३४२००५

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-४

मॉडल प्रश्न-पत्र

नोट- परीक्षा के 'ब' भाग के ७०अंकों के प्रश्न निम्नांकित प्रश्नों में से पूछे जायेंगे।

(अ) निम्न कथनों की प्रासंगिकता को स्पष्ट कीजिए-

१. राजन्! भूखे को भोजन के लिए निमन्त्रण देते समय आग्रह की आवश्यकता नहीं रहती।
२. पाप का प्रायश्चित्त पुण्य के उपार्जन से होता है।
३. चन्दन के वृक्ष के पार्श्व में उगे हुए कंटकाकीर्ण वृक्ष में भी चन्दन की सुवास आने लगती है।
४. यूकाओं के भय से वस्त्र का परित्याग तो नहीं किया जा सकता।
५. दुर्वचन बोलने वाले दुर्जनों पर कभी कोप नहीं करना चाहिए।
६. अध्यात्म साधना कष्ट साध्य है और द्रव्य साधना सुसाध्य है।
७. हे विद्वान् ब्राह्मण! बाह्य स्नान से वस्तुतः शुद्धि नहीं होती।
८. आवश्यकता आविष्कार की जननी है।

(आ) जिनशासन के गौरव की रक्षा में निम्न महापुरुषों के योगदान को स्पष्ट कीजिए-

१. मलयगिरि
२. श्री जिनचन्द्रसूरि
३. वर्द्धमानसूरि
४. वीर लोंकाशाह

(इ) कारण स्पष्ट कीजिए-

१. वृहद्गच्छ का नामकरण।
२. त्यागी वर्ग का चैत्यवासी परम्परा की ओर सहज आकर्षण।
३. रक्षितसूरि आदि क्रियोद्धारकों को अपने प्रयासों में असफलता मिली।
४. मूषक एवं यूका विहारों का निर्माण।
५. सिद्धहैमव्याकरण की रचना।
६. विश्वनायक भारत का दयनीय दशा के रूप में काया पलट।
७. दक्षिण में जैनों की संख्या करोड़ों से घटकर कतिपय सहस्रों में ही अवशिष्ट रह गई।

(ई) टिप्पणी लिखिए-

१. प्रतिष्ठा पाठ
२. जयतिहुयणस्तोत्र
३. सत्सम्प्रदाय
४. शिलानुशासनम्
५. माईयड
६. साधारण
७. लाखन कोटड़ी
८. चर्चरी

९. त्रिषष्टि शलाघापुरुष १०. लुंकामत प्रतिबोध कुलक

(उ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

१. एक ही शुभ मुहूर्त में दो प्रकार की सार्वभौम सत्ताओं पर आसीन होने वाले कौन थे? संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कीजिए।

२. अपने पुत्र को दीक्षा की अनुमति देते समय माता पाहिनी की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

३. बप्पा उदयन ने चंगदेव को पुत्र विरह की वेदना से किस प्रकार संतुष्ट किया ?

४. आचार्य हेमचन्द्र के निमित्त से पतित किस प्रकार पूज्य बना?

५. भिखारिन ने मयलण देवी का गर्व कैसे गलाया?

६. शान्तु ने जयसिंह को किस युक्ति से संतुष्ट किया?

७. "आचार्य हेमचन्द्र के हृदय में सब धर्मों के प्रति समान दृष्टिकोण था।" इस कथन के पक्ष में प्रमाण प्रस्तुत कीजिये।

८. "कुमारपाल को परमार्हत विरुद" की समीक्षा कीजिये।

९. श्वेताम्बर मतावलम्बियों की सूर्य के बारे में मान्यता को व्यक्त कीजिये।

१०. जैनधर्म को जन-जन का धर्म बनाने में कुमारपाल के योगदान का वर्णन कीजिये।

११. सिद्ध कीजिए कि कुमारपाल पाप भीरु, परमास्तिक व दोषों का प्रायश्चित्त करने वाला था।

१२. जिनेश्वरसूरि ने चैत्यवासियों की मान्यताओं का निराकरण किस प्रकार किया?

१३. प्रतिष्ठाचार्य की योग्यता का उल्लेख कीजिये।

१४. आचार्य जयसिंहसूरि ने पंचमी को ही संवत्सरीय प्रतिक्रमण करने की अनुमति कुमारपाल से किस युक्ति से प्राप्त की ?

१५. अपने तीर से घायल मृगशावक की छटपटाहट से कुमार के मन में हुई अन्तर्वेदना को स्पष्ट कीजिए।

१६. जगडूशाह के जीवन से हमें क्या प्रेरणाएँ मिलती हैं।

१७. वीर.नि.१४६४ तक भ. महावीर का धर्मसंघ किन-किन नामों से अभिहित होता था, कारण भी लिखिए।

१८. विशाखाचार्य एवं विशाखगणि क्या एक ही आचार्य के दो नाम थे? अपना पक्ष प्रस्तुत कीजिये।

१९. लोंकाशाह के आध्यात्मिक जीवन का परिचय प्रस्तुत कीजिए।

२०. "लोकाशाह आगमों के अनन्य उपासक थे।" पक्ष में तर्क दीजिये।

२१. धर्म के विशुद्ध स्वरूप को पुनः प्रतिष्ठापित करने में वर्द्धमानसूरि द्वारा दिये गये योगदान को स्पष्ट कीजिये।

२२. श्रेष्ठी लक्ष्मीपति को श्रीपति ने कैसे ढाढस बंधाया?

२३. अभयदेवसूरि ने प्रथम दो अंगशास्त्रों पर वृत्ति क्यों नहीं लिखी?

२४. कालिदास ने विदुषियों की जाति की पहचान कैसे की?

२५. वर्द्धमानसूरि का स्वप्न द्रोणाचार्य की अनूठी सूझबूझ के परिणामस्वरूप साकार नहीं हो सका, कैसे?

२६. सम्मानपूर्वक जीवन जीने के लिए आवश्यक मंत्र का उल्लेख कीजिए।

२७. किस विधि से अविधि चैत्य भी विधि चैत्य बन जाता है?

२८. किन गुणों के कारण मुनि सोमचन्द्र को जिनवल्लभसूरि के पट्ट पर अभिषिक्त किया गया ?

२९. अपने से भिन्न गच्छ अथवा सम्प्रदायों को नीचे गिराने हेतु किये जाने वाले कुत्सित प्रयासों का संक्षिप्त चित्रण कीजिए।

३०. स्त्रीमुक्ति के पक्ष में देवसूरि ने क्या पक्ष रखा?

(ऊ) प्रस्तुत ग्रन्थ के परिप्रेक्ष्य में निम्न कहावतों को सप्रसंग पुष्ट कीजिये-

१. उपकार के बदले अपकार करना।

२. न भवति महिमा विना विपत्तेः।

३. अवश्यंभाविनो भावा भवन्ति महतामपि।

New Year Message

Sh. Jitendra Chourdia

The Sun rises with thousands of rays,
Inspires us to grow always.
It gives us a lesson to learn,
Shine like me if success to earn.
It grows night when sun sets,
Nights always go changing the dates.
Cutting short our age days and nights,
Forming weeks, months and fortnights.
Thus years come and years go,
Making an unbreakable row.
Years have passed and years are passing,
What have we got and what are we loosing?
To form as a human is very rare,
To waste it useless don't ever dare.
Listen carefully! what NEW YEAR says,
Never comes again if once passed day.
Utilize it, therefore, like gold thread,
If you want to be intelligent and great.

-50, Kalal Seri, Ujjain-456006(M.P.)

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

द्वारा प्रायोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (९)

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के माध्यम से 'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता-परीक्षा का नवम आयोजन 'जिनवाणी' के अक्टूबर-नवम्बर-दिसम्बर २००५ के अंकों के आधार पर किया जा रहा है। इसमें कुल ५० प्रश्न पूछे गए हैं, जिनके उत्तर **श्री गौतम जैन, सचिव-अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, १९२ बी, मीटर गेज रेलवे कॉलोनी, बजरिया-३२२००१, सवाईमाधोपुर, फोनं. ०७४६२-२२१८९१** के पते पर १५ फरवरी २००६ तक मिल जाने चाहिए। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को क्रमशः १००१ रुपये, ५०१ रुपये एवं २५१ रुपये के पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाएगा। १०० रुपये के १० प्रोत्साहन पुरस्कार भी दिए जायेंगे। परिणाम की सूचना मार्च २००६ के अंक में प्रकाशित की जाएगी। प्रतियोगी अपना पता अवश्य लिखें।

जो प्रतियोगी अपने प्राप्तांक शीघ्र जानना चाहते हों, वे प्रविष्टि के साथ जवाबी पोस्टकार्ड भेज कर परिणाम जान सकते हैं। सभी उत्तरदाताओं से निवेदन है कि वे उत्तर भेजते समय केवल प्रश्नक्रमांक व उत्तर ही भेजें। प्रश्न लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है। -सम्पादक

(क) मुझे पहचानो :-

०१. दीखे सो ऊगे नहीं, ऊगे सो दीखे नहीं।

०२. मैंने निःसंकोच अपनी अनुचित प्रवृत्तियों को माना व प्रायश्चित्त लेकर मुक्त हुआ।

०३. मुझे मानना सबसे बड़ी जीत है।

०४. मैं मानव शरीर का उद्देश्य हूँ।

०५. मैं अविनाशी तत्त्व हूँ।

०६. मुझे काटने पर महावीर बना जा सकता है।

०७. क्रोध रूपी पिशाच को मारने के लिए मेरी आवश्यकता है।

०८. मेरे में नंदनवन की सैर करा दी गई है।

०९. भारतीय संस्कृति की मजबूत दीवारें मेरी आँधी से हिलने लगी हैं।

१०. मैंने तो तीर्थंकरों को भी नहीं छोड़ा।

(ख) एक शब्द में उत्तर दीजिये :-

११. एक मानव का दूसरे मानव के प्रति सद्भावना पूर्ण व्यवहार क्या कहलाता है?

१२. देखने को आदरयुक्त शब्दों में क्या कहा जाता है?

१३. सौ बार पकाया गया या सौ औषधियों के साथ पकाया गया तेल क्या कहलाता है?

१४. तीर्थंकरों की अविद्यमानता में गुरुदेव ही किसकी वाणी में अवगाहन कराते हैं?
१५. मथुरा से किस शाखा के नौ अभिलेख उपलब्ध हुए हैं?
१६. प्रकृति के समान कौन शाश्वत है?
१७. नरकायु बंध का चौथा कारण कौनसा है?
१८. सेवा का अन्ततः अंत कहाँ होता है?
१९. जो मनुष्य कुबुद्धि के वश पापकर्मों से धन उपार्जित करता है, वह कहाँ जाता है?
२०. विलय होने को निर्वाण किसके द्वारा माना गया है?
२१. बटलोई किसका प्रकार है?
२२. विजातीय की ममता को किसका प्रमुख कारण बताया है?
२३. मलमूत्र बनाने की एक मशीन का नाम बताइये।
२४. अन्तर्मुखी होने की साधना?
२५. साधना में चरण बढ़ाते समय मरुदेवी माता का कितना आयुष्य अवशिष्ट था?

(ग) अंकों में उत्तर दीजिये:-

२६. प्राणायाम से होने वाले कितने लाभों का उल्लेख हुआ है?
२७. कितने गुणों से युक्त पुरुष सच्चिदानंदघन परब्रह्म परमात्मा में एकीभाव से नित्य स्थित है?
२८. पटाखों के जरिये प्रतिवर्ष कितने करोड़ रुपयों में आग लगा दी जाती है?
२९. अहं का भूत प्रायः कितनों को लगा हुआ है?
३०. माता मदालसा के कितने पुत्रों ने संयम ले जिनशासन की सेवा की?
३१. जम्बूकुमार ने प्रभव को सच्चे शास्त्र के कितने लक्षण बतलाए?
३२. साधु-साध्वी के लिए कितने प्रकार के पात्र ग्रहण योग्य बताए गए हैं?
३३. "अपने किए का क्या इलाज?" कहानी के कितने पात्र जीवित रहे?
३४. स्थानांगसूत्रानुसार कितने व्यक्ति विद्या के अयोग्य हैं?
३५. यापनीय सम्प्रदाय का प्रथम अभिलेखीय प्रमाण किस सन् का मिलता है?

(घ) कहाँ वर्णित हैं?

३६. भगवान् के गृहस्थ जीवन का वर्णन।
३७. आत्मा समत्व स्वरूप है और समत्व की उपलब्धि ही आत्मा का साध्य है।
३८. धर्मो रक्षति रक्षितः।
३९. आप गुणज्ञ बनें, तभी सच्चा लाभ ले सकेंगे।
४०. तीर्थंकरों की माताएँ चौदह स्वप्न देखकर जागृत होती हैं।

(ड़) 'हाँ' या 'ना' में उत्तर दीजिये

४१. जानना, मानना एवं ग्रहण करना एकार्थक है।

४२. कायोत्सर्ग रहित ध्यान से भी निर्जरा होती है।

४३. माँसाहारी होटलों में भोजन जैन संस्कृति पर कलंक है।

४४. दान देने से लोभ की निवृत्ति होती है।

४५. साधक अप्रतिहारिक रूप से गृहस्थ के बर्तन में असण, पान का भोग कर सकता है।

(च) किसने कहा :-

४६. यदि ज्ञानी बनना है तो मोहमाया का पर्दा दूर करो।

४७. संसार में वस्तुतः कोई किसी का सहायक नहीं होता।

४८. तुम्हारे से जो गुणाधिक हो, उन्हें देने में लाभ है।

४९. संयमी जीव अवश्य देवगति को प्राप्त करते हैं।

५०. आसक्ति अहं की जननी है तथा अहं ही दुःखों का मूल कारण है।

त्रैमासिक प्रतियोगिता (८) का शेष परिणाम

४४ अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी :- विजयलक्ष्मी छाजेड़-धुलिया, सरला भोगावत-मंडोर रोड़, गौरव जैन-कोटा, निर्मला लुणावत-पीपाड़, पुष्पा गाँधी-जोधपुर, मीनाक्षी जैन-जोधपुर, इन्द्रादेवी गुणधर-दल्लीराजहरा, प्रकाशचन्द पारख-धनारीकलां, अनीता रांका-आवड़ी, हेमंत खींचा-जयपुर, पिंकी जैन-अलीगढ़, बाबूलाल जैन-गोपालगढ़, मधुबाला जैन-सुमेरगंजमण्डी, मोहनोत गणपत जैन-जोधपुर, शांता जी मोदी-जयपुर, अनिल जैन-मैसूर, कंवलराज मेहता-जोधपुर, बीना मेहता-जोधपुर, अजीतराज जैन-धनारीकलां, अनिल जैन-कोटा, ममता डोसी-मेड़ता सिटी, ललिता लोढ़ा-नासिक, राज मेहता-गोरखपुर, पदमचन्द अग्रवाल-जयपुर, डी.पी.एम. सिंघवी-जोधपुर, जयश्री पटवा-मलाड़, निर्मला भलगट-चन्द्रपुर, राजेश लुणावत-आणीचा, विमला बोहरा-जयपुर, सुगनचन्द छाजेड़-जोधपुर, वीरेन्द्र कुमार जैन-भरतपुर, कमला बुरड़-भटिण्डा, पुष्पादेवी मुणोत-भटिण्डा, डिम्पल कुम्भट-भुसावल।

४३ अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी :- नीशा गोलेछा-जबलपुर, सुमतिचन्द मेहता-पीपाड़, सुनीता नवलखा-कोटा, राजुला भंडारी-पीपाड़ सिटी, विमलाबाई कांकरिया-जलगाँव, संतोष सिंघवी-चेन्नई, उषा भण्डारी-पीपाड़, सीमा जैन-खेरली, राजुलाल जैन शास्त्री-जोबनेर, कल्पना जैन-सवाईमाधोपुर, आभा जैन-खेरली, सुनील मोहनोत-जयपुर, इचरज देवी-जयपुर, पल्लवी जैन-जोधपुर, शंकुतला जैन-जयपुर, कविता पारख-जोधपुर, सुनील जैन-मैसूर, सरोज खाबिया-मैसूर, संगीता खाबिया-मैसूर, प्रभा जैन-खेरली, सुशीला चोरडिया-हिंगणघाट, किरण मेहता-जोधपुर, मृदुला कुम्भट-जोधपुर, संध्या सिंघवी-जोधपुर, बसंतीदेवी संघवी-हिंगणघाट, सुबोध मुणोत।

सामायिक-स्वाध्याय प्रेमी वरिष्ठ स्वाध्यायी सौ. ताराबाई जी डाकलिया, जलगाँव (महा.)

सादा जीवन उच्च विचारों की धनी, सामायिक-स्वाध्याय प्रेमी, वरिष्ठ स्वाध्यायी सौ. ताराबाई डाकलिया का जन्म सन् १९३८ में बोदवड़ जिला-जलगाँव में श्री बिरदीचन्द जी गेलड़ा की कुल दीपिका के रूप में हुआ। जलगाँव निवासी श्री मदनलाल जी डाकलिया की जीवन संगिनी बनने का आपको सौभाग्य मिला।

पारिवारिक धार्मिक-वातावरण से प्रभावित होकर आपने 'स्वाध्यायी महिला मण्डल' की सदस्यता ग्रहण की। आपने प्रतिक्रमण, २५ बोल, ६७ बोल, ३३ बोल, लघुदण्डक, गुणस्थान द्वार आदि अनेक थोकड़ों को कण्ठस्थ किया। दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन, सुखविपाक सूत्र, पुच्छिस्सुणं, भक्तामर स्तोत्र, कल्याण मन्दिर, महावीराष्टक, चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र आदि कई स्तोत्र एवं सूत्र कण्ठस्थ किये।

सन् १९८४ में आप स्वाध्यायी बनी, तब से निरन्तर आप पर्वाधिराज पर्युषण में अपनी सेवाओं द्वारा जन-जन में जिनवाणी का प्रचार-प्रसार कर रही हैं। आपने अब तक सिल्लोड़,एदलाबाद, वरणगाँव, वरोरा, नागद,जामनेर, धरणगाँव, नासिक, दापोली, साक्री, शिरपुर, उम्बरगाँव रोड, शेन्दूर्णी, रत्नागिरी, फागणा, ऐलदा आदि क्षेत्रों में पर्युषण सेवा द्वारा जिनवाणी की प्रभावना की।

बच्चे व बड़े सबमें धार्मिक रुचि जागृत कर आप धार्मिक विद्यालय खुलवाने में भी माहिर हैं। त्याग-पच्चक्खाण में आपकी विशेष रुचि है। आप प्रतिदिन एक-दो विगय का त्याग, १४ नियम, रात्रि भोजन का त्याग, पाँचों तिथियों को चारों खंद का त्याग, पाक्षिक प्रतिक्रमण-पौषध, प्रतिदिन कम से कम पाँच सामायिक एवं दो घण्टे स्वाध्याय आपके जीवन के अंग बन चुके हैं। आपने परिग्रह की मर्यादा कर रखी है।

आप 'स्वाध्यायी महिला मण्डल' के अध्यक्ष पद को सुशाभित कर रही हैं। ज्ञानवृद्धि हेतु आपने स्वाध्याय संघ द्वारा आयोजित प्रथम से तृतीय वर्ग की स्वाध्यायी परीक्षाएँ अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की।

स्वाध्याय संघ परिवार आपकी सुदीर्घ आयु तथा उज्ज्वल भविष्य की मंगल-कामना करता हुआ जिनेश्वर देव से प्रार्थना करता है कि आप स्वस्थ रहें तथा जिनवाणी की प्रभावना करती रहें। ***-श्रीमती मोहनकौर जैन, सचिव***

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

***ओसवंश : उद्भव और विकास (द्वितीय खण्ड : ओसवंश के प्राचीन गोत्र)*-डॉ. महावीरमल लोढ़ा, *प्रकाशक*-लोढ़ा प्रकाशन, सी-७, भागीरथ कॉलोनी, चौमू हाउस, जयपुर-३०२००१, दूरभाष-०१४१-२३६२३३४ *पृष्ठ* ८+४१६, *मूल्य* ४०० रुपये मात्र, अगस्त २००५**

डॉ. महावीरमल लोढ़ा राजकीय महाविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक तथा जयपुर के एक महाविद्यालय के प्राचार्य रहे हैं। आप ओसवंश के उद्भव और विकास का निरूपण करने में मनोयोग से भूरि श्रम कर रहे हैं। आपने ओसवंश के इतिहास को तीन खण्डों में प्रकाशित करने का लक्ष्य बनाया। प्रथम खण्ड 'जैनमत और ओसवंश' के रूप में पहले ही प्रकाश में आ चुका है, द्वितीय खंड का यह प्रकाशन नवीन अन्वेषण एवं ओसवाल इतिहास की पुनर्रचना की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। इसमें डॉ. लोढ़ा ने लगभग तीन हजार से अधिक शिलालेखों, धातु प्रतिमा लेखों के संकलन और अनुसंधान के आधार पर ओसवंश की प्राचीनता को सिद्ध करते हुए गोत्रों के विकास का प्रामाणिक ब्यौरा देने का प्रशंसनीय प्रयास किया है।

पारम्परिक मान्यतानुसार वीर संवत् ७० (विक्रमपूर्व ४०० वर्ष) में उपकेशगच्छ परम्परा के षष्ठ आचार्य श्री रत्नप्रभसूरि ने क्षत्रियों को प्रतिबोध देकर जैन धर्म की दीक्षा दी तथा महाजन वंश की नींव रखी। उस समय ओसवंश के १८ मूल गोत्र थे। उपकेशगच्छीय परम्परा के अनुसार १८ गोत्रों की ४९८ शाखाएँ मान्य हैं। १८ गोत्र कौनसे हैं, उनके नामों में भी भेद पाया जाता है। डॉ. लोढ़ा ने इस द्वितीय खण्ड में तातहर (तातेड़), बप्पनाग (बाफना), कर्णाट(कर्णावट), वलह, मोरख, कुलहट, विरहट, श्रीश्रीमाल (श्री श्रीवंश), श्रेष्ठि, संचिति(संचीति), आदित्यनाग, भूरि, भाद्र, चिंचट, कुमट (कुम्भट), डीडू, कन्नोजिया (कनोज, कनउडज) और लघुश्रेष्ठि- इन १८ गोत्रों एवं इनसे विकसित उपगोत्रों का परिचय दिया है। इन गोत्रों के कतिपय प्रमुख आचार्यों, संतों एवं श्रावकों का भी परिचय सम्मिलित किया है। डॉ. लोढ़ा ने अपने प्रतिपादन का आधार ढूँढने का प्रयास

किया है, यही इस पुस्तक का वैशिष्ट्य है। तृतीय खण्ड ओसवंश के अर्वाचीन गोत्रों पर सम्भावित है।

तीर्थंकर- श्री अमितमुनि प्रकाशक- मुनि मायाराम संबोधि प्रकाशन,. के-डी ब्लॉक, मुनि मायाराम मार्ग, पीतमपुरा, दिल्ली-११००८५, पृष्ठ १९६, मूल्य ३५ रुपये मात्र, सन् २००५

२४ तीर्थंकरों पर जैनधर्म का मौलिक इतिहास- भाग १, तीर्थंकर चरित्र आदि पुस्तकें प्रकाशित हैं, किन्तु जो संक्षेप में तीर्थंकर की अवधारणा एवं २४ तीर्थंकरों का परिचय प्राप्त करना चाहता हो, उसके लिए यह पुस्तक अतीव उपयोगी है। पुस्तक में इसे 'बालोपयोगी' संस्करण कहा गया है, किन्तु यह बड़ों के लिए भी उपादेय है।

मैं सबका मित्र हूँ- आचार्य सुभद्र मुनि, प्रकाशक- मुनि मायाराम संबोधि प्रकाशन, के-डी ब्लॉक, मुनि मायाराम मार्ग, पीतमपुरा, दिल्ली-११००८५, पृष्ठ ४६४, मूल्य १०० रुपये मात्र, सन् २००५

जुगलकिशोर जी द्वारा विरचित एवं जैनधर्म की सभी सम्प्रदायों में आदृत 'मेरी भावना' ('जिसने राग-द्वेष-कामादिक जीते' से प्रारम्भ) पर आचार्य श्री सुभद्रमुनि जी के ३५ प्रवचन 'मैं सबका मित्र हूँ' पुस्तक में संकलित हैं। आचार्य सुभद्र मुनि जी निरन्तर साहित्य-सर्जन में लगे हुए हैं। उनकी इ[illegible]क के कतिपय प्रवचनों के शीर्षक हैं- १. अरिहंत होने का विज्ञान २. नहीं सताऊँ किसी जीव को ३. अहं : सबसे बड़ी बाधा ४. हृदय का प्राण : करुणा ५. लक्ष्मी आवे या जावे ६. सबका कल्याण हो... सबका मंगल हो। पुस्तक का मुद्रण एवं बंधन (Binding) अच्छा है।

सभ्यता के शिलालेख पर -श्री सुरेन्द्रमुनि, प्रकाशक-श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, शास्त्री सर्कल, उदयपुर (राज.) पृष्ठ १०+८६, मूल्य १०० रुपये मात्र, सन् २००२

श्री सुरेन्द्रमुनि जी द्वारा रचित कविताओं का यह संग्रह जीवन के विविध आयामों में कोमल भावनाओं का संदेश देता है। मुनिश्री ने भगवान् महावीर के संदेश को अपनी कविताओं के माध्यम से पहुँचाने का प्रयास किया है।

समाचार-संकलन

आवड़ी में चातुर्मास जैसा ठाट, वेल्लूर की ओर विहार संभव

ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम, प्रखर व्याख्याता, समाज-सुधार की अभिनव क्रान्ति के पथ-दर्शक, आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति एवं शीलव्रत के प्रबल प्रेरक रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ९ वैपेरी-चेन्नई का यशस्वी चातुर्मास सानन्द सम्पन्न कर चिंतादरी पेठ होते हुए साहूकार पेठ स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन पधारे। साहूकार पेठ वासियों को ६ दिनों तक धर्मलाभ मिला। यहाँ पदार्पण के दिन ही श्रीमती प्रकाशदेवी बाफना ने १२१वाँ उपवास, श्री सोहनलाल जी गादिया ने १२१ वाँ आयम्बिल, श्रीमती पारसबाई जी भण्डारी एवं श्रीमती शीलादेवीजी धर्मपत्नी श्री सोहनलाल जी ओस्तवाल ने १२१वाँ एकाशन व्रत स्वीकार किया। श्रीमती इन्द्रादेवी बोहरा ने २६वाँ उपवास अंगीकार किया। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने स्वाध्याय भवन की उपयोगिता एवं सार्थकता पर सारगर्भित प्रवचन फरमाया। पूज्य आचार्यप्रवर के प्रवचन एवं आह्वान पर उपस्थित विशाल जनसमुदाय में से अनेक श्रद्धालुओं ने वर्षभर में ५१, २१, १५, १० संवर व महीने में ७, ५ एवं ४ संवर के संकल्प किए। आचार्यप्रवर का आह्वान था- "कोई भी धर्मस्थान खाली न रहे। दैनिक धार्मिक कार्यक्रम : सामायिक, प्रार्थना, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय, संवर, पौषध आदि निरन्तर चलते रहें। साधना के लिए उपयुक्त स्थान धर्मस्थानक है। वहाँ शान्तचित्त एवं एकाग्रता से साधना सम्पन्न होती है।" आचार्यप्रवर श्रावकों से १२ व्रत अंगीकार करने एवं शीलव्रत स्वीकार करने की प्रेरणा करते रहते हैं। महान्अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. का भी इसमें सहकार रहता है। फलस्वरूप साहूकार पेठ स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में अनेक दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किए।

२३ नवम्बर को पूज्य आचार्यप्रवर ठाणा ५ से विहार कर पुलियानतोप पधारे, वहाँ से २४ को पेरम्बूर एवं २५ नवम्बर को पाड़ी पधारे। व्याख्यात्री महासती श्री

सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ के दर्शन-वन्दन की भावना साकार हुई। वर्षा, तूफान आदि के कारण यहाँ से विहार ७ दिसम्बर को संभव हुआ। विहार कर आपश्री मुगप्पेर पधारे। ८ नवम्बर को वानाग्राम में तेरापंथी भाई श्री बाफना जी के यहाँ १ घण्टे विराज कर पुनमल्ली पधारे। धर्माराधना की ज्योति को प्रदीप्त कर पूज्यप्रवर २२ दिसम्बर २००५ को आवड़ी पधारे। पाँव में दर्द आदि होने के कारण, आवड़ी श्रीसंघ की विनति के कारण आचार्यप्रवर आवड़ी विराज रहे हैं। आवड़ी श्रीसंघ आगन्तुकों की आतिथ्य-सेवा में पूर्णतः तत्पर है। रायचूर, हैदराबाद, मैसूर आदि श्रीसंघ चातुर्मास के साथ ही शेषकाल विराजने की विनति लेकर आवड़ी पधारे हैं। सवाईमाधोपुर, कोटा, देई एवं दक्षिण प्रान्त के अनेक शहरों-गाँवों से और चेन्नई के उपनगरों से दर्शनार्थियों का अवागमन बना हुआ है। आवड़ी में चातुर्मास का-सा माहौल है। महासती श्री सरलेशप्रभा जी, श्री सुयशप्रभा जी आदि ठाणा के आवड़ी पदार्पण के पश्चात् चतुर्विध संघ की महिमा प्रकट हो रही है। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-दिवस पौष शुक्ला चतुर्दशी पर आचार्य श्री एवं संत-सती मण्डल आवड़ी विराजें, ऐसी श्रीसंघ की विनति है। आवड़ी में महानूअध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म..सा. के ओजस्वी प्रवचन चल रहे हैं। उनके पूर्व श्री योगेश मुनि जी म.सा. प्रवचन फरमाते हैं।

आचार्यप्रवर की आज्ञा से पूज्य श्री नन्दीषेणमुनि जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४ दिनांक २६ नवम्बर तक सामायिक-स्वाध्याय भवन, साहूकार पेठ विराजे। २७ नवम्बर को मिन्ट स्ट्रीट के स्थानक में प्रवचन फरमाया। वहाँ से पुरुषवाक्कम स्थिति सी.यू.शाह भवन एवं फिर २८ नवम्बर को अयनावरम पधारे। अयनावरम में तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. एवं बलभद्रमुनि जी म.सा. के ओजस्वी एवं गहन वैराग्य से ओत-प्रोत प्रवचन सुनकर श्रोता भाव-विभोर हो गए। वहाँ से मुनि-मण्डल ५ दिसम्बर को पाड़ी में आचार्य भगवन्त की मांगलिक लेकर उनके आदेश से ६ दिसम्बर को अम्बातूर पधारे। वहाँ श्राविकाओं ने ज्ञान-ध्यान का अच्छा लाभ लिया। ११ दिसम्बर को मुनि-मण्डल का आवड़ी पदार्पण हुआ। आवड़ी में निरन्तर ग्यारह दिनों तक श्रीसंघ ने प्रवचन आदि का लाभ लिया। आचार्य भगवन्त ठाणा ५ से २२ दिसम्बर को आवड़ी पधारे। १ दिन साथ विराज कर मुनि-चतुष्टय ने वहाँ से २३ दिसम्बर को विहार कर करयानचावड़ी पदार्पण किया। वहाँ महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ने पुनमल्ली से पधार कर दर्शन-लाभ लिया। २४ एवं २५ दिसम्बर को मुनि-चतुष्टय का कुन्नूरतूर में श्रावक-श्राविकाओं को

सान्निध्य लाभ मिला। २६ दिसम्बर को पुनमल्ली पधारने पर पंचदिवसीय शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें पाँचवें कर्मग्रन्थ पर तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने सारगर्भित प्रवचन फरमाया। मुनि-मण्डल अभी कुछ दिन पुनमल्ली पधारें, ऐसी संभावना है।

पूज्य आचार्य भगवन्त के श्रीमुख से दिनांक २७.११.२००४ से १९.०८.२००५तक शीलव्रत ग्रहण करने वालों की सूची

१. श्री मोतीलाल जी रांका, बैंगलोर
२. श्री राजेन्द्र जी भण्डारी, बैंगलोर
३. श्री मीठालाल जी भंसाली, बैंगलोर
४. श्री नेमीचन्द जी माण्डोत, बैंगलोर
५. श्री सुजानमल जी कर्णावट, बैंगलोर
६. श्री विनयचन्द जी बम्ब, बैंगलोर
७. श्री मीठालाल जी कोठारी, बैंगलोर
८. श्री टीकमचन्द जी हीरावत, मुम्बई
९. श्री कन्हैयालाल जी सांखला, वयप्पनहल्ली
१०. श्री गौतमचन्द जी डोसी, होसकोटे
११. श्री बलवन्तसिंह जी लोढ़ा, वेल्लूर
१२. श्री सियचंदन दिगम्बर पुजारी, आरप्पांक
१३. श्री रेखराज जी चौधरी, आरकाट
१४. श्री भंवरलाल जी शर्मा, पणपाक्कं
१५. श्री उत्तमचन्द जी कावड़िया, नेमिलि
१६. श्री रिखबराज जी बच्छावत, जयपुर
१७. श्री कन्हैयालाल जी सुराणा, अजमेर
१८. श्री रिखबचन्द जी बोथरा, औरंगाबाद
१९. श्री मूलराज जी चौधरी, अजमेर
२०. श्री महावीरचन्द जी कांकरिया, उत्तरबंगाल
२१. श्री प्रकाशचन्द जी बोथरा, शूले
२२. श्री तेजपाल जी बोहरा, आवड़ी
२३. श्री शांतिलाल जी कोठारी, विरमवाक्कम
२४. श्री पारसमल जी रांका, अम्बातुर
२५. श्री शांतिलाल जी छोरलिया, पाड़ी
२६. श्री मदनलाल जी रांका, पाड़ी
२७. श्री प्रकाशचन्द जी दुधेड़िया, पाड़ी
२८. श्री जगन्नाथम् जी तामिलियन, पाड़ी
२९. श्री सुकनराज जी भण्डारी, पाड़ी
३०. श्री मदनलाल जी कोठारी, मुगप्पेर
३१. श्री किशनलाल जी कुंकुरोल, मदुरवायल
३२. श्री भंवरलाल जी कवाड़, पुनमल्ली
३३. श्री जवाहरलाल जी बाघमार, कुंडीतोप
३४. श्री उत्तमचन्द जी कांकरिया, चिंतादरीपेठ
३५. श्री बुधराज जी खिंवसरा, चेन्नई
३६. श्री इन्दरचन्द जी कोठारी, शैनायनगर
३७. श्री मोहनलाल जी बाघमार, अयनावरम्
३८. श्री रतनलाल जी खिंवसरा, शैनायनगर
३९. श्री बस्तीमल जी चोरडिया, पुरुषवाक्कम्
४०. श्री दौलतमल जी चोरडिया, पुरुषवाक्कम्
४१. श्री ओमप्रकाश जी कांकरिया, पुरुषवाक्कम्
४२. श्री लालचन्द जी बाघमार, पुरुषवाक्कम्
४३. श्री पुखराज जी गोलेछा, सूलेमेड
४४. श्री पारसमल जी कोठारी, वडपलनी
४५. श्री सूरजमल जी रातड़िया मुथा, सैदापेट
४६. श्री भंवरलाल जी मुणोत, अड्यार, चेन्नई
४७. श्री मोहनलाल जी टपरावत, सेलेयूर
४८. श्री पन्नालाल जी कोठारी, वेलेचेरी
४९. श्री ताराचन्द जी गादिया, क्रोमपेट
५०. श्री बिरदीचन्द जी गाँधी, क्रोमपेट
५१. श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल, पल्लावरम्
५२. श्री भीमसिंह जी गाँधी, पम्मल
५३. श्री पारसमल जीबोहरा, पल्लावरम्
५४. श्री माँगीलाल जी कोठारी, आलन्दुर
५५. श्री दुलीचन्द जी बोहरा, किलपॉक
५६. श्री रवीन्द्रसिंह जी चोरडिया, कोंडीतोप
५७. श्री चैनरूप जी बाफना, वैपेरी
५८. श्री महीपालचन्द जी भण्डारी, कोंडीतोप

५९.श्री प्रसन्नचन्द जी भण्डारी, कोंडीतोप
६०.श्री रतनराज जी चौधरी, कोंडीतोप
६१.श्री मूलचन्द जी बाफना, कोंडीतोप
६२.श्री महावीरचन्द जी सिंघवी, कोंडीतोप
६३.श्री केवलचन्द जी पारख, कोंडीतोप
६४.श्री उत्तमचन्द जी सिंघवी, कोंडीतोप
६५.श्री उगमराज जी मुणोत, चिंतादरीपेठ
६६.श्री गणपतराज जी चौधरी, किलपॉक
६७.श्री सज्जराज़ जी लुणावत, किलपॉक
६८.श्री शिखरचन्द जी सुराणा, मैलापुर
६९.श्री प्रकाशचन्द जी वैद, मैलापुर
७०.श्री जवाहरलाल जी कटारिया, मैलापुर
७१.श्री प्रतापमल जी वैद, मंदवली
७२.श्री सुगनचन्द जी कर्णावट, मंदवली
७३.श्री कैलाशमल जी दुग्गड़, पोइस गार्डन
७४.श्री सुमेरमल जी दुग्गड़, साहूकार पेठ
७५.श्री रमेशमल जी दुग्गड़, साहूकारपेठ
७६.श्री मदनलाल जी वैद, साहूकारपेठ
७७.श्री लूणकरण जी सेठिया, साहूकारपेठ
७८.श्री अनराज जी चोरडिया, साहूकारपेठ
७९.श्री प्रकाशमल जी चोरडिया, साहूकारपेठ
८०.श्री पारसमल जी कोठारी, साहूकारपेठ
८१.श्री सज्जनराज जी कटारिया, साहूकारपेठ
८२.श्री पुखराज जी बाघमार, साहूकारपेठ
८३.श्री महावीरचन्द जी भंसाली, साहूकारपेठ
८४.श्री प्रसन्नचन्द जी मेहता, धोबीपेट
८५.श्री उगमराज जी कांकरिया, कलादीपेठ
८६.श्री महेन्द्रकुमार जी कांकरिया, कलादीपेट
८७.श्री गौतमचन्द जी कांकरिया, कलादीपेठ
८८.श्री रामलाल जी गेलड़ा, कलादीपेट
८९.श्री हरकचन्द जी कुम्भट, साहूकारपेठ
९०.श्री चम्पालाल जी गाँधी, कलादीपेट
९१.श्री मदनलाल जी कटारिया, कलादीपेट
९२.श्री रघुनाथमल जी लूणिया, कलादीपेट
९३.श्री सम्पतराज जी दुग्गड़, धोबीपेट
९४.श्री नरेन्द्र जी रांका, पुलियान तोप
९५.श्री गौतमचन्द जी सुराणा, अजमीकेरे
९६.श्री जगदीशमल जी चोरडिया, वैपेरी
९७.श्री नेमीचन्द जी कर्णावट, साहूकारपेठ
९८.श्री किशोरचन्द जी समदड़िया, चेन्नई
९९.श्री अखेचन्द जी भडकच्या, वैपेरी
१००.श्री धर्मीचन्द जी बाघमार, साहूकारपेठ
१०१.श्री हीराचन्द जी रूणवाल, अड्यार
१०२.श्री बसन्तीलाल जी कांकरेचा, वैपेरी
१०३.श्री मदनलाल जी बोहरा, आवड़ी
१०४.श्री सम्पतराज जी बाघमार, श्रीकालहस्ती
१०५.श्री कन्हैयालाल जी कटारिया, दुर्ग
१०६.श्री भीकमचन्द जी बोरा, कलगानूर
१०७.श्री बंशीलाल जी ओस्तवाल, पूना
१०८.श्री कैलाशचन्द जी कोठारी, जयपुर
१०९.श्री कनकमल जी कुम्भट, जोधपुर
११०.श्री प्रसन्नचन्द जी डागा, जोधपुर
१११.श्री ज्ञानचन्द जी मुथा, चेन्नई
११२.श्री विमलचन्द जी सुराणा, शूले
११३.श्री उत्तमचन्द जी भण्डारी, ट्रिप्लीकेन
११४.श्री अशोक जी कुम्भट, किलपार्क
११५.श्री रामास्वामी, वामीलेनताम्ब्रं
११६.श्री उत्तमचन्द जी बाघमार, पुरुषवाकं
११७.श्री उम्मेदराज जी बाघमार, साहूकारपेट
११८.श्री प्रेमचन्द जी बोकड़िया, पुरुषवाक्कम्
११९.श्री लक्ष्मीलाल जी सुराणा, मंडली

सम्पर्क सूत्र- १. श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल, ४/२९, शेन्दी रोड, पल्लावरम्, चेन्नई-६०००४३(तमि.) फोन नं. ०४४-२२६४१५६९, २२६४१५५४(का.) फैक्स-२२६४१५६९, मो.-९४४४३-८८५६५, ९८४०१-१२३४६

२. श्री महेन्द्र जी कांकरिया, महेन्द्र ज्वैलर्स, १०००/१००१, टी.एच. रोड़ कलादी पेठ, चेन्नई-६०००१९(तमि.) फोन नं. ०४४-२५९९१३६३, २५९९४४६६, २५९९३६७१ मो.-९४४४०-५१३१३

सिवाना और जालोर में धर्म-प्रभावना

आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गम्भीर, प्रबल पुरुषार्थी, परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४ भक्तिनगरी-बालोतरा का यशस्वी चातुर्मास सानन्द सम्पन्न कर १६ नवम्बर को स्थानक से विहार करके चौपड़ा साहब की फैक्ट्री पधारे। बालोतरा में १७.११.०५ को ज्ञानगच्छीय दीक्षा का प्रसंग होने से उपाध्यायप्रवर ने आगे बढ़ने के बजाय दोनों परम्पराओं के अब तक चले आ रहे संबंधों को ध्यान में रखकर १७ नवम्बर को दीक्षा महोत्सव पर मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. एवं सेवाभावी श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. को भेजा। १८ नवम्बर को उपाध्यायप्रवर जसोल पधारे। जसोल में समाज के नए भवन में सकल जैन समाज के सुज्ञ श्रावकों ने उपाध्यायप्रवर के श्रीचरणों में विनति रखी कि आपश्री जसोल विराजें। उपाध्यायप्रवर ने दो दिन जसोल विराज कर भक्तों की भावना रखी और २० नवम्बर को कालाकुंज हाउसिंग बोर्ड, २१ को आसोतरा, २२ को ब्रह्मा जी का मंदिर, २३ को मूठली, २४ को थांपण, २५ को कुसी और २७ नवम्बर को गढ़ सिवाना में मंगल प्रवेश किया। बालोतरा-सिवाना के श्रद्धालु श्रावकों ने विहार सेवा का लाभ लिया। आसोतरा एवं ब्रह्माजी के मंदिर में उपाध्याय प्रवर की भक्ति में जैन-जैनेतर बन्धुओं की भावनाएँ देखकर लोगों के मुँह से सुना गया कि यह त्याग का प्रभाव है। सिवाना संघ की भक्ति-भावना अनुकरणीय रही। उपाध्यायप्रवर के करीब तीन सप्ताह विराजने पर वहाँ के माहौल में भावना का ऐसा रूप बना कि संघ ने सर्व-सम्मति से प्रस्ताव पारित कर वि.सं. २०६३ के उपाध्यायप्रवर के चातुर्मास के लिए विनति रखी। सिवाना नगर के संघ-सेवी श्रावकों ने गुरु हस्ती के उपकारों की याद दिलाते कहा कि हमारे इस क्षेत्र में जहाँ रोटी-बेटी का व्यवहार नहीं था, आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की कृपा से समूची सिवांची पट्टी में आनन्द की लहर बनी वह आज भी हिलोरें ले रही हैं। आप हमारे क्षेत्र पर कृपा करें और बालोतरा के बाद सिवाना चातुर्मास करें। सामायिक-स्वाध्याय, साधना और सेवा के प्रति आबाल-वृद्ध सबकी शुभ भावना और आगत स्वधर्मी बन्धुओं के प्रति आत्मीयता का सुन्दर रूप सिवाना की विशेषता रही।

सिवाना विराजते जालोर श्रीसंघ ने जालोर पधारने की भावपूर्ण विनति रखी। उपाध्यायप्रवर ने मोकलसर, रामणिया, काठड़ी, बालवाड़ा, बिशनगढ़ आदि क्षेत्रों को पावन करते हुए २३ दिसम्बर को जालोर में मंगल-प्रवेश किया। जिला मुख्यालय

जालोर ग्रेनाइट के कारण राजस्थान में अपना महत्त्व रखता है। उपाध्यायप्रवर की सेवा-भक्ति में जालोरवासियों ने धर्म-साधना में बढ़-चढ़कर भावना दर्शायी और आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-दिवस पौष शुक्ला चतुर्दशी तक जालोर विराजने की विनति रखी। सांचोर और पचपदरा श्रीसंघ आशा लगाये पुनः पुनः विनति रख रहे हैं कि उपाध्यायप्रवर हमारे क्षेत्र को पावन करेंगे। विहार कब-किधर होता हैं, यह भावी के गर्भ में है, किन्तु गाँव-गाँव में उपाध्यायप्रवर आदि संत-मुनिराजों की प्रेरणा से धर्म-साधना और सेवा-भक्ति का आदर्श उस क्षेत्र में सब जगह देखा जा रहा है।

सम्पर्क सूत्र- **१. श्री गौतमचन्द जी मेहता, फोन नं. ०२९७३-२२३२१२**

२. श्री रणजीतमल जी मूथा, फोन नं. ०२९७३-२२६३३४, २२४००५

महासती मण्डलों के सुख-शांतिपूर्वक विहार

卐 साध्वीप्रमुखा, परमविदुषी, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा ५ के द्वारा इन्कमटैक्स कॉलोनी, महामन्दिर, राजीवनगर आदि क्षेत्रों में विचरण से धर्म-ध्यान का ठाट रहा। राजीव नगर में बालक-बालिकाओं के पंच दिवसीय शिविर में ८०-८५ शिविरार्थियों ने शीतकालीन अवकाश का लाभ उठाया। साध्वीप्रमुखा के मुखारविन्द से राजीवनगर में दो शीलव्रत के खंद हुए एवं सुश्रावक श्री प्रकाशचन्द जी बंधा मूथा ने संथारे के प्रत्याख्यान अंगीकार किए। राजीवनगर से शक्तिनगर, मण्डोर रोड़, पावटा आदि मध्यान्तर के क्षेत्रों को पावन करते हुए साध्वीप्रमुखा घोड़ों के चौक आचार्य भगवन्त के जन्म-दिवस पौष शुक्ला चतुर्दशी के पूर्व पधारें, ऐसी संभावना है।

卐 सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ विजयनगर से मसूदा एवं मसूदा से ब्यावर पधारे। सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. बरेली वाले स्थानक, ब्यावर में सुख-शांति पूर्वक विराजमान हैं। नेत्ररोग विशेषज्ञ से उचित परामर्श पश्चात् यदि आवश्यकता हुई तो आँख का ऑपरेशन भी ब्यावर संभावित है।

卐 शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा पीपाड़ विराजमान हैं। गोटन चातुर्मास सम्पन्न कर व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ का पीपाड़ पधारना हुआ था, किन्तु सोजत रोड़ से विहार कर सियाट पधारे महासती श्री रुचिता जी म.सा. के संघाड़े की महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. के उल्टी-दस्तों के कारण अचानक बनी स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के

समाचार मिलने पर व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ ने सोजत रोड़ की ओर विहार किया। सियाट से महासती-मण्डल को पुनः सोजत रोड़ आना पड़ा। महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. शरीर की दृष्टि से अत्यधिक कमजोर स्थिति में भी १०-१० कदम चलकर बिना कोई दोष लगाए सोजत रोड़ पधारे। सोजत रोड़ से श्राविकाओं ने भी बहुसंख्या में सेवा का लाभ लिया। सोजत रोड़ में सेवाभावी चिकित्सकों ने उपचार का बराबर प्रयास किया। सोजत रोड़ के सुज्ञ श्रावकों ने औषधोपचार और आतिथ्य सेवा का लाभ लिया। उपचार से कुछ सुधार होने पर सोजत रोड़ से ८ ठाणों का आगे-पीछे विहार हुआ। बिलाड़ा पधारने के पूर्व महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. के पेट में पुनः दर्द हुआ। बिलाड़ा पधारने पर बिलाड़ा के सुज्ञ श्रावकों ने चिकित्सालयों में सेवारत फिजिशियन सर्जन महिला चिकित्सक से जाँच करवाई। अपेन्डिक्स का निदान होने के पश्चात् चिकित्सकों के परामर्श पर शल्य चिकित्सा का निर्णय चेन्नई विराजित आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञा-अनुमति से किया गया। दिनांक ९ दिसम्बर को सेवाभावी चिकित्सकों ने शल्य चिकित्सा की, परिणाम स्वरूप महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. के स्वास्थ्य में सुधार हो सका बिलाड़ा श्रीसंघ के सेवाभावी सुज्ञ श्रावकों एवं बिलाड़ा चिकित्सालय के सेवाभावी चिकित्सकों के सहयोग से ऑपरेशन सफल रहा। ऑपरेशन पश्चात् स्वास्थ्य-लाभ होने पर महासती श्री विमलावती जी म.सा. ठाणा ३ ने २५ दिसम्बर २००५ को बिलाड़ा से विहार किया, जो खारिया-मीठापुर, झाक, रणसीगाँव, मादलिया, कोसाणा आदि क्षेत्रों से होते पीपाड़ पहुँच रहे हैं, जबकि व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवर जी म.सा. आदि ठाणा ५ पिचियाक, बीरावस, खेजड़ला, चिरढाणी होते हुए ३१ दिसम्बर को गुरुणी जी म.सा. की सेवा में पीपाड़ पधारे हैं। पीपाड़ से किनका-किधर विहार होना है इस विषयक निर्णय होने पर सूचना ज्ञात हो सकेगी।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ७ का विचरण बीड़ (मध्यप्रदेश) के आसपास चल रहा है।

卐 तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ सवाईमाधोपुर के समीपस्थ क्षेत्र बजरिया, हाउसिंग बोर्ड, कुश्तला, आलनपुर, चौथ का बरवाड़ा आदि-आदि क्षेत्रों से जयपुर की ओर बढ़ रहे हैं। पौष शुक्ला चतुर्दशी के पूर्व महासती मण्डल का जयपुर पधारना संभावित है। जयपुर से जोधपुर की ओर अग्र

विहार की संभावना है।

卐 विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ वेल्लूर का चातुर्मास सम्पन्न कर सत्वाचारी, कृष्णानगर आदि क्षेत्रों को फरसते हुए २३ दिसम्बर को जैन स्थानक-वेल्लूर पधारे। २५ से ३१ दिसम्बर तक यहाँ सप्तदिवसीय धार्मिक शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में लगभग ८० शिविरार्थियों ने भाग लिया। स्वास्थ्य-संबंधी कारणों से महासती मण्डल कुछ दिन वेल्लूर विराज कर काटपाड़ी की ओर विहार करें, ऐसी संभावना है।

卐 विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ४ भरतपुर से ग्रामानुग्राम विहार करते हुए दिनांक २०.१२.०५ को हिण्डौन पधारे। महासती मण्डल के सान्निध्य में हिण्डौन में शीतकालीन अवकाश के सदुपयोग को ध्यान में रखकर बालक-बालिकाओं का पंच-दिवसीय शिविर आयोजित किया गया। जिसमें १२०-१२५ शिविरार्थियों को लाभ हुआ। महासती-मण्डल का अभी आसपास के क्षेत्रों में विचरण संभावित है।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ ने स्वास्थ्य-संबंधी कारणों से चातुर्मास पश्चात् कुछ दिन पाड़ी में स्वास्थ्य लाभ लेकर पाड़ी क्षेत्र के निकटवर्ती सरस्वती अनाथ आश्रम में पधार कर ४० से अधिक बालक-बालिकाओं एवं कर्मचारियों को आजीवन माँस-मदिरा के त्याग का नियम करवाया। वहाँ से मुग्गपेर, मदुरवायल, वानाग्राम, सेवाकेन्द्र, करियान चावड़ी होते हुए आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ पुनमल्ली पधारे। यहाँ से गोवर्धन नगरी होते हुए २९ दिसम्बर को आवड़ी पधारे हैं। पुन्नमल्ली से वेल्लूर की ओर आगे बढ़ने की संभावना है।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा ५ के राजाजी नगर-बैंगलोर के यशस्वी चातुर्मास की सौरभ श्रवण कर अनेक उपनगर भक्तिभावना से क्षेत्र स्पर्श करने और विराजने की निरन्तर विनति कर रहे हैं। भक्ति में शक्ति होती है। महासती मण्डल भी जन-जन को धर्म के सम्मुख लाने का प्रयास कर रहे हैं। अभी उपनगरों में विचरण संभव लगता है।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ३ हरियाणा के गोहाना-भिवानी क्षेत्र में गुरु हस्ती के सामायिक-स्वाध्याय और गुरु हीरा के व्यसन-त्याग के संदेश का प्रचार-प्रसार कर रहे थे। आचार्यप्रवर के आदेश से

महासती मण्डल ने भिवानी से राजगढ़ होते हुए बीकानेर की ओर विहार किया। प्राप्त सूचनानुसार महासती-मण्डल अभी चुरु विराजित हैं। चुरु से बीकानेर अग्र विहार संभावित है।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ का विचरण गुलेजगढ़ क्षेत्र में चल रहा है।

卐 सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा ३ नांदगाँव से येवला, लासलगाँव, विंचूर, नैताला आदि मध्यान्तर के क्षेत्रों को पावन करते हुए निफाड़ पधार गये हैं। निफाड़ में भगवान पार्श्वनाथ जन्म-कल्याणक पर त्याग-तप में श्रावक-श्राविकाओं का अच्छा उत्साह रहा। महासती-मण्डल कुछ दिन विराजें, ऐसी संभावना है।

आचार्य श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. का जोधपुर पदार्पण

नानकवंश के अष्टम पट्टधर आचार्य श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. पाली चातुर्मास पूर्ण कर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर की विनति पर ३ दिसम्बर को जोधपुर पधारे। यहाँ आपश्री ने सरस्वती नगर, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, अरिहन्त नगर, नेहरुपार्क, पावटा, घोड़ों का चौक, लक्ष्मीनगर एवं हेमसिंह जी का कटला क्षेत्रों को अपने प्रेरणाप्रद प्रवचनों से लाभान्वित किया। घोड़ों का चौक स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में पौषकृष्णा १० दिनांक २६ दिसम्बर २००५ को २३वें तीर्थंकर भगवान् पार्श्वनाथ का जन्म-कल्याणक दिवस एवं आचार्य श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. का ३४वाँ जन्म-दिवस, तप-त्याग के साथ मनाया गया। इस अवसर पर अजमेर, ब्यावर, विजयनगर, गुलाबपुरा, मदनगंज-किशनगढ, पीसांगन, तिलोरा, मेड़ता सिटी, रियां, थांवला, लाडपुरा, बस्सी, अण्टाली, जालिया, कनकपुरा, मसूँदा, पाली आदि ग्राम-नगरों के श्रीसंघों एवं श्रद्धालुओं ने आचार्यप्रवर के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण, गुरु-गुणगान एवं सत्संग-सेवा का लाभ लिया। श्रद्धालुओं ने आचार्यप्रवर के गुणगान करते हुए हृदय की असीम आस्था से आचार्यप्रवर के शतायु-दीर्घायु होने एवं स्वास्थ्य-समाधिमय रहने की मंगल कामनाएँ की। अजमेर एवं मसूदा संघ ने चातुर्मास हेतु विनति प्रस्तुत की। आचार्यप्रवर ने अपने उद्‌बोधन में फरमाया - सामायिक-स्वाध्याय भवन की इस भूमि पर आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के परमाणु बिखरे हुए हैं, यहाँ का परस्पर प्रेम और स्नेह दोनों परम्पराओं को आगे बढ़ाने में सहायक होगा। हमारा प्रेम आज से नहीं, पीढ़ियों से है। मैं जब वैराग्यावस्था में था, हम

दोनों वैरागी आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के दर्शन-वन्दन हेतु गये। उस महापुरुष के शब्द स्मृति में आते हैं तो आज भी आनन्द का अनुभव होता है। आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. की उदारता ही थी जो हम जैसे छोटे वैरागियों से कहा- तुम नानकवंश को आगे बढ़ाने वाले हो, संघ की शान हो। महापुरुषों के मुख से ऐसे शब्द तभी निकलते हैं जब आत्मीयता हो। आचार्यप्रवर ने वर्तमान आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त किया।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामंत्री श्री नवरतन जी डागा ने कहा कि रत्नसंघ व नानकसंघ में वर्षों से चले आ रहे प्रेम-संबंध में दोनों परम्पराओं की एकरूपता का ठोस आधार रहा है। जिसके कारण आज भी हमारी मैत्री प्रगाढ है। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत ने जोधपुर पधारने की विनति के परिप्रेक्ष्य में कहा कि सरलमना आचार्यश्री ने हमारी विनति सुनी और जोधपुर के विभिन्न क्षेत्रों में पधारे। आपने आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-दिवस पौष शुक्ला चतुर्दशी तक विराजने हेतु निवेदन किया तथा उन्होंने कहा कि मैं अपनी ओर से एवं जोधपुर संघ की ओर से आचार्यप्रवर के शतायु-दीर्घायु होने की मंगलकामना करता हूँ। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री प्रकाश जी सालेचा ने किया।

युवक परिषद् द्वारा जलगाँव में परिवार संस्कार शिविर

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में दिनांक २७.१२.२००५ से १.१.२००६ तक परिवार संस्कार शिविर का आयोजन स्वर्णनगरी जलगाँव में किया गया, जिसमें युवक परिषद् के निदेशक, अध्यक्ष, कार्याध्यक्ष और केन्द्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों ने भाग लिया। जोधपुर, सवाईमाधोपुर, चेन्नई, सतारा, जलगाँव, मेड़ता, भोपालगढ़, पीपाड़, कुस्तला, बजरिया, आलनपुर, हा.बोर्ड, महावीर नगर, किशनगढ़ के शाखा प्रमुखों व शाखा सचिवों ने भी सफल आयोजन में अपना सहयोग दिया।

इस शिविर में ३० परिवारों के लगभग १०० सदस्यों ने भाग लिया। शिविर का उद्घाटन समारोह श्री रतनलाल जी बाफना की अध्यक्षता में एवं जलगाँव संघ के अध्यक्ष श्रीमान दलीचन्द जी चोरडिया के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

सभी शिविरार्थियों की तीन श्रेणियाँ बनाई गई - १. पुरुष वर्ग, २. महिला वर्ग, ३.बालक वर्ग। इस शिविर में यतना का स्वरूप एवं महत्त्व, सचित्त-अचित्त विवेक, महामोहनीय कर्म बंध के ३० स्थान, पाँच समिति तीन गुप्ति, रत्नवंश के धर्माचार्य, स्थानकवासी परम्परा का इतिहास, साध्वाचार एवं श्रावकाचार, तरणतारण

चतुर्विध संघ, श्रावक के विश्राम स्थान, आहार-विवेक, जैनत्व की पहचान, भक्ष्य-अभक्ष्य, धोवन पानी-गरम पानी, प्रत्याख्यान के प्रकार-स्वरूप एवं महत्त्व, विगय-महाविगय, रत्नसंघ की संस्थाओं का परिचय, सुपात्रदान, पाँच पदों का मूल साधुत्व, क्रियात्मक पक्ष आदि विषयों का अध्यापन करवाया गया।

श्री हस्तीमल जी गोलेछा-ब्यावर, श्री प्रकाशचन्द जी जैन-जलगाँव, श्री नवरतनमल जी भंसाली-बैंगलोर, श्री सुन्दरलाल जी सालेचा-पीपाड़, श्री गौतमचन्द जी जैन-बजरिया, श्री प्रकाशचन्द जी सालेचा-जोधपुर, सौं. मंगला जी चोरडिया-जलगाँव, श्री त्रिलोक जी जैन-जयपुर, श्री श्रीकान्त जी जैन-जयपुर ने अध्यापन के माध्यम से शिविर में अपनी अमूल्य सेवा प्रदान की।

परिवार संस्कार शिविर का समापन समारोह जैन हिल्स में अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, श्री भंवरलाल जी जैन-जलगाँव, श्री दलीचन्द जी चोरड़िया-जलगाँव, श्री रतनलाल जी बाफना-जलगाँव, श्री कस्तूरचन्द जी बाफना-जलगाँव के आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। संघाध्यक्ष महोदय हीरावत सा. शिविर अवधि में दो दिन उपस्थित रहे एवं शिविरार्थियों को उद्बोधन के साथ मार्गदर्शन प्रदान किया। संघ-सेवा में आगे बढ़ने हेतु आह्वान करते हुए उन्होंने युवाशक्ति को संघ के विकास एवं उन्नयन में जोड़ने की बात रखी। उपस्थित सभी महानुभावों ने शिविरार्थियों का मार्गदर्शन किया। युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक जी कवाड़ ने सभी आगन्तुक शिविरार्थियों एवं महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

-अशोक चोरडिया, महासचिव

सेवामन्दिर, जोधपुर द्वारा मासिक विचार गोष्ठी का संचालन

'अनेकान्त दृक' का द्वितीय अंक प्रकाशित

जोधपुर- सेवाभावी विद्वान् साधक (स्व.) श्री जौहरीमल जी पारख द्वारा स्थापित सेवामन्दिर संस्थान के द्वारा बादलचन्द सुगनकंवर चोरडिया बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय भवन में स्थित सेवामन्दिर पुस्तकालय हॉल में प्रतिमाह विचारगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस विचारगोष्ठी को नियमित रूप से चलते दो वर्षों से अधिक समय हो गया है। गोष्ठी में अनेक विषयों पर विशिष्ट वक्ताओं के व्याख्यान एवं तदुपरान्त चर्चा होती है। गोष्ठी के विषय रहे हैं- अनेकान्तवाद, कर्मसिद्धान्त, रत्नत्रय, क्रोध-नियन्त्रण : क्यों और कैसे?, गुणस्थान, अहंकार, श्रावकाचार, पुण्य-पाप, क्षमा, सकारात्मक चिन्तन, जीवन-धर्म और विज्ञान, व्यक्तित्व निर्माण, समाधिमरण, भारतीय संविधान और जैनधर्म, आरोग्य और अध्यात्म, जैन धर्म और भगवद्गीता,

सम्यग्दर्शन, तप का महत्त्व, सम्यग्ज्ञान, स्वाध्याय, जप और ध्यान, जैन साहित्य और समाज, अनेकान्त और अन्य भारतीय दर्शन, धर्म को जीवन में कैसे उतारें? । इन विषयों पर डॉ. सागरमल जैन-शाजापुर, डॉ. रामहर्ष सिंह जी-कुलपति आयुर्वेद विश्वविद्यालय, डॉ. सत्यरंजन बनर्जी-कोलकाता, डॉ. सुदर्शनलाल जैन-वाराणसी, न्यायाधिपति श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया, न्यायाधिपति श्री राजेश जी बालिया, श्री दुलीचन्द जी जैन-चेन्नई, आचार्य श्री धर्मधुरन्धरसूरि जी, मुनि श्री भूपेन्द्रकुमार जी, प्रो. कल्याणमल जी लोढ़ा-कोलकाता आदि का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ है। 'अनेकान्त दृक' नामक वार्षिक बुलेटिन के माध्यम से एक वर्ष में आयोजित गोष्ठियों में विचारित विषयों का सारांश प्रकाशित किया जाता है। इस वर्ष १६ अक्टूबर २००५ को 'अनेकान्त दृक' का द्वितीय अंक प्रकाशित हुआ है। ***सम्पर्क सूत्र***- *शुभराज मेहता, प्रस्तकालयाध्यक्ष, सेवा मंदिर, महावीर शिक्षण संस्थान, अजीत कॉलोनी के सामने, जोधपुर (राज.), मोबाइल नं. ९८२८१-६४१२०*

'तत्त्वार्थ सूत्र' पर खुली पुस्तक प्रतियोगिता

श्री कमला साधनोदय ट्रस्ट, पूना के तत्त्वावधान में तत्त्वार्थ सूत्र (विवेचक-उपाध्याय श्री केवलमुनि जी म.सा.) पर आधारित ५०० प्रश्नों की प्रतियोगिता रखी गई है। प्रश्न-पत्र भेजने की अंतिम तिथि २०.०२.०६ तक बढ़ा दी गई है। परिणाम की घोषणा ३०.६.०६ को की जायेगी। ***पुस्तक मँगवाने का पता***- *श्री सुन्दरलाल जी बरोरिया, सदर बाजार, जीरन-४५८३३६, जिला-नीमच (म.प्र.) ०७४२३-२३६५१२, ९३२९४-१८८१२*

पत्रकार सम्मेलन स्थगित

दिल्ली- जैन महासभा के तत्त्वावधान में आयोज्य अखिल भारतीय जैन पत्रकार सम्मेलन जो ६ व ७ जनवरी २००६ को प्रस्तावित था, अब मार्च के प्रथम सप्ताह में आयोजित किया जाएगा। ***-प्रो. रतन जैन, महासचिव***

संक्षिप्त समाचार

अमरावती- हुक्मसंघ के नवम पट्टधर आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री रामलाल जी म.सा. के पावन सान्निध्य में डौण्डी लौहरा (छत्तसीगढ़) निवासी सुश्रावक श्री सुगनचन्द जी लूंकड़ की आत्मजा २५ वर्षीय कु. वनिता लुंकड़ की जैन भागवती दीक्षा अमरावती में २० जनवरी को होगी। हिंगणघाट श्रीसंघ ने दीक्षार्थिनी मुमुक्षा कु. वनिता एवं उनके पिताश्री का अभिनन्दन किया। ***-महेश नाहटा***

बधाई/चुनाव

जोधपुर- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के संयोजक एवं महावीर इण्टरनेशनल,

जोधपुर के पूर्व अध्यक्ष श्री चंचलमल जी चोरडिया को पाली मित्र मण्डल, मुम्बई द्वारा १ जनवरी २००६ को एक भव्य समारोह में "मारवाड़ रत्न" से सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप उन्हें ३१,००० रुपये की राशि एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। प्रतिवर्ष दिया जाने वाला यह सम्मान इस वर्ष श्री चोरडिया जी को उनके द्वारा अहिंसात्मक स्वावलम्बी चिकित्सा पद्धतियों के क्षेत्र में प्रशिक्षण, उपचार, प्रचार-प्रसार एवं जन-जागरण हेतु राष्ट्रीय स्तर पर की गई उल्लेखनीय सेवाओं हेतु प्रदान किया गया।

उदयपुर- श्री महावीर युवा मंच संस्थान, उदयपुर की ओर से साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग को "जैन गौरव" अलंकरण से सम्मानित किया गया। राजस्थान के गृहमंत्री माननीय श्री गुलाबचन्द जी कटारिया ने उन्हें श्रीफल, स्मृतिचिह्न, सम्मान-पत्र प्रदान किया।

जोधपुर- सुश्री रुचि जैन सुपुत्री श्रीमती शकुन्तला-श्री राजेन्द्र जी जैन (सुपौत्री

सुश्राविका श्रीमती मैनादेवी-श्री पन्नालाल जी जैन) देवनगर, जोधपुर ने राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय के एम.बी.ए. एवं एम.बी.एल् के तृतीय सेमेस्टर में ८७ प्रतिशत अंक अर्जित कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। सुश्री रुचि जैन ने प्रथम व द्वितीय सेमेस्टरों में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया था।

कसारा (महा.)- प्रतिभावान छात्र धीरज पारख सुपुत्र श्री सुरेशचन्द जी सोनराज जी पारख ने बी.ई. प्रोडक्शन-२००५ में ६९.२७ प्रतिशत अंक अर्जित कर युनिवर्सिटी ऑफ पूना में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

उदयपुर- मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के जैनविद्या एवं प्राकृत

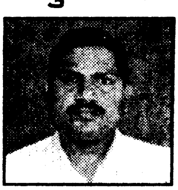

विभाग से डॉ. रजनीश शुक्ल को उनके शोधकार्य "पालि-प्राकृत मुक्तक-काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन" विषय पर "विद्या वाचस्पति" की उपाधि प्रदान की गई। शोधकार्य प्रो. प्रेमसुमन जैन के निर्देशन में किया गया।

जयपुर- अ.भा. पल्लीवाल जैन महासभा शाखा जयपुर के २००५-०७ के रविवार १८.१२.२००५ को सम्पन्न चुनावों में सर्व श्री ज्ञानचन्द जी जैन-अध्यक्ष, श्री महेशचन्द जी जैन-उपाध्यक्ष एवं श्री रविन्द्रकुमार जी जैन-मंत्री चुने गये। सर्व श्री अजयकुमार जी जैन-अर्थमंत्री, श्री यतेन्द्रकुमार जी जैन-संगठनमंत्री, श्री सुभाषचन्द जी जैन-सहमंत्री एवं श्री अजीतकुमार जी जैन-पत्रिका संयोजक के रूप में निर्विरोध चुने गये। कार्यकारिणी के चौदह सदस्य भी निर्वाचित हुए हैं, जिनमें सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं सुबोध स्कूल जयपुर में कार्यरत श्री अनिल कुमार जैन भी हैं।

मन्त्री

चेन्नई- श्री राजस्थान जैन श्वे. स्था. ओसवाल संघ, चेन्नई के चुनाव में सर्व श्री जबरचन्द जी बोकड़िया-अध्यक्ष, श्री मदनलाल जी वैद-उपाध्यक्ष, श्री धर्मीचन्द जी कोठारी-मंत्री, श्री जवाहरलाल जी दुग्गड़-सहमंत्री और श्री आर. नरेन्द्र जी कांकरिया-कोषाध्यक्ष चुने गये। कार्यकारिणी सदस्यों में सर्व श्री भंवरलाल जी गोठी, श्री किशनलाल जी बेताला, श्री पी.एम. चोरडिया, श्री कैलाशमल जी दुग्गड़, श्री शांतिलाल जी चौधरी, श्री पारसमल जी सुराना, श्री सूरजमल जी कोठारी, श्री रिखबचन्द जी लोढ़ा, श्री सिद्धेचन्द जी लोढ़ा, श्री विमलचन्द जी सुराना, श्री ललेशकुमार जी कांकरिया व श्री शांतिलाल जी तातेड़ का चयन किया गया।

श्रद्धाञ्जलि

मानवमुनि का स्वर्ग-गमन

ज्ञान, कर्म एवं भक्ति के जीवंत प्रतीक श्री मानवमुनि जी की रचनात्मक कार्यों में विशेष रुचि थी। वे गाँधीजी के सर्वोदय आन्दोलन से जुड़े एवं समग्र सेवा संघ के अध्यक्ष रहे। जीवन में अनासक्ति योग की साधना करते हुए उन्होंने विभिन्न धर्मों का अध्ययन किया। विनोबा जी के भूदान आन्दोलन से प्रभावित मानवमुनि ने धर्मपाल प्रवृत्ति में भी योगदान किया। ९६ वर्षीय मानवमुनि ने सेवा का अनुपम आदर्श उपस्थित किया। उनका स्वर्गवास २७ नवम्बर २००५ को ग्राम चापड़ा में हुआ।

बैंगलोर- संघसेवी-संतसेवी, श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री महावीरमल जी भंडारी (सुपुत्र सुश्रावक स्व. श्री मोतीमल जी भंडारी) का २६ दिसम्बर २००५ को असामयिक स्वर्गवास हो गया। वे रत्नसंघ के समर्पित श्रावकरत्न थे। प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य महामहिम आचार्य भगवन्त पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. के अनन्य कृपापात्र श्रावकरत्न ने आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दक्षिण क्षेत्र की ओर विहार को ध्यान में रखकर बैंगलोर के श्रावकों के साथ बैंगलोर चातुर्मास की भावपूर्ण विनति रखी। विचरण-विहार में और स्वास्थ्य-समाधि में सुश्रावक श्री महावीरमल जी भंडारी की सेवाएँ प्रेरणादायी रही। वे अनुभवी एवं संघ की रीति-नीति के जानकार श्रावक थे। सबको साथ लेकर चलना उन्हें बखूबी आता था। आचार्यप्रवर के बैंगलोर चातुर्मास में श्रावकरत्न ने पूरे वर्षावास संवर-साधना की। बैंगलोर में दक्षिण भारतीय रत्नसंघ के सम्मेलन में उनका योगदान भुलाया नहीं जा सकता। वात्सल्य सेवी श्रावकरत्न अपने अग्रज भ्राता संघ के पूर्व महामंत्री श्री माणकमल जी भंडारी के आदर्शों पर चलने वाले श्रावक थे।

चेन्नई- दृढ़धर्मी तपस्विनी सुश्राविका श्रीमती भंवरकंवर जी मेहता धर्मपत्नी सेवाभावी सुश्रावक स्व. श्री गजराज जी मेहता का १० दिसम्बर को हृदयगति रूक जाने से आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। तप-साधिका श्राविकारत्न ने जीवन में करीब डेढ़ दर्जन वर्षीतप किए। अनन्य गुरुभक्त श्राविका ने गतवर्ष आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के बैंगलोर एवं इस वर्ष चेन्नई चातुर्मास में दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण, सत्संग-सेवा और व्रत-प्रत्याख्यानों की श्रद्धा समर्पित कर लाभ लिया। वे अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई है।

अहमदाबाद- अनन्य गुरुभक्त, श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ, सेवाभावी सुश्रावक श्री

विजयमल जी मेहता (मूल निवासी बारणी) का १३ दिसम्बर को हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक स्वर्गगमन हो गया। संघ-सेवी श्रावकरत्न की आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. के प्रति अनन्य आस्था व अगाध भक्ति थी। गुरुवर हीरा-मान प्रभृति संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदा तत्पर रहने वाले श्रावकरत्न के जीवन में देव-गुरु-धर्म के प्रति दृढ़ विश्वास था। समाज सेवा के क्षेत्र में वे मणिनगर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के अध्यक्ष, राजस्थान एस.एस. जैन संघ के ट्रस्टी, राजस्थान स्थानकवासी जैन संघ के प्रमुख सदस्य थे, वहीं संघ-समाज, धार्मिक एवं परोपकारी संस्थाओं के पोषण में उनकी अच्छी रुचि थी। साध्वीप्रमुखा सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा. एवं शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के वि.सं. २०४८ एवं २०५५ के चातुर्मासों में बारणी रह कर सेवा का आदर्श उपस्थित किया। सामायिक-स्वाध्याय रसिक श्रावकरत्न ने जीवन में बीसियों अठाइयाँ की। वे अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं।

जोधपुर- सेठिया कुलवधू आदर्श गृहिणी सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती पुष्पादेवी जी

धर्मपत्नी सुश्रावक श्री प्रेमचन्द जी सेठिया का १२.१२.२००५ को रात्रि में अकस्मात्-असामयिक स्वर्गवास हो गया। वे श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ श्राविका थी। गुरु हस्ती-गुरु हीरा-गुरु मान के प्रति उनकी अनन्य आस्था व अगाध भक्ति थी। उपाध्याय प्रवर के वि.सं. २०६० के चातुर्मास में श्राविकारत्न ने स्वास्थ्य में प्रतिकूलता के चलते दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ लिया। मुम्बई शल्य-चिकित्सा के लिए प्रस्थान के पूर्व उपाध्यायप्रवर की मांगलिक श्रवण करके जाने पर श्राविकारत्न के मन में विश्वास हो चला कि ऑपरेशन सफल होगा और वैसा हुआ भी। ऑपरेशन पश्चात् शूगर, दमा, खांसी के उपचार में पूरी सावधानी रखी। स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव में भी श्राविका कभी विचलित नहीं हुई। वे सरल स्वभावी और सबकी सेवा में तत्पर रहने वाली सद्गृहिणी थी। सामायिक-साधना के साथ तपाराधन के प्रति उनका सदा विशेष लगाव रहा। वे अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई है।

उदयपुर- धर्मप्राण श्राविका श्रीमती कंचनदेवी जी धर्मावत धर्मपत्नी समाजसेवी श्री चुन्नीलाल जी धर्मावत (तारकगुरु ग्रन्थालय के प्राण) का २६.११.०५ को निधन हो गया। श्राविकारत्न नित्य सामायिक-प्रतिक्रमण और धार्मिक क्रियाएँ करती थी।

जयपुर- संघसेवी सुश्राविका श्रीमती चाँदकंवर जी सुराना (गुटसा) धर्मपत्नी सुश्रावक

श्री उगमराज जी सुराना, कोटा का ७५ वर्ष की आयु में १ दिसम्बर २००५ को देहावसान हो गया। धर्मपरायण सेवाभावी श्राविका की आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द के प्रति उनकी अनन्य आस्था थी। वे सरल स्वभावी, धर्म परायण एवं संघ-सेवी श्राविका थीं। श्राविकारत्न ने मरणोपरान्त नेत्रदान किए। वे अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारित परिवार छोड़ कर गई हैं।

चेन्नई- दृढ़धर्मी, समाजसेवी, सरलहृदय सुश्रावक श्री सम्पतराज जी बोकड़िया सुपुत्र

श्री भंवरलाल जी बोकड़िया का ७० वर्ष की आयु में २९.११.०५ को स्वर्गवास हो गया। खांगटा मूल के श्रावकरत्न की प्रारम्भिक कर्मभूमि गोटन रही तदन्तर चेन्नई में ४० वर्षों से उनका गिरवी व फाइनेंस का व्यापार रहा। वे उदारमना श्रावक थे। बाढ़-भूकम्प पीड़ितों की सहायता के अलावा धार्मिक-सामाजिक-परोपकारी संस्थाओं को

सहायता करने में उनकी सदा भावना रहती थी। प्रतिदिन पाँच सामायिक करना उनके जीवन का अंग बन गया था। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में वे सदा सक्रिय रहते थे। एक्युप्रेशर के जानकार श्रावकरत्न ने बीमार व्यक्तियों की सेवा का लाभ भी लिया। वे भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं। पारिवारिकजनों ने पुण्यार्जन हेतु २.५ लाख की राशि शुभकार्यों में अर्पित करने की घोषणा की है।

जोधपुर- दृढ़धर्मी सुश्रावक श्री प्रकाशचन्द जी बंधा मूथा सुपुत्र श्री सिरेमल जी मूथा

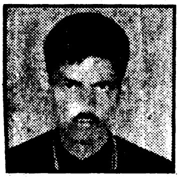

मूल निवासी बालवाड़ा (जिला-जालोर) हाल मुकाम रामनगर, जोधपुर का ४५ वर्ष की वय में सागारी संथारे के साथ २५ दिसम्बर की रात को स्वर्गगमन हो गया। आपको साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री दर्शनलता जी म.सा. व श्री समता जी म.सा. ने सागारी संथारे के प्रत्याख्यान करवाये एवं मंगलपाठ सुनाया। संथाराशील श्रावकरत्न ने परिवार के सहयोग से स्मरण-भजन में लीन रहकर आत्म-चिन्तन करते-करते नश्वर देह का त्याग किया। श्रावकरत्न की संथारे की भावना प्रेरणादायी है।

अलीगढ़- सुश्रावक श्री घनश्याम जी जैन 'उखलाना वाले' सुपुत्र स्व. श्री फूलचन्द जी जैन का २० दिसम्बर २००५ को स्वर्गवास हो गया। वे स्थानीय संघ के पूर्वमंत्री श्री भैरूलाल जी जैन के अग्रज भ्राता थे।

जयपुर- धर्मपरायण सुश्रावक श्री पदमचन्द जी सुराना का २६ नवम्बर २००५ को संथारे के साथ समाधिमरण हे गया। वे मृदुभाषी, व्यवहार कुशल और सेवाभावी श्रावक थे। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति के साथ उनमें स्वधर्मी-वात्सल्य सेवा का सदा भाव रहता था।

इन्दौर- दृढ़धर्मी सुश्राविका श्रीमती सरोजदेवी धर्मपत्नी श्री विमलचन्द जी टाटिया का ४९ वर्ष की आयु में २३ नवम्बर को स्वर्गवास हो गया। धार्मिक संस्कारों से संस्कारित श्राविकारत्न ने २२ नवम्बर को श्री बसन्तमुनि जी म.सा. से चारों खंद के प्रत्याख्यान ग्रहण किये और २३ नवम्बर को संथारा अंगीकार कर नश्वर देह का त्याग किया। वे श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ श्राविका थी।

छोटी कसरावद- धर्मपरायण सुश्रावक श्री राजमल जी कवाड़ का ८० वर्ष की उम्र में समाधिभाव पूर्वक दिनांक २० दिसम्बर को स्वर्गगमन हो गया। *-लक्ष्मीचन्द जैन*

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

५००/- रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

१०२२९ श्रीमती मनीषा जी धारीवाल, जोधपुर (राज.)
१०२३० Shri Kantilal Ji Chhallani, Chennai (T.N.)
१०२३१ श्री आकाश जी कुम्भट, चेन्नई (तमि.)
१०२३२ श्री आलोक जी, चेन्नई (तमि.)
१०२३३ श्री अतुल जी जैन, लुधियाना (पंजाब)
१०२३४ श्री विमलचन्द जी निर्मल कुमार जी लोढा, चेन्नई (तमि.)
१०२३५ श्री बी. कपूरचन्द जी गाँधी, चेन्नई (तमि.)
१०२३६ श्री राजेशकुमार जी नथमल जी चोरडिया, चेन्नई (तमि.)
१०२३७ श्री एच. वीरेन्द्र कुमार जी जैन, चेन्नई (तमि.)
१०२३८ श्री धर्मीचन्द जी हंसराज जी बाघमार, चेन्नई (तमि.)
१०२३९ श्री दीपचन्द जी रांका, गुलाबपुरा, भीलवाड़ा (राज.)
१०२४० श्री महावीर जी लोढ़ा, जोधपुर (राज.)
१०२४१ श्री सुमेरचन्द जी नाहर, सिकन्दराबाद (आ.प्र.)
१०२४२ श्री गौतम कुमार जी मेहता, अमरोली, सूरत (गुजरात)
१०२४३ श्री के. माँगीलाल जी कोठारी, चेन्नई (तमि.)
१०२४७ श्री विजय जी डांगी, गुलाबपुरा, भीलवाड़ा (राज.)
१०२५७ श्री माणकसिंह जी बैद, कृष्णानगर द्वितीय, जयपुर (राज.)
१०२६० श्री रितेश कुमार जी बनवट, बीड़, खण्डवा (म.प्र.)
१०२६१ श्री सुशील कुमार जी कर्णावट, बीड़, खण्डवा (म.प्र.)
१०२६२ श्री धरमचन्द जी बनवट, बीड़, खण्डवा (म.प्र.)
१०२६३ श्री सी. मोहनलाल जी पोकरणा, सोजतरोड़, पाली (राज.)
१०२६४ श्री अनिल कुमार जी लुणावत, जयपुर (राज.)
१०२६५ श्री गिरीश जी सिंघवी (जैन), देवास (म.प्र.)
१०२६६ Shri Laxya Ji Mandot, T.H. Road, Chennai (T.N.)
१०२६७ श्री अभिषेक जी जैन, वैशाली नगर, जयपुर (राज.)

२००/- श्री उमरावमल जी सुराणा, चेन्नई से प्राप्त अर्थ सहयोग से आजीवन-सदस्य

१०२४४ श्री रविकुमार जी मदनलाल जी श्रीश्रीमाल, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
१०२४५ श्री ओमप्रकाश जी सांखला, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
१०२४६ श्रीमती मंजुदेवी जी सुराणा, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

श्री अमर पी. मुणोत, मुम्बई के सौजन्य से जिनवाणी पत्रिका के आजीवन सदस्य

१०२४८ श्री ओमप्रकाश जी पीयूष जी जैन, भरतपुर (राज.)

१०२४९ श्री कपूरचन्द जी सुभाषचन्द जी जैन, भरतपुर (राज.)

१०२५० श्री सोहनलाल जी जैन, भरतपुर (राज.)

१०२५१ श्री प्रदीप कुमार जी हर्षित कुमार जी जैन, भरतपुर (राज.)

१०२५२ श्री नरेश कुमार जी दीपचन्द जी जैन, भरतपुर (राज.)

१०२५३ श्री विमलकुमार जी गौरवकुमार जी जैन, भरतपुर (राज.)

१०२५४ श्री अवि कुमार जी जैन, मानसरोवर, जयपुर (राज.)

१०२५५ श्री रितेश कुमार जी जैन, हिण्डौन सिटी, करौली (राज.)

१०२५६ श्री जितेन्द्र जी भण्डारी, देवनगर, जयपुर (राज.)

१०२५८ श्री अनिल जी सिंघल, भरतपुर (राज.)

१०२५९ श्री नवीन जी जैन, जयपुर (राज.)

जिनवाणी हेतु साभार

३०००/- श्री गणपतराज जी बागमार, चेन्नई, धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा जी बागमार के द्वारा सम्पूर्ण चातुर्मास में एकाशन तपस्या की उपलक्ष्य में भेंट।

२५००/- श्री किरोडीमल उमरावमल सुराणा ट्रस्ट, चेन्नई, श्री श्रीपाल जी सुराणा के विवाह की २५वीं सालगिरह के उपलक्ष्य में।

२१००/- श्री सोहनलाल जी बुधमल जी सम्पतराज जी, राजेन्द्र जी, अभिषेक जी बागमार (कोसाणा वाले), मैसूर, पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा जयन्ती एवं महासतियाँ जी श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनार्थ संघ ले जाने की खुशी में भेंट।

२१००/- श्रीमती सूरजदेवी एवं श्री चन्द्रप्रकाश जी, किरण कुमार जी, शैलेन्द्र जी व संदीप जी मेहता, अहमदाबाद, श्री विजयमल जी मेहता की पुण्यस्मृति में भेंट।

२०००/- श्री लक्ष्मीचन्द जी श्रेणिककुमार जी खारीवाल, त्रिवल्लूर की ओर से भेंट।

१५००/- श्री शेखर जी, प्रसन्न जी, जय जी भण्डारी (ब्यावर वाले), मुम्बई की ओर से चि. राईर्थ (पड़पौत्र स्व. सेठ श्री कल्याणमल जी भण्डारी-ब्यावर वाले) के द्वितीय जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में भेंट।

११००/- श्री मदनलाल जी विजयकुमार जी बोहरा (आवड़ी) चेन्नई, ११ की तपस्या विजयकुमार जी द्वारा व ३१ की तपस्या मैनादेवी के द्वारा की जाने के उपलक्ष्य में भेंट।

११००/- श्री गुप्तदान, आचार्य भगवन्त के दर्शनलाभ की खुशी में भेंट।

११००/- श्री महेन्द्रकुमार जी सुराणा, जयपुर, सुश्राविका श्रीमती चाँदकँवर जी सुराणा धर्मपत्नी श्री उगमराज जी सुराणा (जोधपुर वाले) का दिनांक ०१.१२.२००५ को स्वर्गवास हो जाने पर पुण्य स्मृति में भेंट।

११००/- श्री राजेन्द्र जी बोहरा, जोधपुर, नियमित सामायिक-स्वाध्याय कार्यक्रम से जुड़ने की खुशी में सप्रेम भेंट।

१०००/- श्री गुप्तदान, परमाराध्य पूज्य आचार्य भगवन्त के सपरिवार पावन दर्शन की खुशी में भेंट।

१०००/- श्रीमती कल्पना शरद जी ओस्तवाल, लखनऊ, सौ. कां. साक्षी एवं दिव्या के विवाहोपलक्ष्य में भेंट।

१०००/- श्री गुप्तदान, जयपुर।

१०००/- श्री नैनावटी परिवार, भीलवाड़ा (राज.), चि. आनन्द संग सौ. कां. प्रियंका सुपौत्री श्री सागरमल जी कोठारी (सुपुत्री श्री अशोक जी कोठारी) के शुभविवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

५०१/- श्री सुरेश कुमार जी जौहरीलाल जी रांका, नासिक, आचार्य भगवन्त के दर्शनलाभ लेने की खुशी में भेंट।

५०१/- श्री गुप्तदान, जोधपुर, स्व.श्री संजय सा जैन (खिंवसरा), पुत्र स्व. श्री सोहनचन्द जी खिंवसरा की पुण्य स्मृति में भेंट।

५००/- श्री हीराचन्द जी सुमत कुमार जी रांका, आवड़ी, चेन्नई, श्री हीराचन्द जी की ९ वीं तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

५००/- श्री मनोहरलाल जी बम्ब (निमाज वाले), बैंगलोर, सुश्राविका आदिबाई जी धर्मपत्नी स्व. श्री शेषमल जी बम्ब के स्वर्गारोहण पर पुण्यस्मृति में भेंट।

५००/- श्री रमेशचन्द जी अनुराग जी दुग्गड़, चेन्नई, कविता जी दुग्गड़ के ८ उपवास के उपलक्ष्य में।

५००/- श्री सरदारमल जी उगमराज जी, प्रेमचन्द जी, नवरतनमल जी नाहर, चेन्नई, श्री मूलचन्द जी नाहर की पुण्यस्मृति में भेंट।

५००/- श्री विमलचन्द जी टाटिया, इन्दौर, श्रीमती सरोजदेवी जी टाटिया की पुण्यस्मृति में भेंट।

५००/- मैसर्स बी. सम्पतराज जी बोकड़िया, चेन्नई, सुश्रावक श्री सम्पतराज जी बोकड़िया का दिनांक २९.११.२००५ को स्वर्गवास हो जाने पर पुण्यस्मृति में भेंट।

५००/- श्री रमेश जी अनुराग जी दुग्गड़, चेन्नई की ओर से भेंट।

५००/- श्री माँगीलाल जी गौतमचन्द जी कटारिया, नंगनल्लूर, श्री गौतमचन्द जी के १७ की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

३५१/- श्री श्रीचन्द जी जैन, जयपुर, स्व. श्री तीर्थराम जी जैन की पुण्यस्मृति में भेंट।

३००/- श्री विमलचन्द जी रिखबचन्द जी श्रेणिकराज जी उदयराज जी संदीप जी धोका, मैसूर की ओर से चि. उदयराज की सगाई बंगारपेठ निवासी श्री महावीरचन्द जी नाहटा की सुपुत्री सौ. कां. सुमन के साथ मैसूर में दिनांक ११.१२.२००५ को होने की खुशी में।

२५२/- श्री रामकरण जी देवेन्द्र कुमार जी जैन, सूरवाल वाले, डॉ. महावीर जी के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

२५१/- श्री संजय जी संदीप जी देशलहरा, दुर्ग, अपनी माताश्री श्रीमती मदनबाई जी देशलहरा की पुण्यस्मृति में भेंट।

२५१/- श्री धर्मचन्द जी जैन, जोधपुर, अपने निजगृह ई-४५, प्रतानगर, जोधपुर में प्रवेश करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

निम्नलिखित महानुभावों से भी साभार प्राप्त हुआ

श्री मगनचन्द जी जैन-हिण्डौन सिटी, श्री बंशीलाल जी नेमीचन्द जी ओस्तवाल-पूना, श्री भागचन्द जी रामदयाल जी जैन-गंगापुर सिटी, श्री वीरेन्द्र कुमार जी जैन-हिण्डौन सिटी, श्री महावीरचन्द जी जैन-जयपुर, श्री दानमल जी जैन-जयपुर, श्री हनुमानप्रसाद जी जैन-कोटा, श्री

दिलीप जी नागौरी-बम्बोरा, श्री अरुण जी बंधा मूथा-जोधपुर, श्री दीपक जी जैन-अलीगढ़।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

५०००/- श्रीमती सूरजदेवी एवं श्री चन्द्रप्रकाश जी, किरण कुमार जी, शैलेन्द्र जी व संदीप जी मेहता, अहमदाबाद, श्री विजयमल जी मेहता की पुण्यस्मृति में धार्मिक पाठशाला हेतु।

२१००/- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, मेड़ता सिटी, पर्युषण सहायतार्थ।

११००/- श्रीमती शान्ता जी मोदी एवं श्री प्रदीप जी मोदी, जयपुर, स्व. श्री सिद्धेश्वरनाथ जी मोदी की ३०वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री सुरेश कुमार जी जैन, इन्द्रगढ़, बून्दी, अपने सुपुत्र चम्पक का शुभविवाह सौ. जया के साथ दिनांक ४.१२.२००५ को होने की खुशी में भेंट।

५०१/- श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर, सहयोगी सदस्यता।

२५१/- श्री छोटेलाल जी मनोज कुमार जी जैन, कोटा, अपने सुपुत्र श्री नीरज कुमार जी का शुभ विवाह सौ. कीर्ति के संग दिनांक २.१२.२००५ को होने की खुशी में भेंट।

२५१/- श्री आनन्दरूपचन्द भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट, जोधपुर, पूज्य बाईसा श्रीमती सज्जनकंवर जी मोदी की प्रथम पुण्यतिथि (१५ अगस्त) के उपलक्ष्य में भेंट।

२५१/- श्री कल्याणमल चंचलमल चोरडिया ट्रस्ट, जोधपुर, पूज्य बाईसा श्रीमती सज्जनकंवर जी मोदी की प्रथम पुण्यतिथि (१५ अगस्त) के उपलक्ष्य में भेंट।

२५१/- श्री चाँदमल जी महेन्द्र कुमार जी जैन, अलीगढ़, सुपुत्र चि. नरेन्द्र कुमार बजाज संग सौ. कां. रीना सुपुत्री श्री बच्छराज जी जैन, सूरवाल के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में।

जीवदया हेतु साभार

२५००/- श्री नवरत्नमल जी लक्ष्मीचन्द जी भण्डारी (ब्यावर वाले), मुम्बई, पौत्र चि. राईर्थ जी (सुपुत्र श्री शेखर जी भण्डारी) के द्वितीय जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में भेंट।

५०१/- श्री सुरेश कुमार जी जौहरीलाल जी रांका, नासिक की ओर से भेंट।

५०१/- श्रीमती पारसदेवी जी मेहता, मुम्बई की ओर से भेंट।

आगामी पर्व

माघ कृष्णा ४	बुधवार, १८.०१.२००६	उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. का ७२वाँ जन्म-दिवस।
माघ कृष्णा ८	सोमवार, २३.०१.२००६	अष्टमी
माघ कृष्णा १४	शनिवार, २८.०१.२००६	चतुर्दशी, पक्खी
माघ शुक्ला २	मंगलवार, ३१.०१.२००६	आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का ८६वाँ दीक्षा-दिवस।
माघ शुक्ला ८	रविवार, ०५.०२.२००६	अष्टमी
माघ शुक्ला १४	शनिवार ११.०२.२००६	चतुर्दशी
माघ शुक्ला १४	रविवार १२.०२.२००६	पक्खी

आचार्य हस्ती जीवन-दर्शन स्वाध्याय प्रतियोगिता

युगद्रष्टा-युगमनीषी अध्यात्मयोगी महापुरुष आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८
श्री हस्तीमल जी म.सा. के जीवन-चरित्र

'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं'

पर आधारित खुली पुस्तक प्रतियोगिता में भाग लीजिए

प्रथम पुरस्कार- १ लाख रुपये

अन्य विविध पुरस्कार

द्वितीय -३१,०००/-, तृतीय- २१,०००/-, चतुर्थ-१५,०००/-

पंचम-११,०००/-, षष्ठ-७,०००/-, सप्तम-५,०००/-अष्टम-३,०००/,

नवम-२,०००/-, दशम- १०० प्रतियोगियों में प्रत्येक को १,०००/-

शीघ्र प्रतियोगी प्रोत्साहन पुरस्कार अलग से।

पुरस्कार सौजन्य- मुणोत परिवार, मुम्बई

प्रतियोगिता की उपयोगिता-

अपने जीवन का निर्माण, आत्मशक्ति एवं आत्मविश्वास में अभिवृद्धि, आदर्श साधु-जीवन का बोध, जीवन की वैयक्तिक-पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं का आध्यात्मिक समाधान, शान्ति एवं आनन्द का अनुभव।

प्रतियोगिता का शुभारम्भ

पौष शुक्ला १४, शुक्रवार, आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. का जन्म-दिवस

दिनांक १३ जनवरी २००६

प्रश्न-पुस्तिका वितरण की अन्तिम तिथ	- ६ सितम्बर २००६
शीघ्र प्रतियोगियों हेतु अन्तिम तिथि	- ५ नवम्बर २००६
उत्तरपुस्तिका जमा कराने की अन्तिम तिथि	- २ जनवरी २००७
परिणाम घोषणा	- २९ अप्रेल २००७

प्रतियोगिता हेतु ९५० पृष्ठ का विशाल ग्रन्थ 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं २५०/- के स्थान पर मात्र १००/- में तथा प्रश्न पुस्तिका- ३०/- में उपलब्ध।

प्रश्नपुस्तिका में कुल ६०० प्रश्न हैं। प्रश्नपुस्तिका दो भागों में विभक्त है। प्रथम खण्ड, पंचम खण्ड एवं आवरण पृष्ठ आदि के प्रश्न प्रथम भाग में तथा द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ खण्ड के प्रश्न द्वितीय भाग में हैं।

डाक अथवा कोरियर से मंगवाने पर-

ग्रन्थ-१००/-+ डाक व्यय ६०/-= कुल १६०/-

प्रश्न पुस्तिका ३०/- + डाक व्यय १०/- = कुल ४०/-

ग्रन्थ एवं प्रश्न-पुस्तिका मंगवाने का पता-

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१ (राज.)

फोन नं. ०२९१-२६३६७६३, २६२४८९१, २६४१४४५, फैक्स-२६३६७६३

विशेष-

- जयपुर, जोधपुर, मुम्बई, चेन्नई, बैंगलोर, इन्दौर, दुर्ग, अहमदाबाद, जलगाँव, नागपुर, सवाईमाधोपुर, हिण्डौन सिटी, अजमेर, ब्यावर, उज्जैन, मंडी डबवाली, सिमोगा, हैदराबाद आदि विभिन्न शहरों में यह ग्रन्थ प्रश्नपुस्तिका सहित उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जा रही है।
- सकल जैन समाज के आबाल-वृद्ध सभी सदस्य प्रतियोगिता में भाग लें।
- प्रतियोगिता हेतु संरक्षक- मार्गदर्शक मण्डल एवं निर्णायक मण्डल का गठन किया गया है, जिसमें अनेक प्रतिष्ठित महानुभाव सम्मिलित हैं।
- समय-समय पर इस प्रतियोगिता के विषय में जानकारी प्रकाशित की जाएगी।

विशिष्ट नियम-

१. ५५० से कम अंक प्राप्त करने वालों को वरीयता सूची में सम्मिलित नहीं किया जायेगा।

२. शीघ्र प्रतियोगी का पुरस्कार प्राप्त करने के लिए प्रतियोगी को ५०० से अधिक अंक लाना अनिवार्य है।

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र

संयोजक	उप-संयोजक	महामंत्री
चंचलमल चोरडिया	डॉ. धर्मचन्द जैन	नवरतन डागा
☎0291-2621454 94141-34606	☎0291-2730081	☎0291-2654427 98280-32215

ईस्वी सन् २००६ के घोषित अहिंसक अगते

(जो प्रतिवर्ष प्रभावी है)

राजस्थान सरकार स्वायत्त शासन विभाग के नोटिफिकेशन संख्या एफ. १/६०९/एल.ए.जी./४९ दिनांक १४.०१.५०, २०.११.६७, १२.०९.७४, २९.०९.८८ एवं एफ.-२९/विविध/डी.एल.बी./२०००/१३९४-१६१७ दिनांक १८.५.२००० के अनुसार ईस्वी सन् २००६ वर्ष में राज्य के घोषित अहिंसक अगताओं की माहवार सूची नीचे दी जा रही है। इन दिनों बूचड़खाने एवं कसाई खाने व पशुओं को कत्ल कर मांसादि का विक्रय करना कानूनन बंद है।

क्र.सं.	दिनांक	नाम अगता	वार	घोषित तिथि / दिनांक
१.	२६ जनवरी	गणतन्त्र दिवस	गुरुवार	२६ जनवरी
२.	३० जनवरी	गांधी निर्वाण दिवस	सोमवार	३० जनवरी
३.	२६ फरवरी	महाशिवरात्रि	रविवार	फाल्गुन कृ. १३
४.	३० मार्च	स्था. अगता, अग्रसेन जयन्ती	गुरुवार	चैत्र शु. १
५.	०६ अप्रेल	म. ज्योतिराव जयंती	गुरुवार	चैत्र शु. ९
६.	०६ अप्रेल	रामनवमी	गुरुवार	चैत्र शु. ९
७.	११ अप्रेल	महावीर जयंती	मंगलवार	चैत्र शु. १३
८.	१४ अप्रेल	स्था. अगता अम्बेडकर ज.	शुक्रवार	१४ अप्रेल
९.	०८ मई	आ. देवेन्द्रमुनि निर्वाण दिवस	सोमवार	वैशाख शु. ११
१०.	१३ मई	बुद्ध पूर्णिमा	शनिवार	वैशाख शु. १५
११.	१५ अगस्त	स्वतन्त्रता दिवस	मंगलवार	१५ अगस्त
१२.	१६ अगस्त	श्री कृष्ण जन्माष्टमी	बुधवार	भादवा कृ. ८
१३.	२७ अगस्त	गणेश चतुर्थी	रविवार	भादवा शु. ४
१४.	२८ अगस्त	ऋषि पंचमी	सोमवार	भादवा शु. ५
१५.	०६ सितम्बर	अनंत चतुर्दशी	बुधवार	भादवा शु. १४
१६.	०२ अक्टूबर	गाँधी जयंती	सोमवार	२ अक्टूबर
१७.	१७ अक्टूबर	पेडा ग्यारस	मंगलवार	कार्तिक कृ. ११
१८.	२० अक्टूबर	छोटी दीपावली	शुक्रवार	कार्तिक कृ. १४
१९.	२१ अक्टूबर	दीपावली	शनिवार	कार्तिक कृ.१४-१५
२०.	०५ नवम्बर	कार्तिक पूर्णिमा	रविवार	कार्तिक शु. १५

नोट- १. राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर खण्डपीठ के निर्णय रिट याचिका सं. ११०१/८० दिनांक २६.०७.८८ तथा श्रम विभाग के आदेश सं. एफ.११/९/श्रम/८६ दिनांक २२.११.८८ के अनुसार प्रत्येक शुक्रवार को भी अहिंसक अगता घोषित है।

२. अगतों के पालनार्थ कृपया संबंधित पालिकाधिकारी व जिला कलक्टर, उपखण्ड अधिकारी, तहसीलदार व पुलिस अधीक्षक, थानाधिकारी व श्रम विभाग अधिकारी से सम्पर्क करें।

-अध्यक्ष/मंत्री, जीव दया मण्डल ट्रस्ट (रजि.), टोंक (राज.)

'समता' मोक्ष का साधन है तो उसका उलटा 'तामस' नरक का द्वार है। - आचार्य श्री हस्ती

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

27, CHANDRAPPAN STREET

CHENNAI-600079(T.N.)

PH.# 25258436, 25298130

Branches:

Bhagawan Motors, Chennai-53, Ph.# 26251960

Bhagawan Cars, Chennai-53, Ph.# 26243455/66

Balaji Motors, Chennai-50, Ph.# 26247077

Padmavati Motors, Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.# 24854526

JAI GURU HASTI

JAI GURU HEERAMAN

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Live & Let Live

Prithvi Exchange

A 100% Money Changer

A DIVISION OF PRITHVI SOFTECH LIMITED

REGD. OFFICE : 33, Montieth Road, Egmore, Channai-600008

CHENNAI	:	**044-28553185, 52145478**
BANGALORE	:	**080-22103267, 22103268**
HYDERABAD	:	**040-23414333, 23414777**
GOA	:	**0832-2420675, 2231190**

www.prithvifx.com

P. DELICHAND KAVAD

SURESH KAVAD — **NAVARATHAN KAVAD**

RAVINDRA KAVAD — **ASHOK KAVAD**

158, Trunk Road, Poonamallee, Chennai-600 056

Phone No.: 044-2627 3165, 2627 4165

जय गुरु हस्ती जय गुरु हीरा-मान

गुरु हस्ती के दो फरमान।
सामायिक स्वाध्याय महान॥

JAI GURU HASTI

GURU HASTI GOLD PALACE

No. 3, Car Street
Poonamallee, Chennai-600 056
Phone : 26272609

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
(Banker)

No. 3A, Car Street
Poonamallee Chennai- 600 056
Phone : 26272906

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

जीवन को बनाने या बिगाड़ने का
सारा दायित्व चरित्र पर ही निर्भर है।
—आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

BRIGHT STAR DIAMOND CO.,LTD.

Diamond & Precious Stones

Ghisalal Gyanchand Prakashchand Bamb

410 The Executive House,
12th Floor, Suite 160-161,
Suriwongse Road,
BANGKOK 10500, Thailand
G.P.O. Box No. 2088

Tel : 237-8051, 237-8052
234-7648
Fax : (662) 237-6110
Res : 437-0910
Mobile : 01-6285733

Gurudev

SURANA

INDUSTRIES LIMITED

Manufacturers & Exporters of

Symbolises the Aspiration of Discerning Steel Buyers !

Premium Quality Steels, viz.,
HSD / CTD Bars, MS Rounds
Structurals Like Flats, Channels
Angles and Squares

Always Use SURANA STEELS to Highlight your House/Industry

Regd. Cum Corporate Head Office

29, Whites Road, II Floor Royapettah, Chennai 600 014.
Grams : **GURUHASTI**
Phone : 28525127 (3 Lines) Fax : 044 28521143
E-mail : suranast@vsnl.com
Website : www.suranaind.com

Works

F-67, 68 & 69 SIPCOT Industrial Complex
Gummidipoondi 601 201, Tiruvallur Dist. Tamilnadu
Phone : 954119 222881 Telefax : 954119 222880

Sales Yard

30, G.N.T. Road, Madhavaram,
Chennai 600 110
Phone : 25375531/32/33 Fax : 044 25375400

ज्ञान का बल होने पर मनुष्य दुःख के क्षणों में धीरज रख सकता है। ऐसे ज्ञान की प्राप्ति सत्संग व स्वाध्याय से होती है।

आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा.

With Best Compliments

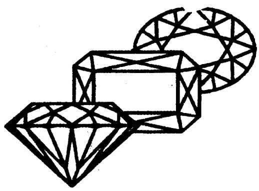

Gajendra Gems Corporation

Eternal Gems International

301, Panchratan,
3937, M.S.B. Ka Rasta,
Johari Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Ph.: 2568830, 2573356
Fax : 0141-2573353

जय गुरु हस्ती जय गुरु हीरा जय गुरु मान

जो संघ में भक्ति रखता है और शासन की उन्नति करता है, वह प्रभावक श्रावक है।

आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा.

With Best Compliments From :

MJ

MAHENDRA JEWELLERS

No. 1000-1001.
Thiruvottiyur High Road
Kaladipet, Chennai-600 019

Phone : (O) 044-25991313, 25992300, 25992400
Fax : 044-25994466
Phone : (R) 044-25993671, 25993101, 25995588

आर. एन. आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08

Presenting
Premium properties by Kalpataru

KALPATARU ROYALE

Near Cine Planet, Off Sion Circle,
Sion

KALPATARU ESTATE

Opp. Fantasyland,
Andheri (E)

SIDDHACHAL

Pokhran Road No.2,
Thane (W)

Other Projects :

Kalpataru Habitat, **Parel** • Kalpataru Gardens, **Kandivli (E)**
Tarangan, **Thane (W)** • Kamdhenu, **Mulund (E)**
Kalpataru Regency II, **Pune**

KALPA-TARU

111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai - 400 021. India
Tel.: 022-2282 2888, 2281 7171 • Fax: 022-2204 1548, 2288 4778
Email : sales@kalpataru.com • Website : www.kalpataru.com

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस,
एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन,
बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।